महानदी

"नराकास" दुर्ग–भिलाई की गृह पत्रिका

2016

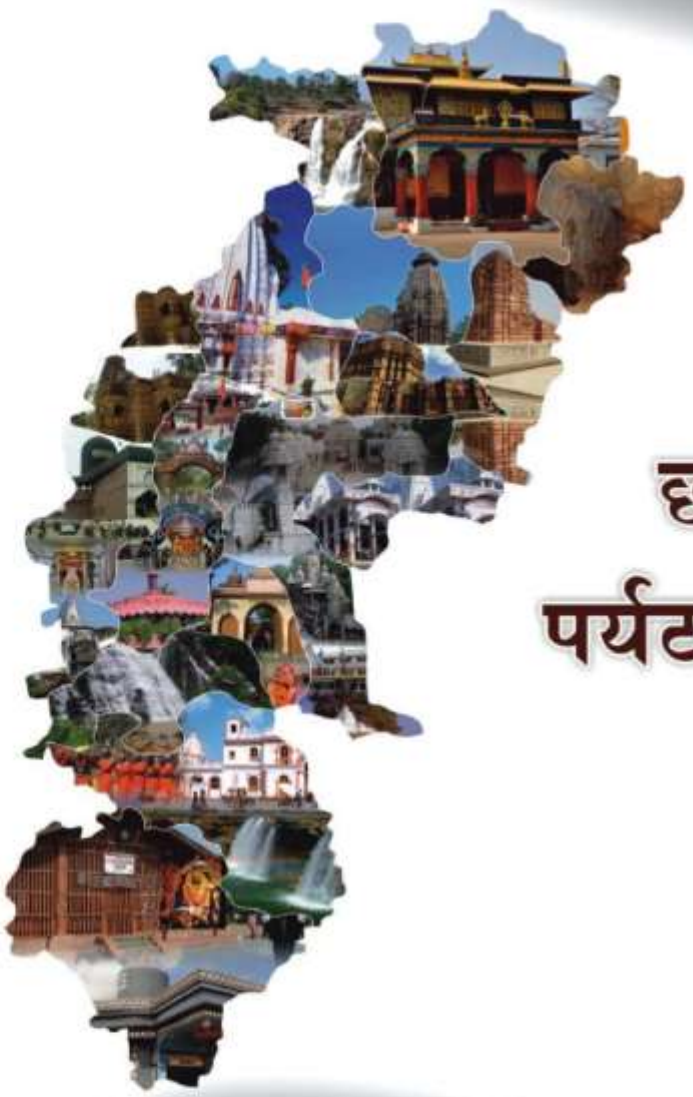

छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भिलाई – दुर्ग (छ.ग.)

भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा नराकास भिलाई दुर्ग पुन: राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से पुरस्कृत

माननीय राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार को
श्री पी.आर. देशमुख एवं डॉ. बी.एम. तिवारी द्वारा संयंत्र के
मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री एम.रवि को सौपते हुए

माननीय राष्ट्रपति से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार
ग्रहण करते हुए
श्री पी.आर. देशमुख एवं डॉ. बी.एम. तिवारी, सचिव नराकास

~~~~~~: संरक्षक :~~~~~~

श्री एम.रवि
मुख्य कार्यपालक अधिकारी
भिलाई इस्पात संयंत्र एवं
अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भिलाई–दुर्ग (छ.ग.)

~~~~~~: मार्गदर्शक :~~~~~~

श्री एम.के. बर्मन
कार्यपालक निर्देशक (कार्मिक व प्रशासन)
भिलाई इस्पात संयंत्र

~~~~~~: संपादक :~~~~~~

डॉ. बी.एम. तिवारी
वरि. प्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई – दुर्ग (छ.ग.)

~~~~~~: संपादक मंडल :~~~~~~

श्री राजुल दत्ता
वरीय निवासी लेखा परीक्षाधिकारी
भिलाई

श्री डी.पी. देशमुख
वरि. प्रबंधक जनसंपर्क, कार्मिक व राजभाषा
'सेल' रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

श्रीमती भावना चॉंदवानी
उप प्रबंधक
युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कं. लि. भिलाई

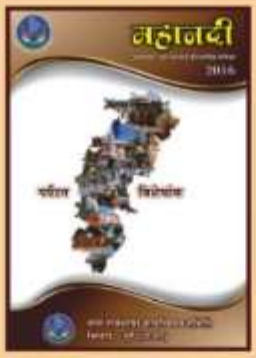

मुख्यपृष्ठ अभिकल्पन
वीरु स्वर्णकार
डिजाईनर स्क्वेयर
न्यू सिविक सेंटर, भिलाई(छ.ग.)
मो. : 77228 28880, 74007 11199

संपादन सहयोग
नराकास सचिवालय के अधिकारी एवं कार्मिक

महानदी

राजभाषा गृह पत्रिका–वर्ष 2016
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई – दुर्ग (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक – 2016 अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	आलेखकर्ता	पृष्ठ क्रं.
1.	भोरम देव	(पी.आर. साहू) वरिष्ठ रा.प्र.स.का.	07
2.	सिरपुर	छ.ग. पर्यटन मण्डल, रायपुर	08
3.	डोंगरगढ़	साभार – दैनिक भास्कर, रायपुर	09
4.	मैत्रीबाग	डी.पी. देशमुख, भिलाई	10
5.	राजीम	छ.ग. पर्यटन मण्डल, रायपुर	11
6.	रतनपुर	केशव शुक्ला, बिलासपुर (छ.ग.)	12
7.	तीरथगढ़	डॉ. सुरेश तिवारी, तोकापाल	13
8.	सियादेही	डॉ. प्रकाश पतंगीवार, रायपुर	14
9.	दंतेश्वरी माई	डॉ. शिशिर धागवार, रायपुर	15
10.	मैनपाट	छ.ग. पर्यटन मण्डल, रायपुर	16
11.	शदाणी दरबार	डॉ. मेठराम थदानी	17
12.	नगपुरा	रामकुमार वर्मा, भिलाई–3	18
13.	गंगा मैया मंदिर – झलमला	जगदीश देशमुख दरबारी नवागांव बालोद	19
14.	चित्रकोट जलप्रपात	डॉ. सुरेश तिवारी, तोकापाल	20
15.	महाप्रभु वल्लभाचार्य एवं चंपारण्य	डी.एल. मनहर, रायपुर	21
16.	छत्तीसगढ़ की सिटी–शिवरीनारायण	प्रो. अश्विनी केशरवानी, चांपा	22
17.	श्रीराम भक्त–शबरी मंदिर	छ.ग. पर्यटन मण्डल, रायपुर	23
18.	नंदनवन मिनी जू–रायपुर	तिलकेश्वर पठारे–रायपुर	24
19.	विष्णु मंदिर – जांजगीर	प्रो. अश्विनी केशरवानी, चांपा	25
20.	चर्रे–मर्रे जलप्रपात	डॉ. सुरेश तिवारी, तोकापाल	26
21.	चन्द्रहासिनी देवी – चन्द्रपुर	शीला चन्द्रा/अजीत पाण्डेय	27
22.	कला परम्परा की विरासत–खैरागढ़	छ.ग. पर्यटन मण्डल रायपुर	28
23.	माँ चण्डी देवी मंदिर–बागबहरा	अनिल पुरोहित, बागबाहरा	29
24.	कोटमसर गुफा	पुष्पा तिवारी	30
25.	दुधाधारी मठ	दीनदयाल साहू, भिलाई नगर	31
26.	घटारानी माता मंदिर	गौकरण मानिकपुरी, गरियाबंद	32
27.	मां जतमाई मंदिर	तुकाराम कंसारी संघर्ष, राजिम	33
28.	उदन्ती–सीतानदी अभ्यारण	डॉ. आभा तिवारी, भिलाई	34
29.	पलक झपकते–एक अविस्मरणीय यात्रा प्रसंग	राजुल कुमार दत्ता, भिलाई	35
30.	बारसूर का गणेश मंदिर	डॉ. हेमू यदु साहू, रायपुर	36

टिप्पणी :

पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। मौलिकता एवं अन्य विवादों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपर्क सूत्र :
राजभाषा विभाग–313–ए, तीसरा तल, इस्पात भवन,
भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई नगर (छ.ग.) – 490 001

हरीश सिंह चौहान
सहायक निदेशक (कार्यान्वयन)
एवं कार्यालयाध्यक्ष

भारत सरकार

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य.)
निर्माण सदन 52ए, अरेरा हिल्स,
कमरा नं. 206, भोपाल - 462011
भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755–2553149

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भिलाई, दुर्ग द्वारा वार्षिक पत्रिका "महानदी" पर्यटन विशेषांक का प्रकाशन करने जा रही है। विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन व कुशल नेतृत्व में यह पत्रिका निरन्तर पुष्पित एवं पल्लवित होती रहेगी तथा इसकी सामग्री व सुगन्ध से भिलाई से जुड़े सभी क्षेत्रों के पाठक लाभान्वित होंगे। साथ ही यह पत्रिका छत्तीसगढ़ ही नही अपितु देश के अन्य केन्द्रिय प्रतिष्ठानों के पाठकगणों के लिए उपयोगी भी सिद्व होगी। इस अंक में निश्चित रूप से बहुत ही उपयोगी जानकारी भी प्रकाशित होगी।

आपकी समिति द्वारा निरन्तर नित्य नए अभिनव प्रयोग किए जाते रहते है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का सदैव यही प्रयास हो कि हिन्दी को प्रभावशाली तरीके से सदस्य कार्यालय अपने दैनिक कामकाज में उपयोग करते हुए हिंदी के प्रति अपनी जागरूकता प्रदर्शित करें।

आज कोई भी व्यवसायिक संस्था हिन्दी के बिना अपना विकास नहीं कर सकती। आज के इस बदलते परिवेश में हिंदी भाषा की उपयोगिता बढ़ी है।

मुझे आशा है कि यह अंक भी पूर्ण प्रकाशित अंको की भांति सुन्दर रोचक एवं ज्ञानवर्धक होगा। इस अंक के रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को बधाई देता हूं जिनके अथक प्रयासों से इस पत्रिका को उच्च स्तरीय बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया जा रहा है। पत्रिका के अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

सेवा में,
श्री एम.रवि. सी.ई.ओ.
अध्यक्ष, नराकास, भिलाई (छ.ग.)

(हरीश सिंह चौहान)

एम. रवि
मुख्य कार्यपालक अधिकारी, भिलाई इस्पात संयंत्र
एवं अध्यक्ष नराकास, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

M.RAVI
CEO, Bhilai Steel Plant &
Chairman TOLIC, Bhilai-Durg (CG)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

इस्पात नगरी में स्थापित कार्यालयों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिये प्रयासरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग द्वारा छमाही गृह पत्रिका महानदी के नवीनतम अंक को छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है ।

मानव मन की सहजात प्रवृत्ति है, जानने की इसी जिज्ञासुपन के कारण मानव चांद एवं मंगल तक पहुच पाया है उसी भाव भूमि के धारक पर्यटक पीपासुओं के लिये छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों एवं उनके ऐतिहासिक पक्षो को इस पत्रिका में परोसा गया है।

छत्तीसगढ़ प्रदेश ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक परम्पराओं की अपार समृद्धि से परिपूर्ण है, जहां द्वापर एवं त्रेता युग के रामायण एवं महाभारत की अनेक स्मृतियां झरोखा बनकर हमारा मन मोह रही है । ऐसी सांस्कृतिक सम्पदा को जन-जन तक पहुचानें का भगीरथ प्रयास नराकास परिवार भी कर रहा है, जिसमें छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों के बारे में आपको रूबरू कराने का प्रयास किया गया है ।

आशा है, महानदी का यह छत्तीसगढ़ विशेषांक आपको रूचिकर प्रतीत होगा । मै इससे जुड़े लेखकों, संपादक मंडल के सदस्यों को साधुवाद देता हूँ ।

अंत में हमारी ओर से महानदी के इस विशेषांक के प्रकाशन की समस्त शुभकामनाऐं ।

(एम.रवि.)

एम.के. बर्मन
कार्यपालक निदेशक कार्मिक एवं प्रशासन
M.K. BARMAN
Executive Director (Pers. & Admn.)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

छत्तीसगढ़ की औद्योगिक राजधानी भिलाई-दुर्ग अपने आप में मिनी इंडिया है, यहाँ विभिन्न प्रांतों से आये लोग निवास करते हैं, जिनके मध्य आपसी संवाद की भाषा हिंदी ही है । इसी चिंतन को लेकर संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाया गया ।

स्वतंत्र भारत के निर्माण में हिंदी का अभूतपूर्व योगदान रहा है । स्वाधिनता संग्राम के दौरान राष्ट्र को एक सूत्र में बाधने और एकता का भाग जागृत करने में हिंदी ही अहम भूमिका रही हैं । यही कारण है कि संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949, को संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया है । जिसको नगर के संस्थानों में प्रचार प्रसार हेतु भारत सरकार द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है । भिलाई-दुर्ग नराकास भी इसी का एक अंग है । नराकास की विगत बैठक में गृह पत्रिका को छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया जिसके कार्यान्वयन के तहत नराकास सदस्यों एवं छत्तीसगढ़ के स्वनामधन्य रचनाकारों ने अपनी लेखनीय से इसे साकार किया है ।

ऐसी आंचलिक मिठास के साथ पत्रिका का यह अंक छत्तीसगढ़ की मिट्टी की सौंधी-सौंधी गंध से आपको परिचित करायेगा, जिसमें प्रदेश के सभी प्रमुख पर्यटन स्थलो का यथासाध्य वर्णन किया गया है ।

आशा है, हमारे परिवार का यह प्रयास आपको छत्तीसगढ़ घुमने के लिये आकर्षित करने में सफल होगा ।

पत्रिका प्रकाशन की शुभकामनाओं सहित ।

(मृणाल कांती बर्मन)

डॉ. बी.एम. तिवारी
वरि. प्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव,
नराकास, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संपादकीय

छत्तीसगढ़ राज्य अपनी प्राचीन धरोहरों के साथ वैदिककाल से ही जनमानस में सुर्खियों में रहा है । इसमें छत्तीसगढ़ के मूर्धन्य साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से इस क्षेत्र विशेष को हमेशा शीर्ष पर रखा, जिनमें सर्वश्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र, पं. सुन्दरलाल शर्मा, गजानन माधव मुक्तिबोध प्रभृति उद्भट विद्वानों का अहम योगदान रहा है । इसी परम्परा को जन-जनतक पहुंचाने के लिए नराकास की गृह पत्रिका महानदी का यह छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक सादर समर्पित है । प्रस्तुत अंक में छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक, धार्मिक, पुरातात्विक परिदृश्य को पर्यटन की दृष्टि से परोसा जा रहा है, जो आप पाठकों को छ.ग. भ्रमण के लिए मानसिक पृष्ठभूमि तैयार करने का काम करेगा । इसे साकार स्वरूप प्रदान करने में कला परम्परा के संस्थापक श्री डी.पी. देशमुख संपादित कला परम्परा, पर्यटन एवं तीरथधाम विशेषांक से आलेखों को साभार ग्रहण किया गया है । इसके लिए श्री देशमुख जी एवं आलेख के रचनाकारों के प्रति मैं श्रद्धानत हूँ ।

प्राचीनकाल में छत्तीसगढ़ को महाकौशल, दक्षिण कौशल तथा कौशल प्रदेश भी कहा जाता रहा है । इसके बाद के समय में इस प्रदेश में छत्तीस किलों के होने के कारण छत्तीसगढ़ का नाम दिया गया । रेवाराम कवि द्वारा रचित विक्रम-विलास नामक ग्रंथ की रचना में इस प्रदेश को छत्तीसगढ़ कहा गया है । इसकी महिमा का बखान कवि ने इन शब्दों में किया है :-

तिनमें दखिण कोसल देसा, जहँ हरि आंतु केसरी वेषा ।
तासु मध्य छत्तीसगढ़ पावन, पुण्यभूमि सूर मुनि मनभावन ।।

प्रदेश की इन सारी गुणग्राह्य प्रकृतियों को समेटे हुए छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक के रूप में पत्रिका का यह छमाही अंक आपके हाथों में प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है । इस अंक में प्रदेश के सभी महत्वपूर्ण स्थानों को दर्शाया गया है । मैं उन नमण्य वरण्य अग्रगण्य सभी आदरणीय लेखक महानुभावों के प्रति पुनः श्रद्धानत हूँ ।

आशा है, आप इसके पर्यटन की मिठास को मन ही मन अनुभूति करते हुए छत्तीसगढ़ का अवश्य दर्शनलाभ करेंगे और यही हमारे पत्रिका प्रकाशन की सार्थकता होगी ।

(डॉ. बी.एम. तिवारी)

भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा आयोजित
संयुक्त (संयंत्र एवं नराकास)
राजभाषा क्वीज प्रतियोगिता

छत्तीसगढ़ का खजुराहो - भोरमदेव

यात्रा : भोरमदेव मंदिर छत्तीसगढ़ के कबीरधाम कवर्धा जिले में कवर्धा से 18 कि.मी. तथा दुर्ग-भिलाई एवं राजधानी रायपुर समे 134 कि.मी. दूर चौरागाँव में स्थित एक हजार वर्ष प्राचीन मंदिर है, जिसे भोरमदेव मंदिर के नाम से जाना जाता है। मंदिर चारों ओर से सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के मैकल पर्वत श्रृंखलाओं से घिरे सुरम्य वनों के मध्य स्थित है। मंदिर के सामने एक निर्मल एवं शांत सरोवर है जिसमें कमल के पुष्प की अद्भुत छवि देखते ही बनती है। यहां छत्तीसगढ़ के सभी प्रमुख शहरों से बस एवं टैक्सी द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है।

संस्मरण : मैं सपरिवार दुर्ग से कवर्धा होते हुये भोरमदेव के लिए प्रस्थान किया तो भोरमदेव से करीब 3 कि.मी. पहले दियाबार एवं छपरी नाम के ग्राम से वनकी छटा मन को भाने लगी, भोरमदेव पहुँचते पहुँचते सड़क के दोनों किनारों पर स्थित हरे-भरे पेड़ यात्रा को और अधिक आनन्द दायक बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

ऐतिहासिक कथा : मोहक परिवेश के बीच काले ग्रेनाइट पत्थर को काटकर चौरा गांव में एक दूसरे से एक कि.मी. दूर पर तीन मंदिर (भोरमदेव मंदिर, मड़वा महल और छेरकी महल) स्थित है। तीनों मंदिरों की भव्यता एवं उत्कृष्टता देखते ही बनती है।

भोरमदेव मंदिर :- भोरमदेव मंदिर एक ऐतिहासिक मंदिर है जिसका निर्माण नागर शैली (चंदेल शैली) में 11वीं शताब्दी (सन् 1089 ई.) में फणी नागवंश के छठवें राजा गोपाल देव के शासन काल में लक्ष्मण देव नामक राजा ने करवाया था। अपनी आकर्षक तथा मनमोहक पृष्ठभूमि के अतिरिक्त इसकी पत्थर पर वास्तुकला बहुत ही अद्भुत तथा अद्वितीय है। मंदिर के दो मुख पूर्व दिशा की ओर है जो मंडप, अंतराल और बनाया गया है। मंदिर की पश्चिम दिशा को छोड़कर लम्बाई एवं चौड़ाई क्रमशः 60 फुट व 40 फुट है। को संभाले हुए हैं। मंडप में लक्ष्मी, विष्णु और गरूड़ राजपुरूष की मूर्ति भी है। शेर और हाथी की मूर्तियां में अनेक मूर्तियाँ रखी है जिनके मध्य में काले पत्थर मूर्ति है साथ ही नृत्य करते हुए गणेश जी की मूर्ति पुरूष की मूर्ति भी है। मंदिर के उपरी भार का विष्णु, शिव, चामुंडा, गणेश उमा-महेश्वर, नटराज, नारायण एवं वामन अवतार की मूर्तियाँ लगी है। मंदिर की दीवारों पर राम-कथा के चिन्ह अंकित है। साथ ही विभिन्न कामुक मूर्तियाँ भी प्रसिद्ध हैं। जो उस समय के लोगों की सामाजिक जीवन शैली को दर्शाती है। देवी सरस्वती और शिव की अर्धनारीश्वर की मूर्ति भी लगी है।

भागों को इष्टिका(ईंट) और पत्थर से बनाया गया है। मंदिर का गर्भ गृह में विभाजित है। मंदिर एक पांच फीट उँचे चबूतरे पर अन्य तीनों दिशाओं से प्रवेश किया जा सकता है। मंडप की मंडप के बीच में 4 लंबे और किनारे की ओर 12 लंबे है जो मंडप की मूर्ति विराजमान है तथा भगवान के ध्यान में बैठे हुए एक मंदिर को एक शाही मंदिर की तरह दर्शाती है। मंदिर के गर्भगृह से निर्मित शिवलिंग स्थापित है। गर्भगृह मे एक पंचमुखी नाग की तथा ध्यानमग्न अवस्था में राजपुरूष एवं उपासना करते हुए स्त्री शिखर नहीं है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर चारो ओर भगवान नरसिंह, कृष्ण, नृत्य-गणेश, कार्तिकेय, सप्त-मत्रीका, लक्ष्मी-

मड़वा महल - भोरमदेव मंदिर के पूर्व में एक कि.मी. दूरी पर एक शिव मंदिर और है जिसे मड़वा महलया दूल्हादेव मंदिर के नाम से जाना जाता है। उक्त मंदिर का निर्माण 14वीं शताब्दी (सन् 1349 ईसवी) में फणी नागवंशी शासक रामचन्द्र देव ने करवाया था। मंदिर की बाहरी दीवारों पर 54 मिथुन मूर्तियों का अंकन अत्यंत कलात्मकता से किया गया है जो कि आंतरिक प्रेम और सुंदरता को प्रदर्शित करती है। इसके देखने से उस समय समाज में स्थापित गृहस्थ जीवन की अंतरंगता भी परिलक्षित होती है।

छेरकी महल : भोरमदेव मंदिर के दक्षिण पश्चिम दिशा में से एक कि.मी. दूरी पर एक शिव मंदिर और स्थित है जिसे छेरकी महल के नाम से जाना जाता है इस मंदिर का निर्माण भी फणी नागवंशी शासनकाल में 14वीं शताब्दी में हुआ। तीनों मंदिरों में भगवान शिव की पूजा की जाती है जो मंदिर के गर्भगृह में लगभग 5 फीट नीचे शिव लिंग के रूप में विराजमान है जिसकी बनावट बहुत ही कलात्मक है, जो राज्य एवं देश, विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

धार्मिक मान्यता : इन तीनों मंदिरों के निर्माण के संबंध में एक जनश्रुति है कि इसे छह-मासी (छह महीने की) रात में बनवाया गया था, मंदिर के बनते बनते सबुह हो गई जिसके कारण तीनों मंदिरों के शिखर पर कलश नहीं लग सका। भोरमदेव का यह क्षेत्र फणी नागवंशी शासकों की राजधानी रही जिन्होंने यहाँ 9वीं शताब्दी समे 14वी शताब्दी तक शासन किया। भोरमदेव मंदिर मूलत· एक एक शिव मंदिर है। ऐसा कहा जाता है शिव का ही एक रूप भोरमदेव, गोंड समुदायों के ईष्ट देव थे जिसके नाम से यह स्थल भोरमदेव प्रसिद्ध हुआ और मंदिर का नाम भोरमदेव पड़ा। भोरमदेव मंदिर के दीवारों पर पड़े हल्दी के निशान मंदिर में होने वाले विभिन्न पवित्र अनुष्ठान को प्रतिबिम्बित करते हैं। मड़वा महल का निर्माण फणी नागवंशी शासन रामचन्द्र देव ने अपने विवाह के उपलक्ष्य में करवाया था। हैहयवंशी राजकुमारी अंबिका देवी से उनका विवाह सम्पन्न हुआ था। मड़वा का अर्थ मंडप होता है इसीलिये उक्त मंदिर को दूल्हादेव मंदिर भी कहा जाता है।

छेरकी महल के निर्माण के संबंध में ऐसा कहा जाता है कि उक्त मंदिर बकरी चराने वाले चरवाहों को समर्पित कर बनवाया गया था। स्थानीय बोली (छत्तीसगढ़ी में) बकरी को छेरी कहा जाता है। मंदिर के द्वार को छोड़कर अन्य सभी दीवारें अलंकरण विहीन हैं। इस मंदिर के समीप बकरियों के शरीर से आने वाली गंध निरंतर आती रहती है। जनजातीय संस्कृति, स्थापत्य कला और प्राकृतिक सुन्दरता से युक्त भोरमदेव देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

वर्तमान में वर्ष भर पड़ने वाले सोमवार विशेषकर सावन मास के सोमवार को पूरे विधि-विधान के साथ भगवान शिव की पूजा करने से मनोकामना पूर्ण होती है। चैत्र मास के दोनों पक्ष के त्रयोदशी को यहाँ भव्य मेला लगता है जिसमें भगवान शिव का दर्शन मात्र से लोग अभिभूत हो जाते है। इस मंदिर के निर्माण योजना की विषय वस्तु खजुराहो और कोणार्क के सूर्य मंदिर के सामान है इसीलिए यह छत्तीसगढ़ का खजुराहों के नाम से प्रसिद्ध है।

विगत दो दशकों से छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा मार्च के महीने में (चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के त्रयोदशी से पूर्णिमा तक) तीन दिन भोरमदेव महोत्सव का आयोजन अत्यंत भव्य रूप में किया जाता है जिसमें देश भर के कला एवं संस्कृति के अद्भुत दर्शन होते हैं।

कैसे पहुंचे - सड़क मार्ग से भोरमदेव रायपुर से 134 कि.मी., बिलासपुर से 150 कि.मी., दुर्ग-भिलाई से भी 134 कि.मी., जबलपुर से 226 कि.मी. दूर है। यहां से निजी वाहन, बस या टैक्सी द्वारा जाया जा सकता है। निकटतम रेल्वे स्टेशन रायपुर - 134 कि.मी., बिलासपुर 150 कि.मी., दुर्ग-भिलाई 134 कि.मी., जबलपुर 226 कि.मी., दूर निकटतम हवाई अड्डा - रायपुर 134 कि.मी. दूर।

कहाँ ठहरें - कवर्धा में विश्राम गृह और निजी होटल हैं। भोरमदेव में भी छत्तीसगढ़ पर्यटन मण्डल का विश्रामगृह और निजी रिसोर्ट हैं।

सैर कर दुनिया की गालिब, जिन्दगानी फिर कहाँ।
जिन्दगानी गर रही तो, नव जवानी फिर कहाँ।

(पी.आर. साहू)
वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी, रा.प्र.स.का.(क्षे.सं.प्र.), उ.क्षे.का., दुर्ग

पुरातात्विक नगरी - सिरपुर

सिरपुर, भारतीय एवं पुरातात्विक खजानो से भरपूर एक अद्वितीय नगरी हैं । जहाँ आपको अनेकता में एकता की भरपूर अनुभूति होगी । जो भारतीय ऐतिहासिक परम्परा की अनुठी मिसाल है । यह नगरी पर्यटको के लिए गागर में सागर के समान है ।

पुण्य सलिला महानदी के तट पर स्थित सिरपुर का अतीत सांस्कृतिक समृद्धि तथा वास्तुकला के लालित्य से ओतप्रोत रहा है। सिरपुर प्राचीन काल में श्रीपुर के नाम से विख्यात रहा हैं तथा पाण्डुवंशीय शासकों के काल में इसे दक्षिण कोसल की राजधानी होने का गौरव प्राप्त रहा है । सिरपुर की प्राचीनता का सर्वप्रथम परिचय शरभपुरीय शासक प्रवरराज तथा महासुदेवराज के ताम्रपत्रों से उपलब्ध होता है, जिनमें "श्रीपुर"सेभूमिदानदिया गया था। पाण्डुवंशीय शासकों के काल में सिरपुर महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। महाशिवगुप्त बालार्जुन के 57 वर्षीय, सुदीर्घ शासनकाल में यहां अनेक मंदिर, बौद्ध विहार, सरोवर तथा उद्यानों का निर्माण करवाया गया। सातवीं सदी ईस्वी में चीन के महान पर्यटक तथा विद्वान ह्वेनसांग ने सिरपुर की यात्रा की थी। उस समय यहां लगभग 100 संघाराम थे तथा मायान संप्रदाय के 10000 भिक्षु निवास करते थे। महाशिवगुप्त बालार्जुन ने स्वयं शैव मतावलंबी होते हुए भी बौद्ध विहारों को उदारतापूर्वक प्रचुर दान देकर संरक्षण प्रदान किया था।

दर्शनीय स्थल :- लक्ष्मण मंदिर :- यह मंदिर ईंटों से निर्मित भारत के सर्वोत्तम मंदिरों में से एक हैं। अलंकरण सौंदर्य, मौलिक अभिप्राय तथा निर्माण कौशल की दृष्टि से यह अपूर्व है। लगभग 7 फुट ऊंचे पाषाण निर्मित जगती पर स्थित यह मंदिर अत्यंत भव्य है। पंचरथ प्रकार का यह मंदिर गर्भगृह, अंतराल तथा मंडप से युक्त है। मंदिर की बाह्य भित्तियों में कूट-द्वार तथा वातायन आकृति, चैत्य गवाक्ष, भारवाहकगण, गज, कीर्तिमुख एवं कर्ण आमलक आदि अभिप्राय दर्शनीय हैं। मंदिर का प्रवेश द्वार अत्यंत आकर्षक है। द्वार शीर्ष पर शेषशायी विष्णु प्रदर्शित है। उभय द्वार शाखा पर विष्णु के प्रमुख अवतार, कृष्ण लीला के दृश्य, अलंकरणात्मक प्रतीक, मिथुन दृश्य तथा वैष्णव द्वारपालों का अंकन है। गर्भगृह के भीतर नागराज शेष की बैठी हुई सौम्य प्रतिमा रखी है। लक्ष्मण मंदिर का निर्माण महाशिवगुप्त बालार्जुन की माता वासटा ने अपने दिवंगत पति हर्षगुप्त की स्मृति में करवाया था। वासटा मगध के राजा सूर्यवर्मन की पुत्री थी। अभिलेखीय साक्ष्य के आधार पर इस मंदिर का निर्माण काल ईस्वी 650 के लगभग माना गया है ।

गंधेश्वर मंदिर :- महानदी के तट पर स्थित इस मंदिर का प्राचीन नाम गंधर्वेश्वर था। यह सतत पूजित शिव मंदिर है। इसका निर्माण प्राचीन मंदिरों एवं विहारों से प्राप्त स्थापत्य खण्डों से किया गया है। मंदिर परिसर में अनेक कलात्मक प्रतिमाएं संरक्षित की गई हैं। द्वारशाखा पर शिवलीला के विविध दृश्य हैं। इन्हीं दृश्यों में रावण के शीर्ष पर गर्दभ मुख निर्मित है।

बौद्ध विहार :- बौद्धधर्म से संबंधित अवशेषों की दृष्टि से सिरपुर का विशेष महत्व है। उत्खनन कार्य से यहां दो बौद्ध विहार के अवशेष प्रकाश में आये हैं। विहारों के निर्माण में मुख्य रूप से ईटों का उपयोग किया गया है। इन विहारों की तल योजना में गुप्तकालीन मंदिर तथा आवासीय भवन निर्माण कला का सुंदर समन्वय है। विहार में प्रमुख स्थाविर तथा अन्य भिक्षुओं के ध्यान, अध्ययन-अध्यापन तथा निवास की सुविधा थी। इन विहारों के मुख्य कक्ष में भगवान बुद्ध की भूमि स्पर्श मुद्रा में लगभग साढ़े छः फुट ऊंची प्रतिमा प्रस्थापित है। इनके अतिरिक्त अवलोकितेश्वर तथा मकरवाहिनी गंगा भी मिली है। यहां के प्रमुख विहार से मिले अभिलेख से ज्ञात होता है कि महाशिवगुप्त बालार्जुन के राजत्वकाल में अनंदप्रभु नामक भिक्षु ने इसका निर्माण करवाया था। इस मठ में निवास के लिए 14 कमरे थे। यह विहार दो मंजिला था। विहार के सम्मुख तोरणद्वार था, जिसके दोनों ओर द्वारपालों की प्रतिमाएं रखी हैं। अभिलेख के आधार पर इस विहार का नामकरण अनंदप्रभु कुटी विहार किया गया है। इसी के सन्निकट एक अन्य ध्वस्त विहार भी उत्खनन से प्रकाश में आया है। तल योजना के आधार पर इसे स्वस्तिक विहार के नाम से जाना जाता है। यहां पर भी भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध की प्रतिमा प्रस्थापित है। सिरपुर से बौद्धधर्म से संबंधित पाषाण प्रतिमाओं के अतिरिक्त धातु प्रतिमायें तथा मृण्मय पुरावशेष भी उपलब्ध हुए हैं।

राम मंदिर :- लक्ष्मण मंदिर से कुछ दूरी पर पूर्व की ओर ईटों से निर्मित एक भग्न तथा जीर्ण-शीर्ण मंदिर स्थित है। यह राम मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर के ऊर्ध्व विन्यास में कोंण तथा भुजाओं के संयोजन से निर्मित प्रतिरथ ताराकृति की रचना करते हैं। इस कलात्मक मंदिर का संपूर्ण शिखर नष्ट हो चुका है तथा भग्नप्रायः भित्तियां बचे हैं। लक्ष्मण मंदिर तथा राम मंदिर के निर्माण में कुछ दशकों का अंतराल है।

राजमहल का अवशेष :- सिरपुर में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के समीप महानदी के तट पर स्थित है। यहां से प्राप्त अवशेषों में भगवान विष्णु एवं लक्ष्मी की प्रतिमाएं महत्वपूर्ण हैं। वर्ष 2001 से वर्ष 2004 के मध्य सिरपुर में डॉ. अरूण कुमार शर्मा रिटायर्ड सुप्रिटेंडेंट भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के द्वारा नागार्जुन बोधिसत्व संस्थान मनसर के तत्वावधान में उत्खनन कार्य संपादित किया गया । इस अवधि में स्मारक अवशेष अनावृत किये गये जिसमें बौद्ध विहार (तीवर देव महाविहार), शिव मंदिर समूह एवं पंचायतन बालेश्वर महादेव मंदिर आदि प्रमुख हैं।

साभार : छ.ग. पर्यटन मण्डल, रायपुर

बम्लेश्वरी मंदिर - डोंगरगढ़

भारतीय धर्मदर्शन में वैष्णव, शैरव एवं साक्य परम्परा की एक लम्बी फेरिहस्त है, जिसमें छत्तीसगढ़ की अहम हिस्सेदारी है। इस प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों में आपको इन परम्पराओं के अनुवर्ती बहुलता में मिलेंगे । इसी कड़ी में राजनांदगांव से 36 कि.मी. की दूरी पर स्थित डोंगरगढ़ नगरी धार्मिक विश्वास एवं श्रद्धा का प्रतीक है। डोंगरगढ़ की पहाड़ी पर स्थित शक्तिरूपा माँ बम्लेश्वरी देवी के दो विख्यात मंदिर हैं । डोंगरगढ़ की पहाड़ी पर 1600 फीट ऊंचाई पर पहला मंदिर स्थित है, जो बड़ी बम्लेश्वरी के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर तक पहुंचने के लिए पहाड़ी पर बनीं लगभग 1000 सीढ़ियां चढ़नी होती हैं। बड़ी बम्लेश्वरी के समतल पर स्थित मंदिर छोटी बम्लेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध है। माँ बम्लेश्वरी के मंदिर में प्रतिवर्ष नवरात्रि के समय दो बार विराट मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें लाखों की संख्या में दर्शनार्थी भाग लेते हैं। चारों ओर हरे-भरे वनों, पहाड़ियों , छोटे-बड़े तालाबों एवं पश्चिम में पनियाजोब जलाशय, उत्तर में ढारा जलाशय दक्षिण में मड़ियान जलाशय से घिरा प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण स्थान है - डोंगरगढ़। कामाख्या नगरी व डुंगराख्य नगर नामक प्राचीन नामों से विख्यात डोंगरगढ़ में उपलब्ध खंडहरों एवं स्तंभों की रचना शैली के आधार पर शोधकर्ताओं ने उसे कलचुरी काल का एवं बारहवीं-तेरहवीं सदी के लगभग का पाया है ।

ऐतिहासिक मान्यतानुसार 2200 वर्ष पूर्व डोंगरगढ़ के प्राचीन नाम कामाख्या नगरी में राजा वीरसेन का शासन था, जो कि निःसंतान थे। पुत्र रत्न की कामना हेतु उसने महिषमती पुरी में स्थित शिवजी और भगवती दुर्गा की उपासना की , जिसके फलस्वरूप रानी को एक वर्ष पश्चात् पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। ज्योतिषियों द्वारा नामकरण में पुत्र का नाम मदनसेन रखा गया। भगवान शिव एवं दुर्गा मां की कृपा से राजा विरसेन को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी और इसी भक्ति भाव से प्रेरित होकर कामाख्या नगरी में मां बम्लेश्वरी का मंदिर बनवाया गया। मां बम्लेश्वरी को जगदम्बा, जिसमें भगवान शिव अर्थात् महेश्वर की शक्ति विद्यमान है, के रूप में जाना जाने लगा।

यहाँ के राजा मदनसेन एक प्रजा सेवक शासक थे। उनके पुत्र राजा कामसेन जिनके नाम पर कामाख्या नगरी का नाम कामावती पुरी रखा था। कामकन्दला और माधवनल की प्रेमकथा भी डोंगरगढ़ की प्रसिद्धि का महत्वपूर्ण अंग हैं। कामकन्दला राजा कामसेन के राजदरबार में नर्तकी थी। वहीं माधवनल एक निपुण संगीतज्ञ थे। एक बार राजा के दरबार में कामकन्दला के नृत्य का आयोजन हुआ, परन्तु ताल व सुर बिगड़ने से माधवनल ने कामकन्दला के पैर की एक पायल में नग न होना व मृदंग बजाने वाले का एक अंगूठा नकली अर्थात् मोम का होना जैसी त्रुटि निकाली। इससे राजा कामसेन अत्यंत प्रभावित हए और उसने अपनी मोतियों की माला माधवनल को भेंट की तथा कामकन्दला को पुनः माधवनल के सम्मान में नृत्य करने को कहा। कामकन्दला के नृत्य से प्रभावित होकर माधवनल ने राजा कामसेन की दी हुई मोतियों की माला कामकन्दला को भेंट कर दी। इससे राजा कामसेन क्रोधित हो गये और माधवनल को राज्य से निकाल दिया गया। परन्तु माधवनल राज्य से बाहर न जाकर डोंगरगढ़ की पहाड़ियों की एक गुफा में छुप गये । इस प्रसंगवश कामकंदला व माधवनल के बीच प्रेम अंकुरित हो चुका था। कामकंदला अपनी सहेली माधवी के साथ छिपकर माधवनल से मिलनें जाया करती थी।

उसी राजा कामसेन के पुत्र मदनादित्य पिता के स्वभाव के विपरीत नास्तिक व अय्याश प्रकृति के थे। वह कामकन्दला को मन ही मन चाहते थे और उसे पाना चाहते थे । एक दिन माधवनल कामकंदला से मिलने उसके घर चले गए और उसी वक्त मदनादित्य अपने सिपाहियों के साथ कामकंदला से मिलने चले आए । यह देख माधवनल पीछे के रास्ते से गुफा की ओर निकल गये। घर के अन्दर आवाजें आने की बात पूछने पर कामकंदला ने दीवारों से अकेले में बात करने की बात कही। इससे मदनादित्य संतुष्ट नहीं हुए और अपने सिपाहियों से घर पर नज़र रखने को कहकर महल की ओर चले गए।

एक रात्रि पहाड़ियों से वीणा की आवाज सुन व कामकंदला को पहाड़ी की तरफ जाता देख मदनादित्य रास्ते में बैठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगे, परंतु कामकंदला दूसरे रास्ते से अपने घर लौट गई। मदनादित्य ने शक होने पर कामकंदला को उसके घर में नजरबंद कर दिया। इस पर कामकंदला और माधवनल माधवी के माध्यम से पत्र व्यवहार करने लगे किन्तु मदनादित्य ने माधवी को एक रोज पत्र ले जाते पकड़ लिया। डर व धन का प्रलोभन पाकर माधवी ने सारा सच उगल दिया। मदनादित्य ने कामकंदला को राजद्रोह के आरोप में बंदी बनाया और माधवनल को पकड़ने हेतु सिपाहियों को भेजा। सिपाहियों को आता देख माधवनल पहाड़ी से निकल भागें और उज्जैन जा पहुंचे , उस समय उज्जैन में राजा विक्रमादित्य का शासन था जो बहुत प्रतापी और दयावान थे। माधवनल की करूण कथा सुन उसने माधवनल की सहायता करने की सोचकर अपनी सेना के साथ कामाख्या नगरी पर आक्रमण कर दिया। कई दिनों के घनघोर युद्ध के बाद विक्रमादित्य विजयी हुए एवं मदनादित्य, माधवनल के हाथों मारा गया। घनघोर युद्ध से वैभवशाली कामाख्या नगरी पूर्णतः ध्वस्त हो गई। चारों ओर शेष डोंगर पर्वत ही बचे रहे तथा इस प्रकार डूंगराख्य नगर की पृष्ठ भूमि तैयार हुई। युद्ध के पश्चात् विक्रमादित्य द्वारा कामकंदला एवं माधवनल की प्रेम परीक्षा लेने हेतु जब यह मिथ्या सूचना फैलाई गई कि युद्ध में माधवनल वीरगति को प्राप्त हुआ, तो कामकंदला ने ताल में कूदकर प्राणोत्सर्ग किया। वह तालाब आज भी कामकंदला के नाम से विख्यात है उधर कामकंदला के आत्मोत्सर्ग से माधवनल ने भी अपने प्राण त्याग दिये। अपना प्रयोजन सिद्ध होते न देख राजा विक्रमादित्य ने मां बम्लेश्वरी देवी (बगुलामुखी) की घोर आराधना की और अन्ततः प्राणोत्सर्ग करनें को तत्पर हो गए।

तब देवी ने प्रकट होकर अपने भक्त को आत्मघात करने से रोका। तत्पश्चात् विक्रमादित्य ने माधवनल कामकंदला के जीवन के साथ यह वरदान भी मांगा कि मां बगुलामुखी अपने जागृत रूप से पहाड़ी में प्रतिष्ठित हों। तब से मां बगुलामुखी - अपभ्रंश बमलाई देवी साक्षात महाकाली के रूप में डोंगरगढ़ में विराज रही हैं । जो देश-विदेश से आये अपने भक्तों की मन्नते पूर्ण करती है ।

साभार-दैनिक भास्कर रायपुर

मैत्रीबाग भिलाई - भारत एवं रूस की मैत्री का प्रतीक

मैत्रीबाग विश्व के प्रमुख अभ्यारण्यों में से एक है । यह एक ऐसा सुपसिद्ध चिड़ियाघर है, जो एशिया प्रसिद्ध औद्योगिक नगरी भिलाई नगर में स्थित है । सोवियत संघ एवं भारत की मैत्री के प्रतीक बतौर इस चिड़ियाघर का नाम रखा गया मैत्रीबाग खूबसूरत बाग बगीचों एवं दुर्लभ वन्य प्राणियों की मौजूदगी से यह चिड़ियाघर छत्तीसगढ़ जैसे नवराज्य की एक धरोहर है । देश प्रदेश के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता चिड़ियाघर एवं अन्य वन्य प्राणी संरक्षण की दृष्टि से एक राष्ट्रीय उदाहरण है । छत्तीसगढ़ के प्रादेशिक सौंदर्य तीर्थ भिलाई के आकर्षण का यह एक ऐसा केन्द्र है, जिससे पर्यटकों के मन में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है ।

दुर्ग जिल के भिलाई नगर में स्थित मैत्रीबाग छत्तीसगढ़ का सबसे प्रमुख पिकनिक स्पॉट है । चिड़ियाघर के रूप में विकसित इस बाग की स्थापना भारत-रूस मैत्री के प्रतीक के रूप में हुई थी । छत्तीसगढ़ के तीन चिड़ियाघरों में से एक मैत्रीबाग 167 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है । राज्य के अन्य दो चिड़ियाघर नंदनवन रायपुर व कानन पिडारी बिलासपुर में है । यह राज्य का प्रमुख मनोरंजन स्थल है । यहाँ हर वर्ष पांच लाख से अधिक लोग घूमने आते हैं, इनका प्रबंधन बीएसपी नगर प्रशासन के उद्यानिकी विभाग के जिम्मे हैं ।

मुख्य आकर्षण : बाग में पर्यटकों के मनोरंजन की भरपूर व्यवस्था की गई है । यहां के मुख्य आकर्षण में म्यूजिकल फाउंटेन शनिवार और रविवार को चालू रहता है । इसमें संगीत के रिदम के साथ फव्वारे से पानी निकलता है, जिसे देख दर्शक आनंदित होते है । यह देश का सबसे बड़ा रंगीन डांसिग फव्वारा है । बच्चों व बड़ों सभी का मुख्य आकर्षण ट्वाय ट्रेन भी शनिवार एवं रविवार को चलायी जाती है । बाग में खड़े प्रगति मीनार पर लगी पूर्व एम्डीज व रशियन डेलिगेशन की मूर्तियां भी ऐतिहासिक धरोहर जैसी है । इसके साथ ही झूले, कैण्डल गार्डन, कृत्रिम झील, संकल लॉन, पीपल लॉन, पुरातात्विक मूर्तियाँ आदि पर्यटकों के लिये मुख्य आकर्षक है । यहाँ पर्यटकों की सुविधा के लिये पिकनिक सुविधा, पेयजल, टॉयलेट आदि की भी व्यवस्था है ।

मौजूद जानवर :- मैत्री गार्डन में उपलब्ध जानवरों में सिंह, सफेद बाघ, रॉयल बंगाल टायगर, चीता, भालू, लकड़बग्घा, लॉयन टेल बंदर, बोनेट बंदर, स्पाटेड डियर, डियर, ब्लेक बक, सांभर, मृगनयनी, हिरण, नील गाय, बारकिंग डियर तथा पक्षियों में गोल्डेन पीजेंट, तोता, मोर, एमू, रोजी पेलीकन, कोकाटिल, लव बर्ड, गोल्डन फफीसेट, गिनी फाल आदि है । वर्तमान में यहां कुल मिलाकर 353 पशु-पक्षी है ।

प्रजनन केन्द्र : मैत्री गार्डन परिस्थितियों का संरक्षण में भी बड़ा योगदान दे रहा है, इसे भारत के विलुप्ति के संकट से गुजर रहे कई जीव प्रजातियों के प्रजनन केन्द्र के रूप में विकसित किया है । यहाँ सफेद बाघ, रॉयल बंगाल टायगर, लगड़बग्घा, लॉयन टेल मंकी, संघई हिरण, मणिपुर हिरण आदि संकटग्रस्त जीवों का प्रजनन कर उनके बच्चों को पालकर बड़ा किया जाता है, जरूरत पड़ने पर इन्हें जंगलों में छोड़ा जाता है ।

एजुकेशनल प्रोग्राम : मैत्री बाग द्वारा भिलाई के स्कूली बच्चों के लिये वनों और वन्य जीवन के विषय में एजुकेशनल व अवेयरनेस प्रोग्राम भी चलाये जाते है । इसके तहत् भ्रमण करने आये स्कूल, कालेज के विद्यार्थियों को पर्यावरण और जानवरों के विषय में जानकारी देने के साथ ही उन्हें इस संबंध में किताब व पोस्टर प्रदान किये जाते है ।

विशेष कार्यक्रम :- बाग में पर्यटकों के मनोरंजन के लिए प्रति रविवार संध्या 4 बजे से 6.30 बजे तक संगीत कार्यक्रम चलाया जाता है, जिसमें सैर पर आने वाले आम लोग ही आर्केस्ट्रा की धुन पर गायन करते है । यह कार्यक्रम सभी के लिये खुला है, और इसमें कोई भी शौकिया तौर पर भाग लेकर गाना गा सकता है ।

नया क्या : पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए मैत्री गार्डन में इस बीच नये कदम उठाये गये हैं । इनमें मुख्य इस प्रकार है :-

अन्य दर्शनीय स्थल : भिलाई इस्पात संयंत्र में लौह निर्माण की प्रक्रिया, सिविक सेंटर भिलाई, सेक्टर-6 स्थित विभिन्न धर्मो के धर्म स्थल, जिला मुख्यालय दुर्ग से लगभग 20 कि.मी. दूरी पर स्थित पार्श्व तीर्थ नगपुरा, छातागढ़ मोहलाई दुर्ग, देवबलौदा स्थित शिव मंदिर ।

भारत का नक्शा : बीते गणतंत्र दिवस पर यहां भारत के नक्शे वाला एक गार्डन का लोकर्पण किया गया है, जो मिट्टी, कारपेट घास आदि से तैयार किया गया है, प्रवेश द्वार के पास स्थित इस नक्शे पर सर्वधर्म समभाव का प्रदर्शन करने वाली चार मूर्तियां लगाई गई है ।

नौका विहार : पुरानी लोहे की नावों के स्थान पर हाल ही में यहाँ फाइवर की आकर्षक वोट को तालाब में उतारा गया है ।

डी.पी. देशमुख
एस.आर.यू. भिलाई (छ.ग.)

राजिम-त्रिवेणी संगम

भारतीय आर्य परम्परा में नदियों के मिलन को धार्मिक दृष्टया अति पूण्य प्रद माना गया हैं। उसमें भी तीन नदियों का मिलन अर्थात त्रिवेणी को स्वर्ग इव फलप्रद कहा गया है। त्रिवेणी की धारा के रूप में सोंढूर-पैरी महानदी के संगम पर बसा राजिम छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है। दक्षिण कोशल के नाम से प्रख्यात यह क्षेत्र प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं कला की अमूल्य निधि संजोये इतिहासकारों, पुरातत्वविदों और कलानुरागियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। रायपुर से दक्षिण पूर्व की दिशा में 45 कि.मी. की दूरी पर, देवभोग जाने वाली सड़क पर यह स्थित है। श्राद्ध, तर्पण, पर्वस्नान, दान आदि धार्मिक कृत्यों के लिए इसकी सार्वजनिक महत्ता आंचलिक लोगों की परम्परागत आस्था, श्रद्धा एवं विश्वास की स्वाभाविक परिणति के रूप में सद्यः देखने को मिलती है, क्षेत्रीय लोग इस संगम को प्रयाग-संगम के समान ही पवित्र मानते हैं। इनका विश्वास है कि यहां स्नान करने मात्र से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं तथा मृत्युपरांत वह विष्णु लोक को प्राप्त करता है। छत्तीसगढ़ में महानदी का वही स्थान है, जो भारत में गंगा का है। यहां का सबसे बड़ा पर्व महाशिवरात्रि है जो पर्वायोजन माघ मास की पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर फाल्गुन मास की महाशिवरात्रि (कृष्णपक्ष-त्रयोदशी) तक चलता है।

राजिम के देवालय ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक दोनों ही दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं।इन्हें हम इनकी स्थिति के आधार पर अधोलिखित चार वर्गों में विभक्त कर सकते हैं :-

(क) पश्चिमी समूह :- कुलेश्वर (9 वीं सदी), पंचेश्वर (9 वीं सदी) तथा भूतेश्वर महादेव (14 वीं सदी) के मंदिर

(ख) मध्य समूह :- राजीवलोचन (8 वीं सदी), वामन, वाराह, नृसिंह, बद्रीनाथ, जगन्नाथ, राजेश्वर, दानेश्वर एवं राजिम तेलिन मंदिर।

(ग) पूर्व समूह :- रामचन्द्र (14 वीं सदी) का मंदिर

(घ) उत्तरी समूह :- सोमेश्वर महादेव का मंदिर नलवंशी नरेश बिलासतुंग के राजीव लोचन मंदिर अभिलेख के आधार पर अधिकतर विद्वानों ने इस मंदिर को 8वीं शताब्दी में निर्मित माना है।

राजीवलोचन मंदिर :- एक विशाल आयताकार प्रकोष्ठ के मध्य में बनाया गया है। भू-विन्यास योजना में राजीवलोचन का मंदिर - महामंडप, अन्तराल, गर्भगृह और प्रदक्षिणा-पथ, इन चार विशिष्ट अंगों में विभक्त हैं।

महामण्डप :- नागर प्रकार के प्राचीन मंदिरों में महामण्डप सामान्यतः वर्गाकार बनाये जाते थे, परन्तु राजिम के प्रायः सभी मंदिरों की ही भांति इस मंदिर का यह महामण्डप भी आयताकार है। महामण्डप के प्रवेश-द्वार की अंतःभित्ति कल्पलता अभिकल्प द्वारा अलंकृत है। लतावल्लरियों के बीच-बीच मे विहार-रत यक्षों की विभिन्न भाव-भंगिमाओं तथा मुद्राओं में मूर्तियां उकेरी गई हैं। कहीं-कहीं मांगल्य विहगों का भी रूपांकन है। अन्तराल-अन्तराल गर्भगृह और महामण्डप के मध्य में बनाया जाने वाला वास्तुरूप था। इस प्रवेश द्वार के प्रथम पाख (शाखा) पर कल्पलता अभिकल्प का चार चित्रण है।द्वितीय शाखा पर विविध भाव-भंगिमाओं, मुद्राओं तथा चेष्टाओं में मिथुन की आकर्षक मूर्तियां हैं

गर्भगृह :- इस गर्भगृह में मूल देवता की मूर्ति प्रतिष्ठित है।यह प्रतिमा काले पत्थर की बनी विष्णु की चतुर्भुजी मूर्ति है जिसके हाथों में क्रमशः शंख,चक्र,गदा और पद्म है।भगवान राजीव लोचन के नाम से इसी मूर्ति की पूजा-अर्चना होती है।

राजेश्वर मंदिर :- राजीव लोचन मंदिर के पश्चिम में प्रकोष्ठ से बाहर तथा द्वार प्रकोष्ठ से लगभग 18 फुट हटकर पूर्वाभिमुख अवस्था में यह मंदिर स्थित है।यह मंदिर यहां से प्राप्त अन्य उदाहरणों की भांति दो फुट आठ इंच ऊंची जगती पर बना हुआ है।

दानेश्वर मंदिर :- राजेश्वर मंदिर से दक्षिण में उससे लगभग सटकर दानेश्वर मंदिर बना हुआ है। पूर्वोक्त उदाहरणों की ही भांति यह भी एक जगती पर बनाया गया है।जगती की वर्तमान ऊंचाई दो फुट व आठ इंच है। यह मंदिर राजेश्वर मंदिर की तरह पूर्वाभिमुख है। भूविन्यास अथवा गर्भसूत्रीय व्यवस्था में इस मंदिर के चार अंग हैं - नंदी मण्डप, महामण्डप, अन्तराल एवं गर्भगृह।

कुलेश्वर महादेव मंदिर :- कुलेश्वर महादेव का मंदिर महानदी, सोंढूर और पैरी नदी के संगम पर बना हुआ है। इस मंदिर का निर्माण भी एक जगती पर किया गया है। सामान्यतः अन्य मंदिरों में जहां जगती का वास्तु संस्थापन आयताकार रूप में किया गया है, वहां इस जगती को अष्ट भुजाकार रूप में प्रस्थापित किया गया है।

रामचंद्र मंदिर :- राजीवलोचन तथा पंचेश्वर महादेव के मंदिरों की ही भांति यह मंदिर भी मूलतः ईंटों का बना हुआ है। इतना ही नहीं, इससे संबंद्ध देवलिपिकाएं भी ईंटों से बनाई गई है। प्राप्त प्रमाणों के आधार पर इस मंदिर को भी रतनपुर के कलचुरी नरेशों के सामन्त जगतपालदेव द्वारा बनवाया गया था। यहां के प्रायः सभी मंदिरों की भांति देवालय भी एक आयताकार जगती पर अधिष्ठित है।

पंचेश्वर महादेव मंदिर :- यह रामचन्द्र मंदिर की भांति ईंटों का बना हुआ है।यह मंदिर नदी के तट पर बनाया गया है तथा पश्चिमाभिमुख है। वर्तमान में इस मंदिर का केवल विमान ही शेष है और वह भी अत्यधिक जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। यह पूर्वाभिमुख है।

राजिम तेलिन मंदिर :- इस मंदिर का वास्तुशिल्प पंचेश्वर तथा भूतेश्वर मंदिर के वास्तुशिल्प से समरूपता रखता है। यह मंदिर राजेश्वर तथा दानेश्वर मंदिर के पीछे स्थित है।

भूतेश्वर महादेव मंदिर :- यह मंदिर नदी के तट पर पंचेश्वर महादेव मंदिर के बाजू में अवस्थित है।यह भी ऊंची जगती पर स्थापित किया गया वास्तु रूप है।यह मंदिर भू-विन्यास में यहां के अन्य पूर्ण मंदिरों की तरह महामण्डप, अन्तराल और गर्भगृह से युक्त है।

जगन्नाथ मंदिर :- राजीवलोचन मंदिर के प्रकार के उत्तरी-पश्चिमी कोने पर बने नृसिंह मंदिर के उत्तरी बाजू में प्रकोष्ठ से बाहर यह मंदिर स्थित है। यह मंदिर भी एक जगती पर बनाया गया है।

सोमेश्वर महादेव मंदिर - यह मंदिर राजिम की वर्तमान बस्ती के ऊपर में थोड़ी दूरी पर नदी के तट से थोड़ा हटकर स्थित है। स्थापत्य की दृष्टि से यह अपेक्षाकृत अल्प महत्वपूर्ण है तथा वर्तमान रूप में बहुत बाद की कृति प्रतीत होती है।परंतु वर्तमान मंदिर के महामण्डप से लगा हुआ एक प्राचीन मंदिर का अवशेष है।

इस प्रकार राजीम वर्तमान में कुम्भ मेला के आयोजन से देश-विदेश में जाने जाना लगा है।

साभार : छ.ग. पर्यटन मण्डल, रायपुर

माँ महामाया मंदिर-रतनपुर

छत्तीसगढ़ जैसा कि नाम से ही यह राजाओं का 36 गढ़ रहा है ।राजघराने में कुलदेवी की मान्यता पुरातन है । रतनपुर की महामाया भी राजा रत्नदेव के द्वारा स्थापित है । यह की राजधानी रायपुर से महज 115 कि.मी. दूर न्यायधानी बिलासपुर स्थित है। यह जिला मुख्यालय है जो सड़क, रेल और कमोबेश वायु मार्ग से भी जुड़ा हुआ है, पर्यटन की दृष्टि से इस जिले में अनेक ऐसे स्थल हैं जिनका ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक ही नहीं पौराणिक महत्व भी है। यहां स्थपित श्री महामाया मंदिर की वजह से देश में ही नहीं विदेश में भी रतनपुर की ख्याति है।

यह बिलासपुर जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर कोरबा मार्ग पर रतनपुर है। छत्तीसगढ़ का मध्यकालीन इतिहास रतनपुर पर केन्द्रित है। तुमान के कल्चुरी नरेश रत्नदेव प्रथम ने सन् 1050 के लगभग रतनपुर को राजधानी बनाया। तब से लेकर सन् 1854 तक यह नगरी राजसत्ता का केन्द्र रही है। प्राकृतिक संपदा से भरपूर इस क्षेत्र में मंदिरों एवं सरोवरों की भरमार है, इस वजह से इस नगरी को लहुरी काशी का नाम भी दिया गया है।

मंदिर के गर्भगृह में उत्तरमुखी देवियों के दो विग्रह विराजमान हैं, जिसमें एक महासरस्वती एवं दूसरी महालक्ष्मी हैं। मंदिर के पीछे महाकाली की प्रतिमा अदृश्य रूप में हैं। मंदिर परिसर में महिषासुर मर्दिनी, काल भैरव, हनुमान लला एवं हरि विष्णु की ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित सुंदर प्रतिमाएं स्थापित हैं। जिनमें कल्चुरी कालीन कला स्पष्ट दिखाई पड़ती है। महामाया महिषासुर मर्दिनी की मुख्य प्रतिमा 3-5 फीट की है। वासंती और शारदीय नवरात्री पर्वों पर यहां मनोकामनाओं के हजारों ज्योतिकलश स्थापित होते है।इसके अलावा यहाँ कालभैरव मंदिर,खंडोबा मंदिर, महालक्ष्मी देवी मंदिर, हाथी किला और जगन्नाथ मंदिर,रामटेकरी का मंदिर, बूढ़ा महादेव का मंदिर, गिरजावन हनुमान मंदिर, कण्ठीदेवल मंदिर एवं बैराग वन बीस दुवरिया मंदिर इत्यादि ।

जूना शहर- सतखंडा महल :- रतनपुर से कोटा जाने वाले मार्ग पर जूना शहर नामक छोटा सा ग्राम है जिसे राजा राजसिंह ने राजपुर के नाम से बसाया था। यहाँ उनके द्वारा निर्मित बादल महल है जिसमें सात खंड रहे हैं अतः यह सतखंडा महल कहलाता है। यह महल भग्न हो चुका है, एक खण्ड शेष रह गया है यहाँ कोको और कंकन बावली है जिसका निर्माण कोकशाह ने करवाया था।

इसी तरह रत्नेश्वर महादेव, भुवनेश्वर महादेव, खिचरी,केदारनाथ महादेव, घुग्घुस महादेव, कबीर आश्रम, पढ़रीनाथ मंदिर, सिद्धमुनि कक्का पहाड़, पतालगंगा या गुप्तगंगा, श्रवणकुमार मंदिर, हजरत मूसाबाबा की मजार, हजरत मदारशाह बाबा की मजार जैसे अनेक ऐतिहासिक, धार्मिक और पुरातात्विक महत्व के देखने लायक स्थल हैं।

खूंटाघाट जलाशय :- यहाँ खूंटाघाट जलाशय है जिसका निर्माण अंग्रेजों के काल में सन् 1926 को हुआ। प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर यह जलाशय पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है, भाद्रमास गणेश चतुर्थी को यहाँ मेला लगता है। पहाड़ी के ऊपर सुंदर उद्यान एवं विश्राम गृह है।

माघ पूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक रतनपुर में सामाजिक महत्व का मेला लगता है वहीं वासंती एवं शारदीय नवरात्रि पर्व पर श्री महामाया मंदिर क्षेत्र में आस्था का कुंभ मेला लगता है।

केशव शुक्ला, बिलासपुर (छ-ग-)

सैलानियों का स्वर्ग - तीरथगढ़ जलप्रपात

प्रकृति की सुषमा समे भरपूर तीरथगढ़ मनमोहक झरना छत्तीसगढ़ के दर्शनीय स्थलों में अपना अलग स्थान रखता है। यहा जगदलपुर से कोंटा मार्ग में 29वें किलोमीटर पर दाहिनी ओर एक मार्ग कटता है, जहाँ से आगे बढ़नें पर बस्तर के एक और रमणिक स्थल के दर्शन होते हैं। बस्तर के सबसे खुबसूरत प्रपात समूहों का सरताज-तीरथगढ़ जलप्रपात, कांगेर नदी अपनी सहायक नदीयों या कुछ मुनगा बहार जैसे छोटे नालों के मिल जाने से अपने असितत्व में वृद्धि कर पूरे वर्ष भर सेलानियों का मनोरंजन करता है। तीरथगढ़ जलप्रपात में पतली जल धाराएँ उँचे शिलाखंडों से प्रवाहित होती है, तो लगता है मानो अनोखी चमक के साथ प्रकृति द्वारा ही बिखेर दी गई हो या सृष्टि रचयिता की तूलिका से रूपहला रंग लुढ़क कर प्रवाहमान हो गया हो। वर्षाकाल में अतिशय जलपूरित तीरथगढ़ जलप्रपात अपनी पूरी चौड़ाई में तथा अन्य कई छोटी-बड़ी जलधाराओं द्वारा परिलक्षित होता है।

तीरथगढ़ जलप्रपात के दो कि.मी. को पास से देखना जितना रोमांचक, लोमहर्षक व अनूठा आनंद प्रदान करने वाला है, उतना ही खतरनाक भी हैं इसमें अनेक छोटी-बड़ी दुर्घटनाएँ हो चुकी है। बच्चों को सदा अपने साथ एवं अपनी देख-रेख में रखकर यहाँ पर्यटन का आनंद लेना उचित है।

तीरथगढ़ जलप्रपात के दो कि.मी. पश्चिम में तीरथगढ़ नाम की बस्ती है। जलप्रपात के उपर भी एक शिवालय निर्मित है, तथा यह स्थान अब तीर्थस्थली के रूप में प्रसिद्धि पा रहा है। हर वर्ष यहाँ महाशिवरात्रि के समय त्रिदिवसीय मेला लगता है। जहाँ तीर्थयात्री अपनी मन्नतें पूरी करने आते है। कुछ लोग बच्चों का मुण्डन संस्कार, तो कुछ लोग यहाँ पिण्डदान या पितर तर्पण भी करवाते है। इसके अलावा विप्र समुदाय द्वारा अलग अलग समूहों में सत्यनारायण कथा वाचन व पूजन करना ईश्वरीय विश्वास को और पुख्ता कर मन में आस्तिकता को भर देता है तथा कुंभ पर्व का सा एहसास मन में जागृत कराता है। साथ ही तीरथगढ़ के अपने नाम को भी सार्थक करता है। तीरथगढ़ जलप्रपात का नामकरण पास बसे बस्ती के तीरथगढ़ नाम होने के कारण प्रसिद्ध हुआ माना जाता है।

कुछ किंवदंतियों के अनुसार तीर्थराज तथा चिंगराज नाम के दो भाई थे। वन सौंदर्य से मोहित होकर दोनों ने बस्तर के इस क्षेत्र में अपनी राजधानी बनवायी चिंगराज में चिंगीतराई नामक गांव बसाया तथा भव्य मंदिर का निर्माण करवाया, जो ग्यारहवीं शताब्दी का माना जाता है। यह तीरथगढ़ से 7 कि.मी. दूर स्थित है। वहीं तीरथराज ने तीरथगढ़ जलप्रपात के निचले हिस्से में अपना गढ़ बनवाया तथा उपरी हिस्से में गाँव बसाया जो तीरथगढ़ गांव के रूप में अभी भी आबाद है।

खनिज सम्पदा की दृष्टि से तोकापाल परिक्षेत्र में किम्बरलाईट की चट्टानें चिन्हित की गई है, यह किंबरलाईट बेल्ट तीरथगढ़ तक फैला हुआ हैं। किंबरलाईट की चट्टानों में हीरा पाया जाता है।

तीरथगढ़ जलप्रपात को सम्यक रूप से एक ही दृश्य में देखना हो तो इसकी रमणीयता या खूबसूरती का एहसास ही अलग है और इसके लिए सबसे निचले हिस्से तक उतर कर काफी दूर जाना पड़ता है। तथापि शिवालय निर्मित टेकरी के कारण एक हिस्सा ओट में चल देता है। वन विभग द्वारा जलप्रपात के उपरी हिस्से में बनाया जा रहा प्रेक्षण कक्ष इस खूबसूरती के लिए चांद में दाग जैसा ही होगा। जैसे आगरा के विश्व प्रसिद्ध ताजमहल के पीछे दूरदर्शन का उँचा टावर अब चित्रांकन के समय पर्यटकों को नही भाता है।

पर्यटक तीरथगढ़ जलप्रपात के सौंदर्य के साथ-साथ इसी भ्रमण में ही कांगेर धारा, कोटमसर, दण्डक, कैलाश, अरण्यक गुफाओं के दर्शन का लाभ भी ले सकते हैं। पहाड़ी एवं निर्जन क्षेत्रों में पर्यटन स्थल होने के कारण स्वयं के वाहन से यात्रा श्रेयष्कर है, साथ ही भोजन व जलपान व्यवस्था साथ लेकर चलना सुविधाजनक होगा। जगदलपुर से 35-40 कि.मी. की परिधि में होने के कारण यहाँ एक घंटे की यात्रा से पहुँचा जा सकता है।

तीरथगढ़ जलप्रपात पूर्वाभिमुखी होने के कारण प्रातः कालीन रवि रश्मि से आलोकित हो, रूपहले निर्मल रूप में कल-कल निनादित अधो-प्रवाहित जलराशि को पूर्वान्ह में निहारना तथा चित्रांकन के लिए श्रेष्ठ समय होता है। यहाँ की खूबसूरती अक्टूबर से फरवरी तक अपने शबाब पर रहती है, और पर्यटन के लिए यही सबसे अच्छा काल माना जाता है तथा वर्षा काल में पर्वतीय सरिता के जलप्रवाह को घोर गर्जन के साथ देखना भी अपने में अनोखा रोमांच भरता है। सच ही कहा गया है कि मानव को प्रकृति की गोद में ही सही आनंद मिलता है।

डॉ. सुरेश तिवारी, तोकापाल

छत्तीसगढ़ का ऐतिहासिक धार्मिक स्थल - सियादेही

रामायण कालीन घटनाओं के आधार पर सीयादेवी का ऐतिहासिक महत्व है । यह बालोद जिले के नगझर और हरठिगा की नील-नीली पहाड़ियों के मध्य एक रमणीय स्थल है- सियादेही । आजकल यह बड़भूम वनवृत्त के अंतर्गत आता है । सियादेही खालसा राज की अनुपम धरोहर है । खालसा को उत्तर छत्तीसगढ़ भी कहा जाता है । खालसा राज की राजधानी रतनपुर मानी जाती है । एक समय था, जब इस राज से साढ़े छः लाख राजस्व वसूल होता था । इसमें संशय नहीं कि तब रूपयों का मूल्य अधिक था । केवल राजस्व वसूली से राज्य की संपन्नता का बोध होता है । सचमुच तब आज का उत्तरी छत्तीसगढ़ कितना वैभवशाली रहा होगा ।

सियादेही का नामकरण - त्रेता युग की बात है । भगवान शंकर और पार्वती दण्डकारण्य से गुजर रहे थे । इधर श्रीरामचंद्र और लक्ष्मण दोनों भाई सीताजी की खोज में वन-वन भटक रहे थे । उन्हें देखकर शंकरजी ने प्रणाम किया । पार्वती जी सोचनें लगीं कि शिवजी स्वयं जगत के स्वामी हैं फिर इन्होंने कैसे सामान्य से दिखने वाले राजकुमारों को प्रणाम किया । शिवजी ने उन्हें समझाया, पर वे नहीं मानी । तब शिवजी ने कहा कि तुम्हे तनिक भी संदेह हो तो राजकुमारों की परीक्षा लेकर देख लो ।

1. तब माता पार्वती ने श्रीराम की परीक्षा लेने के उद्देश्य से सीताजी का रूप धारण कर लिया और श्रीराम के बिलकुल सामने प्रगट हो गई । परन्तु श्रीराम तो पारखी थे । उन्होंने झट से पहचान लिया कि ये जगत जननी पार्वती जी हैं । राम ने उन्हें प्रणाम किया और अपना अनंत रूप यहां प्रगट किया । तब कहीं पार्वती को विश्वास हुआ । पार्वतीजी ने सीताजी की देह धारण की थी, इसलिए उस स्थान का नाम सियादेही के रूप में प्रचलित हो गया ।

2. नामकरण की पृष्ठभूमि में एक और तथ्य है, वह यह कि जंगल के राजा सिंह की यहां देवता के रूप में पूजा की जाती रही हैं । कहते हैं कि सिंह की प्रस्तर मूर्ति यहां अपने-आप प्रगट हुई हैं ।

3. लोक धारणा यह है कि ब्रम्हा, विष्णु और महेश त्रिदेवों ने मिलकर एक दिव्य शक्ति पृथ्वी पर भेजी । यह शक्ति गुफा के भीतर रहने लगी । इस शक्ति का पता भीलों को हुआ, तो उन्होने इसे गुफा के बाहर निकाला और इसका नाम दिया - सियादेही । इसे सियादेवी, सीता देवी, या सिंहादेवी कहा जाता है ।

दर्शनीय स्थल : भारतीय संस्कृति में कोई भी मंदिर या देवालय मात्र श्रद्धा के केंद्र नहीं होते, अपितु सुदीर्घ एवं संपनन अवधारणा के प्रतीक होते हैं । तभी तो प्रतिमा रहित, आधी अधुरी मूर्तियां और भग्न खंडहर भी पूज्यनीय होते हैं । यहीं बात सियादेही के साथ लागू होती है । कुछ दर्शनीय स्थलों की यहां जानकारी दी जा रही है :-

बाघ मूर्ति : माई की पुरानी मूर्ति के ठीक सामने बाघ की मूर्ति है । यह प्रस्तर मूर्ति लोहे की सांकल से ऐसे बंधी है सांकल का बंधन आस-पास के 12 गांवों की सुख-समृद्धि का प्रतीक है । यदि बाघ मूर्ति के उपर आ जाए या थोड़ा भी हट जाए, तब गांवों में विपत्ति आने का संकेत मिलता है । ऐसी प्रक्रिया को बघधरा कहा जाता है, यानि बाघ ने पकड़ लिया, जकड़ लिया या संक्रमित कर दिया, ऐसा समझा जाता है ।

हनुमान की मूर्ति :- सियादेही मंदिर के दाहिनी ओर 10 फीट हनुमान की मूर्ति स्थापित है । ये संकटमोचन, पापमोचन एवं साहस का संचार करने वाले है । इसे भी शक्तिदाता के रूप में इस बियाबन जंगल में स्थापित किया गया है ।

लवकुश प्रतिमा एवं वाल्मीकि आश्रम : सियादेही में एक ओर राम वनवास की कथा की मान्यता है, वहीं दूसरी ओर सीता के निर्वासनकाल का दृश्य अंकित है । प्राचीन माई की मूर्ति के ठीक सामने धनुर्विद्या सीखते लवकुश की प्रतिमाएं विद्यमान हैं । मंदिर के पीछे से नीचे की ओर जाने पर वाल्मीकि आश्रम दिखाई देता है, जहाँ वाल्मीकि की प्रतिमा ध्यानस्थ मुद्रा में दिखाई देती है ।

शिवलिंग : त्रेतायुग में भगवान शिव और पार्वती कुंभज ऋषि के आश्रम से दण्डकारण्य होकर लौट रहे थे । जहां पर शिवजी ने श्रीराम को प्रणाम किया, वह स्थान शिवपठार (भोलापठार) कहलाता है । यहां शिवलिंग स्थापित है ।

जलप्रपात एवं गुफाएं :- मंदिर के पीछे जाकर नीचे उतरने पर एक सुरम्य जलप्रपात है, जहां स्वच्छ जल बारहों माह बहता रहता है । जलप्रपात के समीप छोटी-बड़ी 16 गुफाएं हैं । यहीं 20 फीट लंबी सुरंग भी है, गुफाओं में जाने के चार रास्ते हैं बागबड़ा से, जलाशय से, झरने से एवं मंदिर के पीछे से(एक द्वार छोड़कर बाकी तीनों रास्ते बंद दिखाई देते हैं ।)

डॉ. प्रकाश पतंगीवार, रायपुर

मां दंतेश्वरी मंदिर - बस्तर

सामान्यतया भारत वर्ष में बस्तर का दशहरा प्रसिद्ध माना जाता है । यही पर दक्षिण बस्तर के दंतेवाड़ा में शांखिनी और डंकिनी नदी के संगम पर स्थापित दंतेश्वरी देवी का मंदिर तत्कालीन बस्तर नरेशों की धार्मिक आस्था और उनके शिल्प कला प्रेम का उत्कृष्ठ नमूना हैं । काकतीय राजाओं का यहां प्रभुत्व स्थापित होनें के पूर्व गंगवंशी एवं नागवंशी राजाओं के साथ आदिवासी जन-जीवन में भी शक्तिपूजा प्रचलित थी । दंतेश्वरी देवी की स्थापना इसी शक्ति पूजा का ज्वलंत प्रमाण है । समय के थपेड़ों ने अब मंदिर एवं दंतेवाड़ा के वैभव को नष्ट कर दिया है । फिर भी रख-रखाव व सतत देखरेख के कारण मंदिर के अंगीभूत भवन सुरक्षित है । मंदिर की महिमा व धार्मिक आस्था यहां जन-जीवन में अब भी उतनी ही प्रबल बनी हुई है ।

यह भी मान्यता है कि वारंगल में राजा प्रतापरूद्र नामक राज्य करते थे । यशस्वी इस राजा का 1323 ईस्वी में निधन हो गया । उनका उत्तराधिकारी नहीं होने के कारण उनके अनुज अन्नमदेव ने राज्य का कारोबार संभाला, बार-बार दुश्मनों के आक्रमण से दुःखी होकर अन्नमदेव ने बस्तर की ओर कूच किया । यहां आकर उसने बारसूर के राजा, नागवंशी हरिश्चंद्र देव को पराजित किया । हरिश्चंद्र ने हार मान ली, फिर अन्नमदेव ने अपनी पहली राजधानी बारसूर बनाई । इसके साथ अपनी इष्टदेवी दंतेश्वरी की भी वहां स्थापना की । बारसूर से राज्य की शासन व्यवस्था संभालनें में अड़चनें आने लगी राजा ने यह सोचकर राजधानी दंतेवाड़ा स्थापित की । फिर बारसूर से लाकर अन्नमदेव ने दंतेश्वरी देवी को भी दंतेवाड़ा में प्रतिष्ठित किया । राजा अन्नमदेव के बस्तर आगमन के साथ ही यहां नागवंशी नरेशों का प्रभुत्व समाप्त हुआ और काकतीय राजाओं का उदय हुआ ।

मंदिर शिल्प और प्रतिमाएं : मुख्य मंदिर में 3 अंगीभूत भवन है । प्रवेश द्वार के साथ स्तंभयुक्त नाट्यमंडप, दूसरा स्तंभ सभागृह या मुखशाला, तीसरा गर्भगृह ।

नाट्यमण्डप : यहां विशालकाय स्तंभों से टिका हुआ महामण्डप हैं । प्राचीन समय में इस खण्ड में धार्मिक लीलाएं, प्रवचन, कीर्तन इत्यादि होते थे । महामण्डप के नीचे प्रस्तर खण्डों व स्तंभों से युक्त 3 मंदिर है, इसे उपमंदिर कहा जाता है । यहां भैरव, गणेश, शिव, ब्रम्हा द्वारा द्वारपाल की भव्य मूर्तियॉ विराजमान है ।

सभागृह या मुखशाला : सभागृह मध्यखंड में स्थित है, यहां राजाओं के शासनकाल में सभाएं एवं गुप्त मंत्रणायें होती थी । कई प्रस्तर स्तंभों से युक्त सभागृह जगह जगह विखंडित है परन्तु नष्ट नही हुए है । यहां देवी दर्शन के पूर्व धोती पहिनने की परम्परा बनी हुई है । धुली हुई और पवित्र धोतियां मंदिर की ओर से उपलब्ध कराई जाती है । पैंट और हाफपैंट पजामा इत्यादि पहनकर देवी दर्शन वर्जित है । दर्शन के पश्चात इस सभागृह में बैठकर कुछ क्षण विश्राम भी किया जा सकता है ।

गर्भगृह : शिखर युक्त गर्भ गृह में हवा और प्रकाश से दूर अंधकारा का साम्राज्य है । यहां देवी के अलंकार, उनके कृपाण, वस्त्र एवं डोलियां रखी हुई है । पास ही दानदाताओं के लिये एक दान-पेटी एवं रजिस्टर रखा गया है । थोड़े ही अंतराल में देवी दंतेश्वरी की कृष्ण पाषाण शडभुजी प्रतिमा स्थापित है देवी के समीप चौबीस घंटे तेल का एक दीपक प्रज्वलित रहता है । इसी पीढ़ा (शिखर या गर्भ) में देवी विभिन्न अलंकारों से सुसज्जित विराजमान है । कृष्ण पाषाण प्रतिमा पर श्वेत वस्त्र पहनाये जानें से देवी की शोभा देखते ही बनती है । नवरात्रि पर यहां ज्योति कलश रखे जाते है ।

गरूड-स्तंभ : मंदिर के 3 अंगीभूत भवन में प्रवेश के पूर्व गुरूड़ स्तंभ दिखाई देता है । यह स्तंभ राजाओं की कीर्ति का प्रमाण है । पुजारी गरूड़ देव को इष्ट मानकर यहां पूजा करतें है ।

जगदलपुर जिला (बस्तर) मुख्यालय से 80 कि.मी. दूर स्थित दंतेवाड़ा में पहले जंगली जानवरों का आतंक था । यहां अब आबादी लगभग 20 हजार हो गई हैं और जिला हो चुका हैं । यहां सभी शासकीय विभाग मौजूद हैं । दंतेवाड़ा की आबादी अत्यधिक पहुंचने के बावजूद जनजीवन में दंतेश्वरी देवी के प्रति धार्मिक आस्था ज्यों की त्यों बनी हुई है । जनता, व्यापारी, कर्मचारी एवं बाहर से आये यात्री दंतेश्वरी के दर्शन कर आत्मिक सुख प्राप्त करते हैं । आप यहाँ सड़क एवं रेल मार्ग से जा सकते है । रायपुर से सड़क मार्ग की दूरी लगभग 280 एवं रायपुर से जगदलपुर रेल मार्ग की दूरी 621 कि.मी. लगभग है ।

डॉ. शिशिर धागवार, रायपुर

छत्तीसगढ़ का कश्मीर-मैनपाट

छत्तीसगढ़ के उत्तरी भू-भाग में समुद्र सतह से 1099 मीटर ऊचाई पर स्थित एक विस्तृत पठारी भू-भाग जिसमें 226 वर्ग कि.मी. वन क्षेत्र हैं। इस संपूर्ण पठार को मैनपाट कहा जाता है। 368 वर्ग कि।मी। में विस्तारित यह पठारी भू-भाग जो अपने में कलकल कलरव करते झरने, अठखेलियां करती हुई वन क्षेत्र से बहती हुई नदियां, घने एवं बहुप्रजातीय वृक्षों, औषधीय महत्व के पौधों, दुर्लभ पौध प्रजातियां , वन्य प्राणी एवं पक्षियों के बसेरे को समाहित किया हुआ चित्ताकर्षक मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करता है।

वर्ष 1962-63 में भारत-चीन युद्ध के पश्चात् तिब्बती शरणार्थी भारत सरकार द्वारा मैनपाट पर बसाये गये हैं, जो 7 विभिन्न कैंपों में निवासरत हैं। जिनकी वर्तमान जनसंख्या लगभग 1800 है। तिब्बती अपने सांस्कृतिक वैभव एवं समरसता के लिए प्रसिद्ध हैं। सरगुजा अंचल में आदिकाल से अनेक संस्कृतियों का प्रादुर्भाव एवं उनके विकास यात्रा का वृत्तांत मिलता है, किन्तु प्राचीन बौद्ध धर्म की संस्कृति के लिए यह अंचल एकमात्र ऐसा स्थान है, जहां तिब्बती संस्कार में पले मैनपाट के निवासी को अपनी बौद्धकालीन धर्मप्रियता एवं बौद्ध संस्कृति की अस्मिता है।

बौद्ध मंदिर :- छत्तीसगढ़ में एकमात्र बौद्ध मंदिर सरगुजा जिले के मैनपाट में है। जहां बौद्ध परंपरा के अनुसार पूजा-अर्चना की जाती है। इस बौद्ध मंदिर में तिब्बतियों के विवाह भी संपन्न होते हैं। मैनपाट में तिब्बतियों के अधिकांश पर्व बौद्ध धर्म के किसी-न-किसी धार्मिक प्रसंग से जुड़े हुए हैं। मैनपाट स्थित बौद्ध मंदिर परंपरागत बौद्ध वास्तुकला के अनुसार ही निर्माण किया गया है। यहां की पूजा-अर्चना भी परंपरागत बौद्ध संस्कृति के अनुरूप की जाती है। यह स्थल छत्तीसगढ़ के आगंतुक पर्यटकों के लिए रूचिपूर्ण इसलिए प्रतीत होता है, चूंकि उन्हे सरगुजा के वन्य जीवन एवं सादगीपूर्ण आदिवासी संस्कृति के लोग एवं दूसरी ओर बौद्ध धर्म के अनुयायी तिब्बती संस्कृति, इन दोनों संस्कृतियों का मिलन स्थल मैनपाट प्राकृतिक सौंदर्य का ही नहीं, अपितु दो संस्कृति की समरसता को भी प्रदर्शित कर पर्यटकों के लिए आकर्षण पैदा करती है।

टाइगर प्वाईंट :- मैनपाट के पूर्वी हिस्से में संरक्षित वनखण्ड पी. 2350 एवं पी. 2351 वनखण्ड मइवा सरई के मध्य से महादेव मुड़ा नदी बहती है वन क्षेत्र के मध्य में 60 मीटर की ऊंचाई से गिरती हुई एक आकर्षक जल प्रपात बनाती है, पूर्व में यह स्थल टाइगर का विचरण क्षेत्र होने के कारण इसका नाम टाइगर प्वांईट पड़ा। टाइगर प्वाईंट के पास नदी अपने सुंदरतम स्वरूप में है।

मछली प्वाईंट :- घनी वादियों के बीच स्थित संरक्षित वन कक्ष क्रमांक पी. 2340 एवं पी. 2341 वन खंड-सरभंजा से गुजरती हुई स्वच्छ जलधारा का नाम मछली नदी है। प्राचीन काल से छोटी सुस्वादु मछलियों के लिए प्रसिद्ध इस नदी की निर्मल जलधारा से एक चित्ताकर्षक जल प्रपात मछली प्वाईंट का निर्माण हुआ है। इस प्रपात की ऊंचाई 48 मीटर है। यहां गिरता हुआ पानी दूधिया झागदार हो जाता है। इसके ठीक सामने पहाड़ी से एक पतली दूधिया जलधारा 80 मीटर ऊंचाई से गिरती है, जिसे मिल्की-वे कहते हैं। मछली प्वाईंट में जैव विविधता अपने प्राकृतिक स्वरूप में विद्यमान हैं।

परपटिया :- मैनपाट में पश्चिमी छोर पर स्थित विहंगम प्राकृतिक दृश्यों को अपने में समेटे परपटिया यहां संरक्षित वन कक्ष क्रमांक पी. 2296 वनखण्ड दमाली में स्थित हैं। यहां से बंदरकोट की ऊंची दुर्गम पहाड़ी, प्राकृतिक गुफा रकामाड़ा, जनजातियां आस्था का प्रतीक दुल्हन पर्वत, बनरई बांध, श्याम घुनघुट्टा के बांध के साथ ही मेघदूतम की रचना स्थली रामगढ़ पर्वत दृष्टिगोचर होता है। पर्यटन विकास के अंतर्गत यहां पर एडवेंचर जोन निर्मित किया जाना है। पैराग्लाईडिंग हेतु इस स्थान का चयन किया गया है।

मेहता प्वाईंट :- मैनपाट से 8 कि. मी. दूरी पर स्थित है, मेहता प्वाईंट। सरगुजा और रायगढ़ की सीमा निर्धारित करने वाले झरने का यह जलप्रपात पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है। इस प्वाईंट से एक सुदूर जल क्षेत्र ऐसा दिखाइ देता है, जैसे कोई समुद्र हो। यहां पर्यटकों के ठहरने के लिए वन विभाग का विश्राम गृह भी है। प्रायः यहां लोग निजी वाहनों से पहुंचते हैं।

देव प्रवाह (जलजली) :- संरक्षित वन कक्ष क्रमांक पी. 2328 एवं पी. 2329 वनखण्ड कमलेश्वरपुर में स्थित एक प्राकृतिक झील है जो आगे चलकर एक लहरदार नयनाभिराम नाले का रूप धारण करता हुआ, 80 मीटर उंचाई से गिरता हुआ एक झरना बनाता है, इसे देवप्रवाह झरना करते हैं। यहां पर घने अछूते वन हैं जो अपने आप में अलौकिक वनोषधियों एवं जैव-विविधता को समाहित किये हुए हैं।

जलप्रपात :- टाइगर प्वाईंट (11कि.मी.), मछली प्वाईंट (20 कि.मी.), पंचधारा (38 कि.मी.), मेछारौना (30 कि.मी.), देव प्रवाह (8 कि.मी.), पैंथर प्वाईंट (15 कि.मी.) एवं किदनई झरना (32 कि.मी.) इत्यादि जलप्रपात दर्शनीय हैं।

साभार : (छ.ग.) पर्यटन मंडल, रायपुर

सिंधी समाज का तीर्थ स्थल-शदाणी दरबार

राष्ट्रीय राजमार्ग-43 (रायपुर-जगदलपुर मार्ग) पर माना (रायपुर छ.ग.) में धमतरी मुख्य मार्ग पर 9 कि.मी. स्थित "पूज्यशदाणी दरबार तीर्थ" आज न केवल छत्तीसगढ़ का बल्कि पूरे भारत का एक प्रमुख धार्मिक आस्था का केन्द्र है। यह एक सुप्रसिद्ध धार्मिक पर्यटन एवं तीर्थ -स्थल के रूप में स्थापित हो चुका है। लगभग 12 एकड़ के क्षेत्रफल में चहार दिवारी से घिरा हुआ मध्य में स्थित मंदिर की भव्यता एवं सुंदरता देखते ही बनती है। इसका निर्माण अष्टम संत गोविंदराम जी महाराज ने 1990 में अपनी देख-रेख में पूर्ण कराया, जिसके मानचित्र की परिकल्पना उनकी स्वयं की थी।

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के अनुरूप इस दरबार तीर्थ में चारों ओर वैदिक कालीन ऋषि-मुनियों की मूर्तियाँ छोटे-छोटे मंदिरों में स्थापित हैं। मुख्य मंदिर के दोनों तरफ भगवान श्री कृष्ण एवं माता दुर्गा की भव्य एवं सुंदर मूर्तियाँ हैं। विशाल प्रांगण में हिंदू राष्ट्र नेपाल तथा वेद-भूमि सिंध के मानचित्र बने हुए हैं तथा द्वितीय संत तुलसीदास के आशीर्वाद स्वरूप मनोकामना रूपी "तुलसी-सरोवर" भी बना हुआ है। मुख्यमंदिर की भीतरी दिवारों पर काँच की अत्यंत सुंदर तथा मनमोहक नक्काशी की गई है।

गर्भगृह में ही भीतर तथा बाहर दाहिनी एवं बांयी ओर शदाणी दरबार के आठ पूर्व परम पूज्य संतों की संगमरमर से निर्मित जीवंत मूर्तियां स्थापित है। साथ ही पवित्र गुरू ग्रंथ साहिब भी विराजमान हैं। दाहिने कोने पर पंचम संत पूज्य माता हासी देवी की ऐतिहासिक खाट साहिब विराजमान हैं, जो समस्त कष्टों एवं पीड़ा का हरण करने के वरदान से परिपूर्ण हैं। यहां 240 वर्ष प्राचीन कलश भी स्थापित है, जो वेद मंदिर माथेला (सिंध) से निकला था।

संत शदाराम जी महाराज का जन्म 1708 ईस्वी में पंजाब के लाहौर शहर में एक लोहाणा खत्री के घर में हुआ वे अपनी बाल्यावस्था में ही ईश्वर-भक्ति में मग्न रहते थे और अपनी अलौकिक शक्ति से लोक कल्याण, परोपकार के कार्य एवं रामनाम का प्रचार करते थे। कुछ वर्ष लाहौर तथा मुल्तान में धर्म प्रचार करने के बाद संत शदाराम जी पशुपतिनाथ मंदिर, हरिद्वार, दिल्ली, कूरक्षेत्र, पानीपत, पुष्कर राज तीर्थ राजस्थान होते हुए ऐतिहासिक नगर माथेलो (सिंध) में सन् 1768 में पधारे। वे उसी शिव मंदिर में आकर रूके जहां भक्तगण अपने क्रुर शासक गुलाम शाह कल्होड़ा के जुल्मों से छुटकारा दिलाने के लिए प्रार्थना करते थे। उनके वहां धुनी रमाकर तपस्या करने, ईश्वर भक्ति के प्रचार-प्रसार करने से वहां का वातावरण सुख-शांति एवं सदाचार से भरपूर होता चला गया। हिन्दुओं में एकता और हिम्मत बढ़ती गयी, अत्याचारी शासक का तेज और बल समाप्त होता गया। प्रातः काल माथेलो के एक टीले पर घोर तपस्या करना और फिर शिव मंदिर आकर सत्संग करना संत शदाराम जी का नित्य कर्म था। उनके प्रवचन अत्यन्त प्रभावशाली होते थे, जिनसे हिन्दू मुस्लिम दोनों प्रभावित होने लगे और उनमें आपसी सद्भाव, प्रेम तथा भाई-चारा पुनः बढ़ने लगा। उनके तपोबल एवं प्रताप से कल्होड़ा शासक के अत्याचार धीरे-धीरे समाप्त हो गए और उनके शासन का भी अंत हो गया। संत शदाराम जी को भक्तजन शिव अवतारी मानते थे।

सन् 1786 में संत शदाराम जी "हयात पिताफी" नामक स्थान में पधारे और वहीं स्थायी डेरा बनाने के उद्देश्य से गांव के मध्य में ऊपरी हिस्से पर "शदाणी दरबार" (मंदिर) बनवाया और धुणी प्रज्वलीत कर धर्म-कर्म एवं लोक कल्याण के कार्यों में जुट गये। परलोक गमन के पूर्व अपने परम प्रिय शिष्य श्री तुलसीदास जी (द्वितीय संत) को आशीर्वाद दिया कि जब तक पृथ्वी कायम है, ये स्थान (हयात पिताफी) अमर तथा कायम रहेगा। जो भी इंसान किसी कष्ट या बीमारी के समय श्रद्धापूर्वक धुणी करके अपने मस्तक पर लगायेगा और जल में मिलाकर पीयेगा तो उसके कष्ट तथा बीमारियां उनसे दूर हो जायेगी।

पूज्य शदाणी दरबार तीर्थ में प्रत्येक माह के शुक्लपक्ष की चौदस को मेला लगता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु सत्संग एवं दर्शन लाभ प्राप्त कर भंडारा ग्रहण करते हैं। जुलाई माह में पंचम संत माता हासी देवी का जन्मोत्सव तथा पच्चीस अक्टूबर को अष्टम संत गोविंदराम जी का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सबसे बड़ा मेला लगता है, होली के पॉच दिन बाद संत राजाराम के वर्सी महोत्सव का, जो लगातार तीन दिनों तक चलता है, जिसमें भारत के अनेक संत-महात्मा एवं लाखों श्रद्धालुओं के साथ-साथ सिंध (पाकिस्तान) से भी हिन्दू तीर्थ यात्रियों का एक बड़ा जत्था दर्शनार्थ पहुंचता है। तीनों दिन सुबह से लेकर रात तक सत्संग, भजन-कीर्तन, प्रवचन के साथ-साथ भंडारा भी चलता रहता है,

पूज्य शदाणी दरबार तीर्थ छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के मानचित्र पर एक पवित्र आध्यात्मिक एवं मनमोहक धार्मिक पर्यटन केन्द्र के रूप में स्थापित हो चुका है, जिसकी ख्याति निरंतर दूर-दूर तक फैलती जा रही है। यहाँ का वातावरण अत्यंत शांत एवं प्रदूषण मुक्त है। चारों ओर फैली हरियाली इसकी सुन्दरता को तो बढ़ाती ही है, मन को प्रफुल्लित करती है और शांति भी प्रदान करती है। यह रमणीय स्थल अब "शदाणी-नगर" के नाम से भी जाना जाने लगा है। इसे रायपुर का गौरव-स्थल कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

डॉ. मेठाराम थदानी

पार्श्व तीर्थ - नगपुरा

'**अहिंसा परमोधर्म** के विचार धारा को मानने वाले जैन धर्म का छत्तीसगढ़ अंचल में व्यापक प्रचार प्रसार हैं भारत के सांस्कृतिक इतिहास की गौरवशाली परंपराओं व पुरातात्विक स्थलों में छत्तीसगढ़ में नगपुरा जैन धर्मावल्मिबयों का एक तीर्थ स्थल है जो श्रद्धालुओं, आस्थावानों, भक्तों एवं पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। यह शिवनाथ नदी के पावन तट पर बसा सुंदर स्थल है ।

यह दुर्ग से 14 कि.मी. , राजनांदगॉव से 32 कि.मी., सेक्टर 6 भिलाई से 19 कि.मी., पुराना भिलाई चरोदा से 24 कि.मी. एवं रायपुर से 54 कि.मी. की दूरी पर स्थित है ।

पार्श्व प्रभु की मूर्ति - यहाँ श्री पार्श्व प्रभु की प्रतिमा अत्यंत मनोहारी है। माता पद्मावती ने कलचुरी राजा गजसिंह को यह मूर्ति सौंपी थी । इस प्रतिमा को 1982 में गंडक नदी के उत्तरी तट पर बीहड़ जंगल और पहाड़ियों से घिरा ग्राम उगना के एक कुएं से निकाला गया था । 1982 में अक्टूबर माह में मजदूरों को कुआं खोदते समय प्रभु पार्श्वनाथ की भव्य मूर्ति मिली। इस पर सर्प लिपटे हुए थे। प्रतिमा दूध में डूबी हुई थी। खुदाई से प्राप्त यह प्रतिमा काली ग्रेनाइट पत्थर की है।

प्रभु पार्श्व का स्थल – प्राचीनता की दृष्टि से ग्राम नगपुरा स्थित कलचुरी कालीन शिव मंदिर इस गांव की प्राचीनता का बखान करता है। वहीं ग्राम के पूर्व भाग में नाले के आगे प्रभु श्री पार्श्वनाथ का मंदिर है। पूर्वाभिमुखी मंदिर होने के कारण आज इसकी कीर्ति सूर्य के प्रकाश के समान चारों दिशाओं में फैल रही है। यह छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा जैन तीर्थ है।

इस ग्राम के नाम के पीछे दो महत्वपूर्ण बातें है। एक तो कलचुरी शासकों में छिंदक नागवंशी राजाओं द्वारा यहां भगवान शिव का भव्य एवं कलात्मक मंदिर बनाया गया था। वे शिव व जिनेश्वर देव (जैन) के उपासक थे। इसी के अनुरूप यहां सर्पों की बहुलता थी। आज भी लोग नागदेवता की पूजा करते हैं। दूसरी बात यह कि यहां हजारों साल पहले 23 वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ ने इस क्षेत्र का भ्रमण किया था। इनकी मूल चरणपादुका नदी के तट से प्राप्त हुई है। छत्तीसगढ़ में दो नग यानी दो संख्या में पाव प्राप्त होना भी अद्भुत संयोग कहा जा सकता है। इसी कारण इस ग्राम को नगपुरा कहा जाता है।

यहाँ सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन होते रहता है। जैन समुदाय के साथ ही शोधकर्ता, इतिहास मर्मज्ञ, जैन साध्वी-तपस्वियों का आगमन होता है। नगपुरा महोत्सव की अपनी पृथक पहचान प्रभु पार्श्वनाथ मंदिर सामुदायिक सहभागिता का उत्कृष्ट केन्द्र है। जिसके तहत श्रद्धालुओं द्वारा मंदिर के जीर्णोद्धार, जिनालयों, अतिथि गृह, भोजनालय सहित अन्य निर्माण कार्य भी किए जाते हैं। इसके साथ ही यहां पेढ़ी भवन, श्री वर्षीतप धर्मशाला, जैन धर्मशाला, श्री जयंतसूरी ज्ञान भंडार, श्री चरित मंदिर, श्रीमद् रामचंद्र सूरीश्वर आराधना भवन, आरोग्य धाम, प्राकृतिक चिकित्सा, महाविद्यालय जैसे भव्य भवनों का निर्माण किया गया है।जो जन आस्था का कार्य है।

धार्मिक व अंर्तराष्ट्रीय पर्यटन केंद्र होने के साथ ही अब नगपुरा शिक्षा व चिकित्सा का केन्द्र बन गया है। वर्धमान गुरुकुल विद्यालय यहां संचालित किया जा रहा है जहां कक्षा 6 वीं से 12 वीं तक के बच्चों को आवासीय सुविधाओं सहित उत्कृष्ट व संस्कारयुक्त शिक्षा दी जा रही है। वहीं देश के प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालयों में नगपुरा का नाम अग्रणी होते जा रहा है।

रामकुमार वर्मा, भिलाई-३

छत्तीसगढ़ ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत वर्ष में गंगा मैया, झलमला का मंदिर प्रसिद्ध शक्तिपीठ के नाम से जाना जाता है। इस शक्ति पीठ में भारत वर्ष के विद्वान, धर्म, अध्यात्म पर प्रवचन कर सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का मानवीय संदेश देते हैं। वर्ष में दोनों नवरात्र में महा मेला लगता है उस समय सदैव 801 अखंड दीप शिखा से मंदिर प्रांगण आलौकित हो उठता है । छ.ग. के प्रसिद्ध साहित्यकार पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने झलमला शीर्षक से कहानी भी लिखी है जो हिंदी की प्रथम कथा मानी जाती है ।

गंगा मैया बालोद जिला मुख्यालय से महज 2 कि.मी. की दूरी पर पुण्य सलिला तांदुला के पावन तट पर ग्राम झलमला में स्थित है। यह छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 94 कि.मी. दक्षिण पश्चिम भू-भाग पर स्थित है। बालोद जिला को स्पर्श करते जिला राजनांदगांव से पूर्व की ओर 58 कि.मी. कांकेर जिला से उत्तर की ओर एवं धमतरी जिला से पश्चिम की ओर 40 कि.मी. तथा अपने मातृ जिला दुर्ग दक्षिण की ओर 54 कि.मी. दूरी पर स्थित है। गंगा मैया झलमला के समीप तांदुला नदी पर एक प्रसिद्ध बांध है, जिसे आदमा बांध के नाम से जाना जाता है। यह एक ऐतिहासिक बांध है, जिसकी सन् 1905 में एड्म स्मिथ नामक एक अंग्रेज इंजिनियर के नेतृत्व में नींव डाली गई तथा सन् 1920 में बनकर तैयार हुआ। यह एक पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है।

गंगा मैया झलमला पहुंचने के लिए चारों तरफ से सड़क मार्ग तथा दुर्ग से बालोद-दल्ली राजहरा तक रेल मार्ग है। दर्शनार्थी छत्तीसगढ़ के किसी भी कोने से गंगा मैया धाम आसानी से पहुंच सकते हैं। किसी भी प्रकार की कोई परेशानी आवागमन के साधन में नही हैं।

भारतीय लोक चित्त में भगवती गंगा के अवतरण के अनेक आख्यान आते हैं। वामन अवतार में संपूर्ण ब्रह्माण्ड को तीन पग में नाप लेने की लीला तथा ब्रह्मा जी का श्री हरि के पावन चरण का प्रक्षालन कर अपने कमण्डल में रखना, फिर भगीरथ के द्वारा अखण्ड तपस्या एवं उनके अभिशप्त पुरखों के उद्धार के लिए भगवान शिव की जटा में विराजती फिर हिम शिखर के वक्ष को चीरकर अवनि मंडल में अवतरित होना। आदि तीर्थराज प्रयाग में महिमा मंडित भगवती पतित पावनी गंगा आज भी विश्व विख्यात है। लेकिनझलमला में गंगा मैया के नाम से प्रकट माँ भगवती गंगा के अवतरण का ऐतिहासिक संदर्भ कुछ किंवदंतियों के रूप में इस तरह सन् 1977 को भगवती गंगा मैया की महिमा एवं भक्ति की उत्कर्ष का काल कहा जाता है। झलमला ग्राम के प्रमुख श्री भीखमचंद जी टावरी की सूक्ष्म दृष्टि ने भगवती गंगा को साक्षात गंगा के रूप में अपने अन्तर्चेतना में उतरते देखा। फिर ग्राम वासियों के सहयोग से तथा बालोद निवासी मधुसूदन ठाकुर के देखरेख में घांस-फूस की झोपडीनुमा मंदिर बनाया गया था जहाँ अब मंदिर बन गया है । सन् 1977 में 4 ज्योति कलश से यात्रा प्रारंभ हुई और शनैः-शनैः अब संख्या 801 की हो गई है। अब गंगा मैया भारतवर्ष के महान शक्ति पीठ के रूप में स्थापित हो चुका हैं। इस ट्रस्ट के प्रबंधक भीखमचंद जी टावरी के चिरंजीव सोहनलाल टावरी हैं, जिनके महान संकल्प, तप, त्याग, सेवा और समर्थन से यह तीर्थ का रूप ले चुका है।

यहाँ मंदिर प्रबंधन द्वारा छत्तीसगढ़ के लोककला, लोक संस्कृति, लोक साहित्य को सहेजनें के लिए लोक सांस्कृतिक मंचों को अभिनव प्रस्तुति का अवसर प्रदान किया जाता है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में गंगा मैया मंदिर ट्रस्ट अग्रणी है। मेला परिसर में ज्योतिकक्ष के चारों ओर परिसर सुव्यवस्थित एवं सुसज्जित है। हर बार गंगा मैया परिसर में भारतीय मनीषा द्वारा कुछ न कुछ नया कार्य होता है । वर्तमान में गुफा एक का निर्माण हुआ है, जिसमें भारतवर्ष के बारह ज्योर्लिंग की स्थापना की गई है जो आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। यहाँ प्रवचन श्रृंखला का पावन मंच स्वामी आत्मानंद जी को सादर समर्पित है, जो विवेकानंद भावधारा से अनुप्राणित हैं। इस प्रकार यह पावन धाम झलमला भारत वर्ष के मानचित्र पर धर्म, अध्यात्म, कला संस्कृति एवं साहित्य के लिए जाना जाता है।

जगदीश देशमुख, दरबारी नवॉगांव, बालोद

चित्रकोट जलप्रपात

बस्तर प्रकृति की अनुपम धरा है, जहाँ नैसर्गिक सौंदर्य यत्र-तत्र बिखरा पड़ा है । जब भी किसी को अल्प बजट में पर्यटन करना होता है, पर्यटक कहते है- चलो बस्तर घुम आएँ, बस्तर में कश्मीर की तरह हिमपात तो नहीं होता है, लेकिन गगनचुंबी पर्वत श्रृंखला के दामन में जब बादल के टुकड़े अठखेलियाँ करते हुए तैरते हैं, तो वह नयनाभिराम दृश्य नयनपथ से हृदय तक उतरता चला जाता है । समतल और पहाड़ी क्षेत्रों में तब बलखाती, चट्टानों से अटखेलियाँ करती नदी की जलधारा एकाएक सैकड़ों फीट गहराई मे गिरती-उतरती चली जाती है । तो जलप्रपात तथा जलकणों की फुहार अंतर्मन तक को, ठंड़क दे जाती है । भू गर्भ में अवशैल-उत्शैल तथा ड्रीपस्टोन से सज्जित छोटे-बड़े कक्ष वाली गुफाएँ, तिमिर श्रृंगार कर रहस्य और रोमांच का अनूठा संसार गढ़ते हैं । इनमें से ही एक है- चित्रकोट जलप्रपात । मिनी नियाग्रा के नाम से प्रसिद्ध चित्रकोट जलप्रपात बस्तर के जिला मुख्यालय जगदलपुर से 39 कि.मी. की दूरी पर लोहण्डीगुड़ा विकासखंड के अंतर्गत आता है । इंद्रावती नदी उड़ीसा के कालाहांडी जिला से निकलकर बस्तर में प्रवेश करती है, जो जगदलपुर की धरती को सींचती हुई चित्रकोट के पास जलप्रपात बनाती हुई दंतेवाड़ा जिला में प्रवेश करती है, तथा बारसूर में सातधार जलप्रपात बनाती हुई भोपालपट्नम भद्रकाली के पास गोदावरी नदी में मिल जाती है ।

चित्रकोट जलप्रपात की चौड़ाई लगभग 200 मीटर है तथा 90 फीट गहराई में गिरकर खूबसूरत जलप्रपात बनाती है, बरसात में नदी का उद्दाम प्रवाह, घोर गर्जना कर पूरी चौड़ाई में गिरता हुआ विशाल जलप्रपात बनाता है, किंतु गर्मी में इंद्रावती नदी का जलस्तर अत्यंत क्षीण हो जाता है, पर्यटन विभाग द्वारा अस्थाई बांध बनाकर इस जलप्रपात के अस्तित्व के अस्तित्व तथा खूबसूरती को बनाए रखने का प्रयास किया गया है । बरसात के बाद जलप्रवाह कई धाराओं में बँटकर कई जलप्रपातों का रूप धारण कर लेता है । प्रपात के निचले भाग में जलाशय की भाँति जलकुण्ड है । जब जलप्रपात पूरे वेग के साथ नीचे कुण्ड में गिरता है तथा जलकणों का धुंध-सा दूर तक तथा काफी उँचाई तक दिखाई पड़ता है । इन महीन जलकणों में जब रवि रश्मि पड़ती है, तो बनने वाला इंन्द्रधनुषी स्वरूप सैलानी के मन को बांध लेता है ।

जलप्रपात से कुछ ही दूरी पर एक विशाल शिवलिंग स्थापित है । इस शिवलिंग को व्यक्ति अपने दोनों हाथ फैलाकर नापने से भी नहीं नाप सकते, इतने विशाल शिवलिंग का पर्यटकों द्वारा दर्शन करना श्रद्धा के साथ रोमांचकारी भी है ।

चित्रकोट जलप्रपात से लगा हुआ एक विश्रामगृह बना हुआ है, जहाँ पर्यटकों के निचले भाग तक जाने हेतु पक्की सीढ़ियों का निर्माण किया गया है । छत्तीसगढ़ पर्यटन विभाग द्वारा दशहरा महोत्सव के समय पर्यटकों की सुविधा के लिए रॉयल हटमेंट्स, जलप्रपात के निचले भाग के मैदान में लगाए जाते है, जो सर्वसुविधायुक्त होते हैं । इसके अतिरिक्त पर्यटन विभाग द्वारा ही कुछ स्थाई हटमेंट्स विश्रामगृह से थोड़ी की दूर पर बनाए गए हैं ।

चित्रकोट जलप्रपात का पर्यटन समूह रूप से कुछ अन्य मनोहारी पर्यटन स्थलों के साथ किया जा सकता है, जिसमें पोटानार के साथ चित्रधारा, चित्रकोट के पास मेंदरी, घूमर, हाथीदरहा, तामड़ाघूमर या मयूरा जलप्रपात अन्य नैसर्गिक सौंदर्य से भरपूर खूबसूरत स्थल है ।

इन पर्यटन स्थलों का भ्रमण दुपहिया या चारपहिया वाहन से किया जा सकता है । यहां भोजन, जलपान आदि जिला मुख्यालय जगदलपुर से करके आना श्रेयस्कर है । यहां सितंबर से जनवरी के बीच का समय पर्यटन हेतु सबसे श्रेष्ठ समय है । इस नैसर्गिक सौंदर्य के अमूल्य धरोहर का पर्यटन वर्ष के किसी भी समय में किया जा सकता है ।

डॉ. सुरेश तिवारी, तोकापाल

महाप्रभु वल्लभाचार्य एवं चम्पारण्य

चंपारण्य, महानदी के पवित्र त्रिवेणी संगम के तट और ऋषि मुनियों की पावन तपोभूमि की छत्रछाया में स्थित है। चंपारण्य, में पहुचने के लिए सड़क मार्ग का उपयोग किया जा सकता है रायपुर राजधानी से राजिम के लिए पहुच मार्ग अत्यंत ही सरल है राजिम से 15 कि मी की दूरी पर यह चंपारण्य स्थित हैं ।

कथानुसार 800 वर्ष पूर्व घनघोर जंगल में गांव का ग्वाला गायों को लेकर जंगल की ओर चारा चराने के लिए जाता था। एक दिन वह रोज की तरह गांव की गायों को जंगल ले गया, शाम को लौटते समय गायों के झुंड से राधा गाय रंभाती हुई जंगल की ओर भागी।एक दिन जब राधा बांझेली गाय झुंड से निकल कर जंगल में भाग रही थी, तो ग्वाला भी उसके पीछे जाने लगा, धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए अचानक ग्वाले ने देखा कि एक शमी वृक्ष के नीचे गाय के थन से दूध की धारा लगातार अद्भूत लिंग के ऊपर गिर रही थी। ग्वाले ने गांव आकर यह बात सब को बताई, लेकिन किसी ने विश्वास नहीं किया। यह बात पूरे गांव में फैल गई। उत्सुकतावश ग्रामीण ग्वाला चरवाहे के बताए स्थान पर गए और वहां उन्होंने जो नजारा देखा चमत्कारी ही था। वहां राधा गाय भगवान महादेव के शिवलिंग व त्रिमूर्ति, जिस पर एक साथ महादेव, माता पार्वती एवं गणेशजी प्रतिष्ठित थे, पर अपने थनों से दूध प्रवाहित कर रही थी। बाद में ग्रामीणों द्वारा मंत्रोच्चार, पूजा आराधना की गई। उसके बाद झोपड़ीनुमा मंदिर का जीर्णोद्धार कर महादेव मंदिर स्थल की जगह पर पक्का मंदिर बनाया गया। ऐतिहासिक प्राचीन तीर्थ स्थल श्री चंपेश्वर महादेव मंदिर के नाम से विश्व प्रसिद्ध है।

महाप्रभु वल्लभाचार्य –

इस मंदिर में महादेव जी का भोग लगाने के बाद वल्लभाचार्य जी का भोग लगता है। मान्यतानुसार मंदिर परिसर के पास स्थित वन की कटाई नहीं की जाती कहा जाता है कि यहां पेड़ काटने से प्राकृतिक विपदा आ सकती है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया और अब यहां भव्य और विशाल मंदिर बन गया है।

15 वीं शताब्दी के महान दार्शनिक श्री महाप्रभु वल्लभचार्य की जन्मस्थली चंपारण्य है। दक्षिण भारत में कृष्णा नदी के तट पर स्तभाद्री के निकट स्थित अग्रहार में अगस्त्य मुनि के वंशज कुंभकर हुए। कालांतर में वे काकखंड में आकर बस गए तथा परिवार सहित तीर्थ यात्रा पर निकले तथा प्रयाग होते हुए काशी पहुंचे। काशी पर मलेच्छों के आक्रमण के कारण वे वापस अपने मूल स्थान की ओर चल पड़े। मार्ग में राजिम नगरी के निकट चंपाझर ग्राम में श्री चंपेश्वर महादेव के दर्शनार्थ यहां पधारे। यहीं उनकी पत्नी वल्लमागारू ने संवत् 1535 की वैशाख कृष्ण पक्ष एकादशी रविवार की रात्रि एक बालक को जन्म दिया। नवजात बालक के जीवन की आशा कम होने की संभावना परिलक्षित हुई, जिससे बालक को शमी पेड़ की कोटरी में छोड़कर आगे निकल पड़े। दूसरे दिन ही वापस आकर बालक की तलाश की, तो देखा कि स्वयं अग्निदेव बालक की रक्षा कर रहें हैं। इस बालक को चार नाम दिए गए - देवनाम-कृष्ण प्रसाद, मास नाम- जनार्दन, नक्षत्र नाम- श्राविष्ठ, एवं प्रसिद्ध नाम- वल्लभ यही बालक आगे चलकर श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य हुए।

बाल्यकाल में कुशाग्र बुद्धि होने के कारण वे बाल सरस्वती भी कहलाये। गुरु विष्णुचित्त से उन्होंने यजुर्वेद, तिरूमल दीक्षित से ऋग्वेद, पिता से अथर्व वेद व उपनिषदों की शिक्षा पाई। श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य ने भागवत पुराण के आधार पर शुद्ध द्वैत मतानुसार पुष्टि मार्ग का प्रवर्तन किया। श्री वल्लभाचार्य, श्री रामानंद जी, कबीर, गुरूनानक देव, श्री रामदास, संत तुकाराम, मीरा, श्री चैतन्य महाप्रभु के समकालीन रहे।

चंपारण्य में उनकी दो बैठकें है। पहली बैठक शमी वृक्ष के नीचे उनकी जन्मस्थली पर तथा दूसरी घठी पूजन के स्थान पर स्थित है। यह भी उल्लेखनीय है कि यहां श्री कृष्ण के बाल्यरूप की पूजा-अर्चना की जाती है।

वल्लभाचार्य के भक्त यहां पर स्थित महानदी को यमुना का रूप मानते हैं। श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य जी ने वैष्णव संप्रदाय की स्थापना की थी और इसी कारण यह स्थान वैष्णव सम्प्रदाय का प्रमुख तीर्थ स्थल माना जाता है। हर वर्ष वैशाख एकादशी को वल्लभचार्य जी का जन्म दिवस पर्व के रूप में मनाया जाता है, जिसमें देश-विदेश के अनेक श्रद्धालु भाग लेते हैं।

डी.एल. मनहर, रायपुर

शिवरीनारायण-छत्तीसगढ़ की टेम्पल सिटी

महानदी के तट पर स्थित प्राचीन, प्राकृतिक छटा से भरपूर और छत्तीसगढ़ की संस्कारधानी के नाम से विख्यात् यह नगर कलचुरि कालीन मूर्तिकला से सुसज्जित है। सड़क मार्ग से बिलासपुर से शिवरीनारायण की दूरी लगभग 59 कि मी है, सड़क मार्ग अत्यन्त ही सरल एवं सुगम है ।बिलासपुर से लगभग 1 से 2 घंटे में पहुचा जा सकता है ।

यहां महानदी, शिवनाथ और जोंक नदी का त्रिधारा संगम प्राकृतिक सौंदर्य का अनूठा नमूना हैं। इसीलिए इसे "प्रयाग" जैसी मान्यता है। मैकल पर्वत श्रृंखला की तलहटी में अपने अप्रतिम सौंदर्य के कारण और चतुर्भुजी विष्णु मूर्तियों की अधिकता के कारण स्कंदपुराण में इसे "श्री नारायण क्षेत्र" और"श्री पुरूषोत्तम क्षेत्र" कहा गया है। तत्कालीन साहित्य में जिस नीलमाधव को पुरी ले जाकर भगवान जगन्नाथ के रूप में स्थापित किया गया है, उसे इसी शबरीनारायण - सिंदूर गिरि क्षेत्र से पुरी ले जाने का उल्लेख 14 वीं शताब्दी के उड़िया कवि सरलादास ने किया है। इसी कारण शिवरीनारायण को छत्तीसगढ़ का जगन्नाथपुरी कहा जाता है और शिवरीनारायण दर्शन के बाद राजिम का दर्शन करना आवश्यक माना गया है क्योंकि राजिम में "साक्षी गोपाल"विराजमान हैं। कदाचित इसी कारण यहां के मेले को"छत्तीसगढ़ का कुंभ" कहा जाता है जो प्रतिवर्ष लगता है।

चारों दिशाओं में अर्थात् उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम्, पूर्व में जगन्नाथपुरी और पश्चिम में द्वारिका धाम स्थित है लेकिन मध्य में "गुप्तधाम"के रूप में शिवरीनारायण स्थित हैं। इसका वर्णन रामावतार चरित्र और याज्ञवल्क्य संहिता में मिलता है। यहां के प्राचीन मंदिरों और मूर्तियों की भव्यता और अलौकिक गाथा अपनी मूलभूत संस्कृति का शाश्वत रूप प्रकट कर रही हैं, जो प्राचीनता की दृष्टि से अद्वितीय है। 8-9 वीं शताब्दी की मूर्तियों को समेटे मंदिर एक कलात्मक नमूना है, जिसमें उस काल की कारीगरी आज भी देखी जा सकती है।

शिवरीनारायण में अन्यान्य मंदिर हैं जो विभिन्न कालों में निर्मित हुए। चुंकि यह नगर विभिन्न समाज के लोगों का सांस्कृतिक तीर्थ है अतः उन समाजों द्वारा यहां मंदिर निर्माण कराया गया है। यहां अधिकांश मंदिर भगवान विष्णु के अवतारों के हैं। कदाचित् इसी कारण से इस नगर को वैष्णो पीठ माना गया है। इसके अलावा यहां शैव और शक्ति परंपरा के प्राचीन मंदिर भी है।

इन मंदिरों में केशव नारायण मंदिर, चंद्रचूड महादेव, राम-लक्ष्मण जानकी मंदिर, दक्षिण मुखी हनुमान जी का मंदिर एवं इसके अतिरिक्त लक्ष्मीनारायण-अन्नपूर्णा मंदिर की अपनी अलग विशेषता है ।

लक्ष्मीनारायण-अन्नपूर्णा मंदिर :- माँ अन्नपूर्णा की ममतामयी मूर्ति है, जो पूरे छत्तीसगढ में अकेली है। उन्ही की कृपा से समूचा छत्तीसगढ़ "धान का कटोरा" कहलाता है। नवरात्रि में यहां ज्योति कलश प्रज्जवलित किये जाते है। जिर्णोद्धार में लक्ष्मी-नारायण और अन्नपूर्णा मंदिर एक ही अहाता के भीतर आ गया, जबकि दोनों मंदिर के दरवाजे आज भी अलग-अलग है। लक्ष्मी-नारायण मंदिर का दरवाजा पूर्वाभिमुख है जबकि अन्नपूर्णा मंदिर का दरवाजा दक्षिणाभिमुख है।

इसके अतिरिक्त अन्य मंदिरो का भी निर्माण हुआ है जो निम्नानुसार हैं:-

राधा-कृष्ण मंदिर,सिंदूरगिरि-जनकपुर, काली और हनुमान मंदिर,शिवरीनारायण मठ,जगन्नाथ एवं अन्य मंदिर :- मठ परिसर में संवत् 1927 में महन्त, अर्जुनदास की प्रेरणा से भटगांव के जमींदार श्री राजसिंह ने एक जगदीश मंदिर बनवाया जिसे उनके पुत्र चन्दन सिंह ने पुरा कराया। इस मंदिर में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के अलावा श्री राम, लक्ष्मण और जानकी जी की मनमोहक मूर्ति है।

प्रो. अश्विनी केशरवानी, चांपा

श्रीराम भक्त - शबरी मंदिर

पुरूषोत्तम तीर्थ के रूप में विख्यात शिवरीनारायण जनश्रुति के अनुसार भगवान श्रीराम के वनवास काल में दण्डकारण्य में शबरी माता से भेंट हुई थी और उनके जुठे बेर इसी स्थान में ग्रहण किये थे, इस कारण शबरी नारायण से इस स्थान का नाम शिवरीनारायण पड़ा और राम भक्त शबरी की कथा जन-जन में प्रचलित हुई।

स्थिति :- जांजगीर-चांपा जिले के अंतर्गत महानदी, शिवनाथ नदी एवं जोंक नदी के पवित्र संगम पर यह शबरी-नारायण मंदिर स्थित है। वास्तुकला की दृष्टि से 12 वीं शताब्दी के कल्चुरि कालीन इस शबरीनारायण मंदिर में चर्तुभुजी विष्णु एवं माता शबरी की प्रतिमा गर्भगृह में स्थापित है।

ऐतिहासिकता :- राजा शबर दण्डकारण्य के एक प्रभावी राजा थे। उनकी बेटी का नाम शबरी था। शबरी भगवान श्रीराम के प्रति निष्ठापूर्वक, श्रद्धा-विश्वास करती थी। राजा शबर, शबरी का विवाह कराना चाहते थे किन्तु यह शबरी को मंजूर नहीं था। वह घर से निकल कर जंगल की ओर चली गई। शबरी एक दिन पम्पा नामक सरोवर के तट पर स्थित रमणीय आश्रम पर पहुंची। यह क्षेत्र मतंग ऋषि के नाम पर मतंग वन कहलाता था। मतंग ऋषि का आश्रम दूर-दूर तक फैला हुआ था, उसकी ख्याति गुरूकुल के रूप में थी, जहां देश भर के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थें। शबरी ने मुनि के चरणों में दंडवत प्रणाम किया और उनसे शरण मांगी।

त्रिकालदर्शी मतंग ऋषि ने भविष्य को जानते हुए शबरी को अपने आश्रम में शरण दी। शबरी ज्ञान एवं भक्ति से परिपूर्ण थी। भगवान श्रीराम के वनवास काल में चित्रकूट निवास के समय मतंग ऋषि अपना शरीर त्याग कर परलोक सिधार गये। अंतिम समय में उन्होंने गुरूकुल की जिम्मेदारी सौंपते हुए शबरी को ज्ञान दिया कि तुम एक विदुषी आचार्या हो, तुम इस गुरूकुल आश्रम में श्रीराम एवं लक्ष्मण की प्रतीक्षा करना और उनका स्वागत करना और उनके दर्शन से अपने जीवन को सफल बनाना। ऐसा कहकर मतंग ऋषि ने शबरी के हृदय में राम भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित कर दी।

अपने गुरू के अंतिम आदेश को शिरोधार्य करते हुए शबरी, आश्रम में प्रतिदिन भगवान श्रीराम के आगमन की प्रतीक्षा करती रहती थी। उसे भगवान के आगमन का पूर्ण विश्वास था। उनके स्वागत के लिए फल का संग्रह करती थी। कई वर्ष प्रतीक्षा के बाद अंततः प्रतीक्षा की घड़ी समाप्त हुई और लक्ष्मण सहित भगवान श्रीराम सीता माता की खोज करते हुए शबरी के आश्रम की ओर आ गए। सीता माता की खोज में भटकते हुए साधारण मानव रूप में अपने भगवान राम को सामने पाकर आत्म-विभोर हो गई। वृद्धावस्था में अपनी बूढ़ी आंखों से उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि साक्षात प्रभु श्रीराम मेरे सामने हैं।

महान भक्त शबरी एक सिद्ध तपस्विनी थी। उसने साधारण मानव रूपी भगवान को पहचान कर दण्डवत किया और उनके चरणों में लिपट गईं। भगवान राम उनके इस प्रेम से आत्मविभोर हो गए। उन्हें दोनों हाथों से उठा लिया। शबरी ने प्रभु से कहा कि आज उसकी बरसों की तपस्या सफल हो गई। उन्होंने दोनों भाइयों को अर्घ्य, पात, आचमन आदि समर्पित किया। स्वागतोपरान्त उसने वात्सल्य भाव में फल, कंद जो उसने संग्रह किये थे, भगवान को भोग लगाने के लिए समर्पित किया। प्रभु को उस दिन भेंट करने के लिये बेर फल ही था। उसने भेट देते समय विचार किया कि कहीं ये बेर खट्टे न हों, और सहज भाव से मीठे बेर चयन करने के उद्देश्य से बेर को चख कर मीठे-मीठे बेर प्रभु को अपनें हाथों से खिलाया। प्रभु ने उसके निश्छल सहज भाव से समर्पित भेंट को ग्रहण कर आत्म विभोर हो उठे। प्रेम भक्ति का एक श्रेष्ठ उदाहरण शबरी के इस प्रसंग को माना जाता है और लोक जीवन में यह कथा जुड गयी कि शबरी ने चख-चख कर भगवान को जुठे बेर खिलाये, जिसे भगवान ने अत्यंत प्रेम पूर्वक ग्रहण किया।

छत्तीसगढ़ में शर्बर अथवा शबर एक जनजाति है। इस अंचल में कोल, भील एवं शर्बर जातियां, आदिवासियों में पायी जाती है। वे आज भी अपने को शबरी की संतान समझते हैं। नृतत्वशास्त्रियों के अनुसार भारत में आदि अनार्य निवासी कोल या मुण्ड थे ।इन्होंने भारत के दक्षिण पूर्व मलय और भारतीय द्वीप समूह से आकर उपनिवेश कायम किये थे। बस्तर क्षेत्र में शबरी नाम की एक नदी प्रवाहित होती है। इस प्रकार शबरी का छत्तीसगढ़ से संबंध होने की पुष्टि होती है।

साभार :- छत्तीसगढ़ पर्यटन मण्डल, रायपुर

नंदनवन - मिनी जू रायपुर

छत्तीसगढ़ पूरातन साल से ही प्रकृति का रैन-बसेरा रहा हैं। बस्तर तो समूचे हरियाली से ओतप्रोत हैं। यहाँ कल-कल करते झरने हो या शांत नदी का पानी सब मन को आनंदित कर देते हैं। इस नगरी में जानवरों के विचरण करने के लिए भी पर्याप्त स्थान हैं। वैसे तो छत्तीसगढ़ में अभ्यारण्यों की कमी नही हैं। बारनवापारा, सीतानदी अभ्यारण्य हो या उदंती, पर रायपुर में बने मिनी जू नंदनवन की बात ही कुछ अलग हैं। सैकड़ो जानवर एवं पशु पक्षी के सुमधुर कलरव एवं उनकी निश्चिंतता पर्यटकों को हमेशा से ही अपनी ओर खीचती आई हैं। यहाँ के प्राचीन मंदिर हो या मठ सभी अपने आप में एक अपनी ऐतिहासिकता को बयां करते हैं। छत्तीसगढ़ की स्थापना के साथ नंदनवन अस्तित्व में आया हैं। यहां पशु-पक्षियों एवं जानवरों की उछलकदमी पर्यटकों को खूब लुभाती हैं। सिंह, तेंदुआ, भालू, सांभर, तोता, काला हिरण, लेपर्ड, मगरमच्छ समेत कई जानवर हैं एवं मन को लुभाने वाले मोर एवं लव बर्ड्स भी यहां देखने को मिलते हैं। पर यहां का हरियाली युक्त वातावरण लोगों को सबसे अधिक लुभाता हैं। ठंडी हवाओं के बीच जानवरों को अपने पिंजरे में शोर मचाते एवं गुलाटी भरते देखना मन को गदगद कर देता हैं।

अनोखा है नंदनवन का इतिहास :-

नंदनवन रायपुर भिलाई मार्ग पर रायपुर शहर के बिलकुल निकट मुख्य मार्ग से पॉच किलोमीटर के अंदर बसा हुआ है नंदनवन 1977-78 में पहले रेस्क्यू सेंटर के रूप में संचालित किया जाता था। जहां आस-पास घायल होने वाले जानवरों एवं भटके वन्य प्राणियों का उपचार किया जाता था। धीरे-धीरे यहां जानवरों की संख्या बढ़ती गई। वर्ष 1979 में नंदनवन की स्थापना एक नर्सरी के उद्देश्य से की गई थी। छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के बाद इन वन्यप्राणियों की अच्छी देखरेख एवं चिड़ियाघर के निर्माण को ध्यान में रखते हुए विकास का कार्य तेजी से किया गया। लगभग 8 वर्षों के सतत् प्रयास के बाद वर्ष 2007-08 में नंदनवन को मिनी-जू की मान्यता केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं भारत सरकार से प्राप्त हुई । नंदनवन की बढ़ती उपयोगिता एवं प्रासंगिकता के साथ वैज्ञानिक कारण से इसका विस्तार अनिवार्य हुआ। केंद्रिय चिड़ियाघर के रहवास स्थान के रूप में विस्तृत दिशानिर्देश जारी किए गये हैं। शेर एवं सिंह के जोड़े के लिए 1000 वर्ग मीटर तेंदुए के जोड़े के लिए 500 वर्ग मीटर तथा हिरण के जोड़े के लिए 200 वर्ग मीटर क्षेत्रफल प्रदान किया गया। इतने ही क्षेत्र वन्यप्राणियों के आवास के लिए आवश्यक होते हैं। नंदनवन के विस्तार के लिए सीमा से लगे भूभाग का अधिग्रहण किया गया। यहां प्रारंभ में जहां 200 प्रजातियों के वन्य प्राणी विचरण करते थे वहीं अब इनकी संख्या बढ़कर 260 तरह की हो गई है।

नंदनवन लगभग 50 एकड़ में फैला हुआ है। इसमें से लगभग 8 एकड़ क्षेत्र अधिगृहित की जाने वाली भूमि शामिल है। जैसे-जैसे नंदनवन का विस्तार बढ़ रहा है, यहां वन्य प्राणियों की संख्या में भी दिनों-दिन इजाफा हो रहा है। खास अवसरों जैसे 15 अगस्त, 26 जनवरी, 1 जनवरी आदि पर पर्यटकों के भीड़ से नंदनवन हरा भरा रहता है। यहां विचरण करने वाले जानवरों के खान-पान की भी विशेष व्यवस्था की जाती हैं। शाकाहारी जानवरों के लिए जहां साग-सब्जी एवं कई प्रकार के शाकाहारी भोजन की व्यवस्था हैं । वहीं मांसाहारी जानवरों को मांस उपलब्ध कराया जाता है । सैकड़ों प्रकार एवं विभिन्न किस्मों के वनों से घिरे इस मिनी चिड़ियाघर में जानवर उन्मुक्त होकर विचरण करते हैं। नंदनवन में घुमकर जानवरों को करीब से देखने एवं उनके बारे में जानने की जिज्ञासा होती है। यहां बच्चों के मनोरंजन के लिए झुले भी लगे हैं। यहां आने वाले पर्यटकों के लिए बोटिंग की भी सुविधा मुहैया कराई जाती हैं। यहां आने के लिए बरसात व ठंड का मौसम उपयुक्त है। इस चिड़ियाघर के रख-रखाव एवं पर्यटकों को बेहतर सुविधा देने के लिए कई प्रयास किए जा रहें हैं। रविवार या कोई अन्य छुट्टी के दिन यहां पर्यटकों की अपार भीड़ उमड़ती है।

तिलकेश्वरी पठारे, रायपुर

विष्णु मंदिर - जांजगीर

जांजगीर, दक्षिण कोशल राज्य का एक महवपूर्ण नगर था। हैह्यवंशी राजा जाज्वल्यदेव प्रथम ने इस नगर को बसाया था। अभिलेखिक साक्ष्य से ज्ञात होता है कि 'जाज्वल्यपुर' नामक नगर, रतनपुर के राजा जाज्वल्यदेव प्रथम ने बसाया था। जांजगीर नाम इसी जाजल्यपुर का अपभ्रंश माना जा सकता है। जांजगीर के पश्चिम दिशा में बस स्टैंड से लगभग आधा कि.मी. की दूरी पर सड़क के किनारे एक भग्न मंदिर स्थित है, जिसे विष्णु मंदिर कहा जाता है। यह मंदिर कल्चुरी काल की मूर्तिकला का अनुपम उदाहरण है। इस मंदिर के निर्माण से संबंधित कई जनश्रुतियां प्रचलित हैं। उनके अनुसार, एक निश्चित समयावधि (कुछ लोग इसे छैमासी रात कहते हैं।) में शिवरीनारायण और जांजगीर के विष्णु मंदिर के निर्माण में प्रतियोगिता थी, क्योंकि भगवान नारायण ने यह घोषणा की थी कि जो मंदिर पहले पूरा होगा, वे उसी में प्रविष्ठ होंगे, शिवरीनारायण का मंदिर पहले पूरा हो गया और भगवान उसमें प्रविष्ट हो गये। इस तरह जांजगीर के इस मंदिर को हमेशा के लिए अधूरा छोड़ दिया गया। मंदिर के संबंध में इसी तरह की कुछ और कथाएं जनमानस में व्याप्त हैं। इस विष्णु मंदिर में विशाल जगती है। इसके पूर्वी भाग के कुछ हिस्से का पुनर्निर्माण किया गया है। वर्तमान में मंदिर शिखर शीर्षविहीन है। इस मंदिर की भू-योजना नारायणपुर के मंदिर से बहुत-कुछ मिलती हैं, जिसका निर्माण कल्चुरी नरेश पृथ्वीदेव द्वितीय या उनके पुत्र जाज्वल्यदेव प्रथम के काल में माना जा सकता है। प्रवेश द्वार के सम्मुख महामंडप की छत को आश्रय देने वाले दोनों पार्श्ववर्ती अर्द्ध स्तंभों की उपस्थिति और सामने विस्तृत जगती का समतल होना, इस बात का सबूत हे कि पूर्व अवस्था में यह मंदिर अर्द्धमंडप, महामंडप सहित पॉच अंगों से युक्त पूर्ण वास्तु का उदाहरण रहा होगा, इस मंदिर में कलचुरी युगीन मूर्तिकला की सारी विशेषताएं विद्यमान हैं।

भूतल से शिखर तक का हिस्सा विभिन्न देवी-देवताओं, अप्सराओं, गंधर्व-दिग्पाल और साक आदि की मूर्तियों के साथ-साथ व्याल जैसे अलंकरणों को देखा जा सकता है। मंदिर के जगती के दोनों फलक में अलग-अलग दृश्य अंकित हैं। एक फलक पर रावण के भिक्षाटन और सीता हरण के दृश्य अंकित हैं। मंदिर के जंघा भाग में उत्कीर्ण विष्णु के अवतार, शैव, सूर्य, देवियॉ, अष्ट दिकपाल और विशिष्ट मुद्राओं में योगी, अप्सराएं और व्याल प्रतिमाएं हैं। विष्णु के अवतारों में नृसिंह का अंकन मंदिर की दक्षिणी भित्ति पर है, दक्षिणी भित्ति पर ही वराह अवतार की प्रतिमा है। मंदिर के प्रवेश द्वार के दोनों पार्श्वों पर दो-दो जोड़े में अर्द्ध स्तंभ हैं, जो दो मुख्य खंडों में बटे हैं। मंदिर के पृष्ठ भाग में सूर्य देव विराजमान हैं। नीचे की दीवरों में अन्य मूर्तियां खंडित हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बिजली गिरने से मंदिर ध्वस्त हुआ होगा। बिखरी मूर्तियों को मंदिर के मरम्मत करते समय दीवारों पर स्थापित कर दिया गया है। इसके बावजूद यह मंदिर सूना है, और एक दीप के लिए तरस रहा है। स्थानीय कवि विद्याभूषण मिश्र ने अपनी कविता में इसका बखूबी वर्णन किया है :-

मैं सूना मंदिर हूँ मुझमें, एक दीप तो धर दो ।
अंधकार पीते आया हूँ, क्षण भर पीड़ा हर लो।।

शैव परिवार की प्रतिमाएं :- यह मंदिर विष्णु मंदिर के रूप में विख्यात है, लेकिन मंदिर के विभिन्न भागों में शिव की मूर्तियां दिखाई पड़ती है। प्रवेश द्वार में ब्रह्मा और महेश के रूप में शिवजी विराजमान है। मंदिर के पश्चिमी भाग में जंघा पर चतुर्भुज शिव स्थित हैं। इस मूर्ति में ऊपर का दाहिना हाथ खंडित है। निचला दाहिना और निचला बाया हाथ सम्मिलित होकर विशिष्ट मुद्रा में हैं, ऊपरी बांया हाथ ऊपर उठ कर खप्पर धारण किए हुए हैं। बांये पैर के पास उनका वाहन नंदी बैठा हुआ है। विमान के उत्तरी भाग में जंघा पर कार्तिकेय की दो मूर्तियां स्थित हैं। यहां गणों की मूर्तियां भी दिखाई देती हैं। मंदिर के बाह्य भाग पर गणेशजी की चतुर्भुजी नृत्य रूप में एक मूर्ति स्थित है।

वैष्णव परिवार की प्रतिमाएं :- इस संप्रदाय के प्रमुख आराध्य देव विष्णु हैं। श्रीराम, कृष्ण आदि रूपों में भगवान विष्णु का अवतार आगम ग्रंथों में विभव कहलाता है। इस मंदिर के प्रवेश द्वार पर त्रिमूर्ति के रूप में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की मूर्ति है। ठीक इसके ऊपर गरूड़ासीन भगवान विष्णु की मूर्ति स्थापित है। कृष्ण कथा से संबंधित एक रोचक अंकन मंदिर के पश्चिम में है, जिसमें वासुदेव कृष्ण को दोनों हाथों से सिर के ऊपर उठाए गतिमान दिखाए गए हैं। श्रीराम के कथा दृश्य भी यहां मिलते हैं।

प्रो. अश्विनी केशरवानी, चांपा (छ.ग.)

चर्रे - मर्रे जलप्रपात

नव सृजित बस्तर जिला के सावय बनावालियों में आच्छादित व घाटियों से परिपूरित बस्तर की हरी-भरी वादियों में अनेक सौंदर्य स्थल ऐसे हैं जहाँ पर्यटक एक बार खड़े होकर मनोहारी सौंदर्य को निहारनें लग जायें, फिर तो मन वहीं रमकर रह जाता है। स्मृति में इन सौंदर्य स्थलों की अमिट छाप अंकित हो जाती है। भूगर्भीय गुफाएँ, पुरातात्विक धरोहर, धार्मिक आस्था स्थल,ऐतिहासिक इमारतें, सांस्कृतिक कलाएँ, भित्तिचित्र, शिलालेख, वादियाँ, घाटियाँ, पहाड़ियाँ, बाँस के झुरमुट, साल-सागौन के घने वन और इनके बीच प्रवाहित कल-कल करते झरने, नदियाँ, जलप्रपात एवं वन्य प्राणी किसी पर्यटक के आनंद को द्विगुणित करने में समर्थ हैं। ऐसे ही एक खूबसूरत झरनामयी, संगीतमय प्रवाह से सुसज्जित जलप्रपात का नाम है - "चर्रे-मर्रे जलप्रपात"।

चर्रे-मर्रे जलप्रपात उत्तर बस्तर का श्रृंगार है। यह कांकेर जिले में स्थित पर्वत श्रृंखला में खूबसूरत हरी-भरी घाटियों के बीच पिंजाड़िन घाटी गहरी घुमाव व कटाव लिए पहाड़ियों में है। यहाँ तक की यात्रा और रोमांच का अनुभव कराने वाली है। यहाँ की हरी-भरी वादियों व घाटियों में पत्थर की चट्टानें भी रंग-बिरंगी हैं। घोड़े की विशाल नाल या अंग्रेजी के "यू" आकार की गहरी घाटी प्रक्षेत्र में गहरे काले तथा हरे रंग की ग्रेनाइट पत्थर की विशाल चट्टानें हैं, जिनमें प्रवाहित शुभ्र जलधारा लिए अंतागढ़ नदी, जिसे स्थानीय लोग 'कुतरी नदी' के नाम से भी संबोधित करते हैं। क्रमशः गहराई की ओर कल-कल, छल-छल करती हुई, चट्टानों से टकराकर भी प्रकृति का मधुर संगीत सुनाती हुई प्रवाहित होती है। सैंकड़ों फीट की घाटी में सोपानबद्ध ढंग से अलग-अलग स्थलों से गिरते हुए जलप्रवाह के कारण यह अत्यधिक चौड़ाई में विस्तारित है तथा लगभग 35 फीट ऊँचाई से सीधा नीचे गिरता हुआ सुंदर मनमोहक चर्रे-मर्रे जलप्रपात बनाता है, जिसे देखकर पर्यटक मंत्र-मुग्ध रह जाते हैं। जलप्रपात के ऊपरी भाग में पिघली हुई रजतमयी जलधाराएँ पर्यटक का पद प्रक्षालन कर अंतर्मन को आनंदित कर देती है। सैकड़ों फीट की घाटी में जब पर्यटक उतरता है, अंग्रेजी के "यू" आकार की घाटी में रंग-बिरंगे ज्यादातर हरी एवं काली रंग की चट्टानें, दूर-दूर तक फैली हुई हरीतिमा, स्वच्छ शीतल बयार, झरने के कल-कल का सुनाद, जलप्रपात की दहाड़ एवं बीच-बीच में निकटस्थ वन क्षेत्र के वन्य प्राणियों की आवाजें, सब कुछ एक नया एहसास दिला जाती हैं।

घाटियों का घूमता हुआ उतार तथा बीच में एकाएक बनी गहराई के कारण स्थानीय लोग इसे "कड़ाही-खोदरा" भी कहते हैं। अन्य जलप्रपातों की तुलनामें चर्रे-मर्रे की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अन्य जलप्रपातों का सौंदर्य निहारने के लिए नीचे की गहराई तक उतरना पड़ता है, जबकी चर्रे-मर्रे के सौंदर्य का नजारा करने के लिए ऊपर से झरनामयी प्रवाह व सीधे गिरते हुए जलप्रपात को एक साथ निहारा जा सकता है। जलप्रपात जहाँ नीचे जलधारा गिरती है, एक कुण्ड सा बन जाता है, जहाँ से जलधारा पुनः पहाड़ी चट्टानों से टकराती हुई घाटियों एवं घने वादियों में खो जाती है। चट्टानों के बीच ऊपरी भाग में भी कई जगह जल एकत्रित होकर छोटे-छोटे जलकुण्ड की भाँति दिखाई पड़ते हैं। प्रपात के ठीक ऊपर किनारे हनुमान जी की दो प्रतिमाएँ स्थापित हैं जिनमें से एक प्रतिमा साबूत है, जो मकानुमा मंदिर के भीतर अवस्थित है। जबकि दूसरी प्रतिमा खंडित अवस्था में मंदिर के बाहरी भाग में स्थित है। यहाँ आने वाले पर्यटक हनुमानजी के मंदिर में श्रद्धनत होकर पूजा-अर्चना कर फल-फूल आदि का चढ़ावा चढ़ाते हैं।चर्रे-मर्रे जलप्रपात की एक सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसके सौंदर्य को निहारने के लिए खास प्रेक्षा स्थल निर्धारित नहीं है। पहाड़ी भाग होने के कारण वर्षाकाल में जलप्रवाह का रौद्र स्वरूप भी देखने को मिलता है। जलप्रपात बनाने वाली यह छोटी नदी नारायणपुर से अंतागढ़- आमाबेड़ा मार्ग पर पिजाड़िन घाटी में खूबसूरत जलप्रपात का निर्माण करती है। यह नदी जलप्रपात के आगे कोतरी नदी में मिल जाती है, जो इंद्रावती व गोदावरी नदी की सहायक नदी है ।

चर्रे-मर्रे जलप्रपात का पर्यटन सामान्यतः किसी भी मौसम में किया जा सकता है, किन्तु कल-कल, छल-छल रजतमयी जलप्रवाह का सौंदर्य, वर्षाकाल के तुरंत बाद आने पर अत्यंत मनोहारी स्वरूप में दिखाई पड़ता है। इसलिये अक्टूबर से दिसंबर तक का समय चर्रे-मर्रे जलप्रपात के पर्यटन के लिये सबसे आदर्श समय होता है।

पर्यटन तैयारी के रूप में यहाँ स्वयं के चाय नाश्ता व भोजन के साथ आना श्रेष्ठ है। तहसील मुख्यालय होने के कारण पर्यटकों के लिये उपयोगी सामग्री यहाँ सुलभ हो सकती है। पर्यटक, अंतागढ़ से किसी जानकार व्यक्ति को साथ लेकर इस पर्यटन स्थल तक आसानी से पहुँच सकते हैं। वाहन को घाटी के ऊपरी भाग में छोड़कर इस मनोरम स्थल का भरपूर सौंदर्यपान करते पर्यटक जब सैंकड़ो फीट की गहरी घाटी में उतरता चला जाता है, शिथिलता का अनुभव करता है, लेकिन पग-पग पर यहाँ का विस्तारित सौंदर्य मन और नयन को शीतलता प्रदान करते हैं; तब पर्यटक यहाँ के पुनरागमन के निमंत्रण को अपनी मौन-स्वीकृति दिये बिना नहीं रह पाता।

डॉ. सुरेश तिवारी, तोकापाल

चन्द्रहासिनी देवी - चंद्रपुर

रायगढ़ से 28 कि.मी. दूर राष्ट्रीय राजमार्ग क्र.153 पर चन्द्रपुर नगर स्थित है। चन्द्रपुर का इतिहास काफी पुराना है, किन्तु उसकी प्रमाणिकता उपलब्ध नहीं है। छत्तीसगढ़ में प्रसिद्ध शक्तिपीठों के अलावा कुछ प्रमुख ऐसे शक्तिपीठ भी हैं, जिनकी मान्यता छत्तीसगढ़ में बहुत अधिक है। उन शक्तिपीठों में चन्द्रपुर की चन्द्रहासिनी देवी प्रमुख हैं। प्राचीनकाल से ही महानदी और केलो नदी के संगम पर स्थित प्राचीन शक्तिपीठ देवी चन्द्रहासिनी एक जागृत देवी के रूप में प्रसिद्ध है।

पूर्व में यह उड़ीसा राज्य का हिस्सा था, पश्चात् मराठाओं ने भी यहाँ लम्बे समय तक शासन किया। इस दौरान अपनी सैन्य क्षमता की बढोत्तरी के लिये मराठाओं ने सैन्य टुकड़ियों के लिये निरीक्षण टावर बनवाये, जो चन्द्रहासिनी मदिर के चारों ओर स्थित हैं। इसके बाद यह पुनः उडीसा राज्य के अधिपत्य में रहा और फिर अविभाजित म०प्र० का हिस्सा रहा । वर्तमान में यह छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चाँपा जिले का हिस्सा है। यहाँ प्राचीन किले के अवशेष आज भी विद्यमान हैं। मुख्य सड़क से बायीं ओर एक कि.मी. दूर महानदी के तट के धरातल से लगभग 100 फीट ऊपर प्रसिद्ध चन्द्रहासिनी देवी शक्तिपीठ स्थापित है। देवी भागवत के 12वें स्कंध के 6वां अध्याय में - जगत जननी गायत्री की अनंत विभूतियों में माँ चन्द्रहासिनी भी एक है :-

चूलिका चित्रवस्त्रान्ता, चन्द्रमाः कर्मकुण्डला ।
चन्द्रहासा चारूदात्री, चकोरी चन्द्रहासिनी ।।

एक किंवदंती यह भी है कि 300 वर्ष पूर्व चांदा महाराष्ट्र के बैरागढ़ ग्राम के मदन सिंह ने अपना राज्य स्थापित करने के लिये रायगढ़ मार्ग में महानदी के इस पार ग्राम बुनगा में अपनी राजधानी की पहली शुरूवात की थी। यह तो सर्वविदित ही है कि गोंड़ नरेश देवी-देवता के प्रति आस्थावान थे। देवी-देवताओं की शक्ति ही उनकी शक्ति होती थी। जब मदन सिंह चन्द्रपुर महाराष्ट्र से निकले , उनके पीछे-पीछे उनकी आराध्य देवी भी आ रही थी। देवी ने राजा को स्वप्न में पहले ही बता दिया था कि तुम अन्यत्र अपने राज्य की स्थापना करो , मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चलूंगी। चलते-चलते तुम मुझे मुड़कर मत देखना। जहां तुम मुझे मुड़कर देखोगे मैं वहीं स्थापित हो जाऊंगी । सारंगढ़ से रायगढ़ मार्ग में महानदी के इस पार राजा ने मुड़कर देवी को देखा। देवी वहीं रूक गई। देवी चन्द्रपुर चाँदा से आयी थी, इसीलिये उस स्थान का नाम चन्द्रपुर और देवी का नाम चन्द्रहासिनी पड़ा। महाराष्ट्र के चन्द्रपुर में आज भी मदन सिंह के पूर्वजों का किला है।

चन्द्रहासिनी देवी के प्रवेश द्वार में शिशु मंदिर है। सीढ़ी के दोनों पार्श्वों में दाढ़ी वाले दो भद्र साधु पुरूष आगंतुकों के अभिवादन की मुद्रा में खड़े हैं। चन्द्रहासिनी देवी के प्रत्येक दर्शनार्थी उनके आतिथ्य एवं आमंत्रण को स्वीकार कर आगे कदम बढ़ाते हैं। देवी के चरण प्रान्त तक पहुंचने के लिये छोटी-छोटी सीढ़ियाँ बनी हैं। सीढ़ियों के दोनों ओर पौराणिक कथानकों से संबंधित प्रासंगिक दृश्यों को मनमोहक ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्रमुख रूप से कैलाश पर्वत का विहंगम दृश्य, समुद्र मंथन, भागीरथी गंगा अवतरण, गजेन्द्र मोक्ष, शेषनारायण, अर्धनारीश्वर शिव, चण्ड-मुण्ड युद्ध, गोपिका वस्त्र हरण, दक्ष प्रजापति का यज्ञ, बजरंगबली, विशेश्वरी देवी, समलाई देवी, पार्वती देवी, भगवान शिव इत्यादि के अत्यंत आकर्षक दृश्य बनाये गये हैं। शिखर भाग में चन्द्रहासिनी देवी का मंदिर है। चन्द्रहासिनी देवी मंदिर के दायीं ओर नवग्रह का खुला मंदिर है। इसके मध्य भाग में भुवन भास्कर सूर्यदेव सात श्वेत अश्वों के एक चक्ररथ पर विराजमान हैं। चक्र, शक्ति, पाश और अंकुश उनके अस्त्र हैं। अन्य सभी ग्रहों को सूर्य की परिक्रमा करते दर्शाया गया हैं। नवग्रह मंदिर के ऊपर चारों धाम मंदिर बना है। जहाँ सेतुबंध रामेश्वर, द्वारिकापुरी, जगन्नाथपुरी, तथा बद्रीनाथ धाम के श्री विग्रहों की सजीव झांकी प्रदर्शित की गई है। इसके ऊपर बांयी ओर ज्योति कक्ष निर्मित है। चंद्रहासिनी मंदिर के सामने, प्रांगण में 40 फीट ऊंचे हनुमान जी सीतामाता के सामने अपना विराट रूप दिखा रहें हैं। चन्द्रहासिनी देवी मंदिर से एक कि.मी. दूर महानदी एवं मांड नदी के संगम पर एक टीले के ऊपर नाथदाई का मंदिर है। नाथ देवी की अलौकिक महिमा सर्वविदित है।

शीला चन्द्रा, भिलाई
अजीत पाण्डेय, रायगढ़

कलापरम्परा की विरासत - खैरागढ़

रायपुर से 140 कि.मी. एवं डोंगरगढ़ से 40 कि.मी. की दूरी पर स्थित खैरागढ़, इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय के लिए प्रसिद्ध है। स्वाधीनता से पूर्व खैरागढ़ एक रियासत था। खैरागढ़ की राजकुमारी इंदिरा की याद में स्थापित खैरागढ़ का इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, एशिया महाद्वीप का इकलौता ऐसा विश्वविद्यालय है जो कि कला एवं संगीत को समर्पित है। ।

राजकुमारी इंदिरा को संगीत से बहुत लगाव था। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके माता-पिता, राजा वीरेन्द्र बहादुर सिंह एवं रानी पद्मावती देवी जो कि खैरागढ़ रियासत के भूतपूर्व नरेश भी थे, की इच्छा थी कि राजकुमारी इंदिरा का संगीत से लगाव की याद अक्षुण्ण बनी रहे।

इस प्रयोजन हेतु राजा वीरेन्द्र बहादुर सिंह ने अपना राजमहल कमल विलास महल, संगीत महाविद्यालय की स्थापना हेतु दान स्वरूप दिया। हरे-भरे धान व कपास के खेतों के बीच में स्थित खैरागढ़ सांस्कृतिक गतिविधियों का मुख्य केन्द्र हैं। इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय 1944 में संगीत महाविद्यालय के रूप में स्थापित हुआ। इसे विश्वविद्यालय का दर्जा 1956 में मिला। स्वतंत्रता के पश्चात् स्थापित प्रारंभिक विश्वविद्यालयों में से एक, इसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण भारत में है। वर्तमान में भारत के 46 महाविद्यालय इस विश्वविद्यालय से जुड़े हुए हैं। देश-विदेश से यहां छात्र-छात्राएं पढ़ने आते हैं।

इस विश्वविद्यालय में मुख्यतः विभिन्न पारंपरिक संगीत एवं नृत्यकला की शिक्षा एवं शोधकार्य की सुविधा प्रदान की जाती है। विभिन्न विषयों जैसे कि संगीत, शास्त्रीय संगीत (जिसमें हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत का समावेश है), भारतीय शास्त्रीय वाद्य संगीत (सितार, वायलिन, सरोद, तबला, कर्नाटक वायलिन, वीणा इत्यादि), गीत, भजन, गज़ल, भारतीय शास्त्रीय नृत्यकला (कत्थक, भरतनाट्यम, कथकली, कुचीपुड़ी इत्यादि), भारतीय लोक नृत्यकलाएं एवं लोक संगीत कलाएं, पारंपरिक मूर्तिकला, चित्रकला, मॉडर्न मूर्तिकला एवं चित्रकला के इतिहास पर शिक्षा एवं शोधकार्य प्रदान करने की सुविधा है।

इसके अलावा विशेष विषयों में तबला पखावज एवं मृदंगम की शिक्षा तथा हिन्दुस्तानी ख्याल, ध्रुपद, ठुमरी एवं दादरा की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। विभिन्न पारंपरिक एवं लोक वाद्य-यंत्रों से सज्जित गैलरी इस विश्वविद्यालय के मुख्य आकर्षण हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय पारंपरिक एवं आधुनिक चित्रकला, लोक चित्रकला एवं आदिवासी चित्रकला से सज्जित गैलरी तथा पुरातात्विक संग्रह भी इस विश्वविद्यालय के नगीनों में एक हैं। यहाँ संगीत, नाट्य एवं नृत्य आदि से जुड़ी 43000 पुस्तकों वाला एक पुस्तकालय (लायब्रेरी) भी है, जिसमें इन कलाओं के ऑडियो-विडियो क्लिपों का संग्रह है।

इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय ने पंडित रविशंकर (सितार), रुक्मणी देवी अरुंणदले (नृत्य), अलाउद्दीन खान (सितार), लता मंगेशकर (गायन), एम.एस. सुब्बलक्ष्मी (कर्नाटक संगीत), पपुल जयकर इत्यादि को डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया है। इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, कला एवं संगीत को समर्पित एक ऐसा स्थान है जो हर एक आने वाले के मन में एक अनूठी छाप छोड़ने में सफल रहता है।

खैरागढ़ के नज़दीक 30 कि.मी. पर एक मंदिर है जो कि भोरमदेव के समान है। यहां पर कलचुरी कालीन 13वीं शताब्दी का शिव मंदिर है। इस मंदिर का नाम देउर मंदिर है। तीरथ नागर शैली में बना यह भव्य मंदिर कलचुरी कालीन वास्तु विन्यास और मूर्ति निर्माण की समृद्ध परंपरा का जीता जागता उदाहरण है। गंडई से कुछ दूरी पर घटियारी गाँव में शिव मंदिर के भग्नावशेष है। इस मंदिर में मंडप, अंतराल और गर्भगृह निर्मित है। यह पंचायतन शैली का है। मंदिर से प्राप्त नटराज की अष्टभुजी मूर्ति अत्यंत आकर्षक है। इसके अतिरिक्त अंधकासुर वध मूर्ति एवं चतुर्भुजी शिव प्रतिमा भी आकर्षक है। घटियारी के समीप कटंगी गाँव में 12 वीं शताब्दी का शिव मंदिर है जहां एक भव्य शिव प्रतिमा मिली है।

साभार : (छ.ग.) पर्यटन मंडल, रायपुर

मां चण्डी देवी मंदिर बागबाहरा - श्रद्धा और भक्ति का प्रमुख स्थल

छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले में श्रद्धा और भक्ति का प्रमुख केन्द्र माँ चण्डी देवी का मंदिर बागबाहरा तहसील मुख्यालय से करीब 5 कि.मी. दूर स्थित ग्राम घुंचापाली से लगी लगभग आधा दर्जन पहाड़ियों की श्रृंखला चंडी डोंगरी के नाम से काफी प्रसिद्धि अर्जित कर चुकी है।

श्रद्धा और भक्ति का प्रमुख केन्द्र बन चुकी इस चण्डी डोंगरी में माँ चण्डी देवी विराजमान है ।रौद्ररूपिणी माँ चण्डी की साढ़े तेइस फीट ऊंची दक्षिणाभिमुखी प्राकृतिक प्रस्तर प्रतिमा का अपना विशेष शास्त्रीय महत्व हा।ऐसी प्रतिमा कदाचित ही कहीं और देखने को मिले। तंत्र साधना की प्रमुख स्थली माना जाने वाला यह स्थल अब एक पीठ के रूप में भी ख्याति अर्जित कर चुका है ।माँ चण्डी की महिमा और प्रभाव से जनमानस काफी प्रभावित है और इस क्षेत्र में लोग प्रत्येक कार्य माँ चण्डी के भक्तिपूर्वक स्मरण से ही शुरू करते हैं। एक बहुश्रुत चर्चा है कि माँ चण्डी के इस मंदिर की पूर्व दिशा में स्थित पहाड़ ठाड डोंगर (खड़ा पहाड़) से मध्य रात्रि में एक प्रकाश पुंज निकलता है और माँ के चरणों में विलिन हो जाता है । अनेको लोग इस अलौकिक दृश्य को साक्षात देखने का दावा करते हैं और इसे सिद्ध बाबा के शक्तिपुंज की संज्ञा देतें हैं। यहाँ कई गुफाएं है जहां वर्षों पहले वन्य प्राणियों का बसेरा हुआ करता था। इनमें से चण्डी जलाशय से लगा भाग भलवा माडा के नाम से जाना जाता है ।

पहाड़ी के नीचे बघवा माड़ा और मंदिर वाली पहाड़ी के मार्ग पर 5 फीट गहरा और लगभग उतना ही चौड़ा एक कुआं हा।ऊंचे पथरीले भाग में स्थित इस कुंए की विशेषता यह है कि बारहों महीने इसमें पानी भरा रहता है और कभी कम नहीं होता। कहते है कि वह सेतुनुमा (गढ़ा) स्थल है जो दर्शनार्थियों के साथ ही वन्य प्राणियों के लिए भी पेयजल प्राप्ति का साधन आज भी स्थिति ऐसी ही है ।आज तो इसी कुएं के जल से माता के मंदिर में विभिन्न निर्माण कार्य कराए जा रहें हैं। अपनी इसी विशिष्टता के कारण यह कुआं "गागर में सागर" की उपमा अर्जित कर चुका है।

गोंड़ बहुल क्षेत्र और ओड़ीशा(उड़ीसा) से सटे होने के कारण कमोबेश उन्ही परंपराओं के अनुसार यहां माँ की पूजा की जाती है । पहले वर्ष में दो बार दशहरा और चैत्र पूर्णिमा को यहां धूमधाम से पूजा की जाती थी। इस दौरान बैगा द्वारा देवी को प्रसन्न करने के लिए बकरे की बलि देकर उसका रक्त कटोरे में भरकर रख दिया जाता था और वही जंगल में बकरे को पकाकर उसे प्रसाद रूप में ग्रहण किया जाता था। इस प्रसाद को घर नहीं लाया जाता था। तब महिलाओं के लिए यह प्रसाद लेना और मंदिर में जाना वर्जित था।

इस पहाडी से सटे एक कि.मी. दूर पर ग्राम जुनवानी में नागिन डोंगरी हा।यहां लगभग 60 फीट लंबा एक ऐसा स्थान है मानों वहां कोइ सर्प पड़ा हो और जिसे किसी ने धारदार हथियार से टुकडे-टुकडे कर दिया हो। जुनवानी के ग्रामीण श्रावण के महीने में इसकी (ग्राम रसिका) के रूप में पूजा करते हैं। यहां पड़े अनेक निशान ऐसा आभास देते हैं कि कोई सर्प अभी-अभी ही वहां से गुजरा हा।यहां कुछ ऐसे बिंदु हैं जहां पत्थरों के टुकड़े मारने से वहां मधुर ध्वनि निकलती हा।ऐसा प्रतीत होता है, मानो इस डोंगरी के गर्भ में कुछ छिपा है।

माँ चंडी के मंदिर चढ़ते समय दायीं ओर पहाड़ी के ढलान पर कोई १७ फीट लंबा अंडाकार विशालकाय पत्थर दर्शनार्थियों के आकर्षण का एक केन्द्र होता हा।वर्षों से उसी स्थान पर उसी स्थिति में अवस्थित यह पत्थर प्रकृति और माँ चंडी के चमत्कार के रूप में श्रद्धा का केन्द्र बन गया हा।इसी डोंगरी में एक स्थान ऐसा भी है जहां छोटा कंकड मारने पर आवाज गूंजती है ।दर्शनार्थी इस बिंदु पर कंकड़ मारकर यह आवाज सुनते हैं ।

माँ के मंदिर के एकदम समीप में 'गस्तिवृक्ष' के नीचे दो विशालकाय नगाड़ारूपी पत्थर अगल-बगल रखे हुए हैं। इसी के पास है एक तुलसी पौधा, जहां नवरात्रि पर्व पर नाग देवता के दर्शन होने की बात श्रद्धालु भक्त बताते हैं। यहां की बघवा माड़ा गुफा पहाड़ी पर स्थित अनेक गुफाएं दर्शकों के मनोरंजन का केन्द्र हैं। मंदिर जाते समय राम भक्त हनुमानजी का एक मंदिर है, जो पहले गुफा में विराजमान थे। इसके ठीक सामने भैरव बाबा की मुक्ताकाशी प्रतिमा एक वृक्ष के नीचे स्थित थी, अब मंदिर बनाकर इन दोनों देव प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा कर दी गई है ।माँ के मंदिर के ठीक पीछे एक गुफा में माँ काली विराज रहीं है।

अनिल पुरोहित, बागबाहरा

कोटमसर गुफा - बस्तर की गुफाओं में प्रकृति की देवनगरी

छत्तीसगढ़ वनावलियों से आच्छादित बस्तर जिले की कोटमसर गुफा का अनोखा पाताल लोक आज भी साधारण जन तथा पर्यटकों के लिए अनजाना है सन् 1958 में प्रोफेसर शंकर तिवारी द्वारा खोजे जाने के बाद भी ये गुफाएं अहिल्या के समान किसी राम की प्रतीक्षा कर रहीं हैं। ये उस उद्धारकर्ता की बाट जोह रहीं हैं, जो इन्हें संवार कर राष्ट्र के नाम समर्पित कर दे।

यह तो नहीं कहा जा सकता कि अपने देश में भूमिगत गुफाओं पर काम नहीं हुआ है। काम हुआ है, लेकिन अभी तक उस काम के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है।जब कोई कंदराशास्त्री इन कंदराओं को खोज निकालता है, तो प्रायः सभी विषयों के विद्वानों के अध्ययन के लिए रहस्यों के जैसे नये-नये आयाम खुल जाते हैं। कुटुम्बसर की गुफाएं अगम्य और नाना रहस्यों से परिपूर्ण मानी जाती थीं, किन्तु 1958 में प्रोफेसर शंकर तिवारी द्वारा खोजे जाने के पश्चात् उतनी रहस्यमयी और अगम्य नहीं रह गईं, जितनी पहले थी।

इस दंडकारण्य के घने जंगलों में बस्तर जिले के मुख्यालय जगदलपुर से लगभग 40 कि।मी। दक्षिण में कोटमसर नामक वनग्राम से लगभग ३ कि।मी। पूर्व की ओर गुपनसर पहाड़ी पर यह गुफा स्थित है।पहाड़ी में एक नाले के तल पर 7 मीटर गहरी और एक मीटर चौड़ी गहरी खाई है, खाई में ही नाले का पानी लुप्त हो जाता है, वस्तुतः खाई ही गुफा का प्रवेश द्वार है।

गुफा के अंदर जाने के लिए लकड़ी की तीन सीढ़ियों के सहारे जमीनी सतह से 17 मीटर नीचे उतरना पड़ता ह।यहां सूर्य का प्रकाश नहीं जा पाता। घटाटोप अंधकार में नाक पर रखी उंगली भी नहीं दिखाई देती। यहाँ का अंधकार प्रकाश को खाने वाला है, किन्तु प्रकृति ने अगणित वर्षों के निरंतर जलस्त्राव से इतने सुंदर नमूने के झाड़-फानूस, रंग-बिरंगे परदे तथा विचित्र दृश्यों का निर्माण कर उसमें ऐसी चमक भर दी है, जो प्रकाश पाकर शतगुणित चमकदार बनकर मनुष्य को चमत्कृत कर देते हैं। इस गुफा की सुंदरता अवर्णनीय ह।इसे सिर्फ 'अलौकिक स्वर्णिम सौंदर्य का शांत कक्ष' कहा जा सकता है।पेट्रोमेक्स और टॉर्च की मद्धिम रोशनी में जब आँखें अभ्यस्त हो जाती हैं, तब गुफा की लंबाई-चौड़ाई और ऊंचाई की भव्यता का एहसास होता है।

यहाँ से लगभग 45 मीटर आगे बढ़ने के बाद छत से लेकर जमीन तक पूरी गुफा झालरों से ढंकी दिखती है।ये झालरें छत से चूना मिश्रित पानी के बूंद-बूंद टपकने के कारण चूने के अवशेष के जमाव द्वारा बनीं ह।तकनीकी भाषा में ऊपर से नीचे की ओर लटकनें वाली झूमर को 'स्टेलेक्टाइट' ओर जमीन पर गोल, बेलनाकार, मोटे, पतले जमाव को'स्टेलेग्माइट' कहते हैं। हजार-हजार वर्षों में प्रकृति इन्हें रच पाती हैं। इनकी चमक-दमक को देख कर मनमुग्ध हो जाता है। इन सफेद हाथियों का निर्माण भी स्टेलेक्टाइट और स्टेलेग्माइट ने ही मिल कर किया है।इनका परिचय प्राप्त करने के बाद बोगदा जैसे रास्ते से आगे जाने पर यह रास्ता तीन भागों में बायें हाथ पर विभाजित हो जाता है।तीनों विभक्त रास्ते आगे चलकर फिर से मिल जातें हैं। ऐसा लगता है जैसे त्रिशूल के आकार में पूरी गुफाएं फैली हैं।

इसी प्रकार आगे बढ़ने पर गुफा दो भागों में बंट जाती ह।दायीं तरफ का रास्ता नाले के पानी का बहाव क्षेत्र है।सामने वाला भाग अत्यंत वृहद आकार का है, जो लगभग 21 मीटर ऊंचा, 10 से 12 मीटर चौड़ा और 60 मीटर लंबा है।इस कक्ष के अंत में एक स्टेलेक्टाइट का आकार तो ब्रह्मा जैसा है, जिसकी पूजा अब दर्शनार्थी करने लगे हैं। इसी के अगल-बगल में कई छोटे-बड़े शिवलिंग भी है।कभी-कभी लगता है जैसे यहां देवमंडल बैठकर मंत्रणा कर रहें है। देवमंडली अपनी ही रचना पर मंत्रमुग्ध है और दर्शनार्थी यहीं से वापस लौट जाते हैं।

इस गुफा में स्वयंभू आकार से विपरीत दिशा में जाने पर मार्ग एक अनोखे संगीत कक्ष में पहुंचा देता है।संगीत कक्ष में प्रवेश के लिए साढ़े चार मीटर की रस्सी की सीढ़ी के सहारे नीचे उतरना पड़ता है।यहाँ 5 मीटर लंबा, डेढ़ मीटर चौड़ा और सवा मीटर गहरा एक जल कुंड है।यह कुंड गुपनसर पहाड़ी पर स्थित शिवलिंग के ठीक नीचे है, इसीलिए इसे 'शंकर कुंड' केनाम से जाना जाता है।

इस जल कुंड की छटा भी अनोखी है।लगता है जैसे जल में सितारे जड़े हो। प्रोफेसर तिवारी ने इसका नाम अप्सरा विहार रखा है।जल कुंड का जल इतना निर्मल, इतना स्वच्छ है कि लगता है सचमुच ही अप्सराएं यहाँ विहार करने आती होंगी। जल कुंड के अंत में पानी निकलने का स्थान इतना संकीर्ण हो जाता है कि वहाँ से हाथ निकलना भी मुश्किल है।इस गुफा की खोज के क्रम में प्रोफसर तिवारी को 'दरार में से काफी आड़ा तिरछा होकर आगे बढ़ना पड़ा था।' करीब 10 मीटर रास्ता तय करने के बाद एक और बड़ी गुफा मिलती है, जो 20 मीटर ऊंची और 4 मीटर चौड़ी है।आडे-तिरछे लटक रहे स्टेलेक्टाइट की छटा दर्शनीय है।उथली जगह पर बायीं ओर के कक्ष में एक छोटा कुंड है, जहां खोजकर्ता को गुफा के मोती मिले थे।

प्रकृति के हाथों से गढ़ी गई कोटमसर गुफा में जमीन सतह से 60 मीटर नीचे उतरने के बाद करीब 1 कि.मी. की अंधेरी दुनिया के अपूर्व रूप की यात्रा करने के पश्चात् एक छोटा सा संकीर्ण रास्ता कांगेर नदी के तट पर पहुंचा देता है। यहां प्रकाश है, लेकिन गुफा के अंधेरे संसार को प्रकाश कब मिलेगा ?

पुष्पा तिवारी

दूधाधारी मठ - वैभवशाली संस्कृति का उत्कृष्ट नमूना

छत्तीसगढ़ की पावन धरा सदियों से ही अनेक प्राचीन मंदिरों की गढ़ मानी जाती है। यहां के कण-कण में वैभवकालीन संस्कृति की छटा एवं मंदिरों के अवशेष देखने को मिलते हैं। अंग्रेजों के दौर में राजा-महाराजाओं द्वारा बनवाई गई इमारत आज भी अपनी ऐतिहासिकता का परिचय दे रही हैं। छत्तीसगढ़ ने अपने गर्भ में ढेरों नायाब बेशकीमती मोती एवं ऐतिहासिक धरोहरों को संजोया है, जिनमें से एक है मठपारा स्थित दूधाधारी मठ।

वैसे तो प्राचीन नगरी का दर्जा प्राप्त रायपुर में ऐतिहासिक मंदिरों की कमी नहीं है, पर दूधाधारी मठ मंदिर की भव्यता इस बात पर निर्भर करती है कि ये रायपुर का सर्वाधिक प्राचीन मंदिरों में से एक है। मंदिर के इतिहास के बारे में जायजा लेने पर पता चला कि यह बेहद पुराना है।

जानकार इस मंदिर के विषय में कहते है कि मठ से पूर्व यहां बीहड़ जंगल हुआ करता था बाद में 1610 ई। विक्रम संवत् में इस मठ की प्राण प्रतिष्ठा नागपुर के प्रतापी राजा रघु भोंसले ने की। विशिष्ट स्थापत्य कला का जीवंत प्रमाण रहे इस मठ के सर्वप्रथम महंत स्वामी बलभद्र दूधाधारी महाराज थे, जिन्होनें जीवन पर्यन्त दूध का सेवन किया। कहते हैं पहले उनका नाम पयोहारी रहा बाद में जीवन भर दूध पीने के कारण उनका नाम दूधाधारी पड़ा। उनके नाम से ही मठ का नाम दूधाधारी रखा गया। बाद में मुहल्ले का नाम मठपारा पड़ गया। मंदिर के दो मुख्य द्वार हैं। प्रारंभ में वीरान इस स्थान पर एक बार राजेश्री दूधाधारी महाराज जंगली जानवरों के बीच लेटे हुए थे, तभी नागपुर के एक प्रतापी राजा रघु भोंसले उनके पास आकर उनसे प्रार्थना करने लगे कि महाराज मेरी कोई संतान नही है। उन्ही की कृपा से रघु भोंसले को संतान की प्राप्ति हुई। उसके बाद ही उन्होंने विक्रम संवत् 1610 ई। में बालाजी मंदिर का निर्माण करवाया। मंदिर प्रांगण में सर्वाधिक प्राचीन प्रतिमा स्वयंभू संकटमोचन हनुमान जी का मंदिर है, जिसका निर्माण भी राजा रघु भोंसले ने करवाया था। यह वही स्थान है जहां महाराज ने राजा रघु को आशीर्वाद दिया था।

मंदिर के भूतपूर्व पुजारी नागाराम हृदयराम कहते हैं कि मंदिर प्रांगण में मठ के पूर्व महंत दूधधारी महाराज की समाधि स्थल विद्यमान हैं। इस संबंध में कहा जाता है कि जब वह नीम का दातुन घिसकर उसे फैंक देते थे, वही दातुन अब नीम पेड़ के रूप में सभी को अपनी ठंडी हवा एवं छाया देते हुए उनकी छत्रछाया में रहने का आभास कराता है। मंदिर में एक स्थान है जहां महाराज धुनी रमाते थे, वह स्थल ज्यों का त्यों विद्यमान है। महाराज की समाधि लगभग 450 वर्ष पुरानी है। मठ के निर्माण के 200 वर्षों बाद अग्रवाल परिवार ने मंदिर में रामदरबार रामपंचायतन शैली में निर्मित करवाया। 1610 ई।के दौर में इस मठ में ऑल इंडिया से 200 से 300 की तादाद में संत महात्मा रहा करते थे, उनकी संख्या को देखकर ही इसे छोटी अयोध्या कहा जाता था। अब यह संख्या घटकर 50 रह गई हैं।

इस मंदिर के बीच में पूर्व महंतों की चरणपादुकांएं विद्यमान हैं। इनमें राजे श्री स्वामी बलभद्र दास जी महाराज की समाधि स्थल के साथ ही यहां उनकी चरणपादुकाएं भी विद्यमान हैं। इसके साथ ही एक कतार में राजेश्री दूधाधारी महाराज, राजेश्री महंत सीताराम महाराज, राजेश्री स्वामी रामचरण जी महाराज, श्री अर्जुन दास महाराज, श्री सरजू दास महाराज, श्री लक्ष्मणदास महाराज, श्री बजरंग दास महाराज एवं स्वामी वैष्णवदास जी महाराज आदि महंतों की चरणपादुकाएं मंदिर प्रांगण में विद्यमान हैं। अब तक इस मठ में दस महंतों ने अपनी सेवाएं दी हैं।

मंदिर में 300 साल पुराना प्रांगण आज भी लोगों के आकर्षण का केंद्र बना है। 70 से 100 फुट गहरे इस कुंए का पानी का इस्तेमाल सभी लोग करते हैं। मंदिर बनने के बाद इसे राजा ने बनवाया था। यह कुंआ आज भी उस दौर की गाथा की याद दिलाता है। कुंए के साथ ही महाराजबंद तालाब भी उतना ही पुराना है।

यहां स्थित रामदरबार केन्द्र मंदिर के भीतर रामेश्वरम् से लाया गया तैरता पत्थर भी विद्यमान है। कहते हैं कि लंका चढ़ाई के दौरान राम भक्त हनुमान ने सभी पत्थरों पर श्री राम लिखकर उसे प्रभु को दिया जिसे प्रभु ने पानी में डाला तो वह तैर गए और इस सेतुबंध का निर्माण हुआ। इस पत्थर को मठ के वर्तमान महंत राजेश्री रामसुंदर दास ने रामेश्वरम् से 10–12 साल से लाकर रखा है। जो पानी में तैरता है और यह लोगों के आकर्षण का केंद्र है।

प्रारंभ से ही 7 एकड़ क्षेत्र में फैले इस मठ द्वारा कई स्कूल कॉलेज भी संचालित है। इस मठ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहां रामनवमीं, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं दशहरा आदि पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। इन उत्सवों के दौरान प्रभु का अलौकिक एवं भव्य स्वर्ण श्रृंगार होता है, इस अलौकिक छटा को देखने एवं इस उत्सव में शामिल होने दूर-दराज क्षेत्रों से हजारो की संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

दीनदयाल साहू, भिलाई नगर

घटारानी माता मंदिर - नैसर्गिक सौंदर्य और आस्था का स्थल

छत्तीसगढ़ के कोने-कोने में अनेक धार्मिक स्थल के साथ रमणीय स्थल है, जहां भक्त इन स्थलों पर पहुंचकर अपनी आस्था तो प्रकट करते ही है साथ ही प्रकृति के नजारों का भरपूर आनंद लेते हैं। ऐसे ही स्थलों में छत्तीसगढ़ का सुप्रसिद्ध मनोरम स्थल, पहाड़ियों से घिरे झर-झर बहते स्वच्छ जल का झरने, घने बीहड़ जंगल तथा पशु-पक्षियों के कलरव के बीच यह रमणीय स्थल "घटारानी" स्थित हैं।

माता घटारानी का स्थान ग्राम धसकुल राजधानी रायपुर से दक्षिण-पूर्व दिशा से मात्र 75 कि.मी. और कुंभ नगरी राजिम से इसी दिशा में 25 कि.मी. की दूरी पर जिला मुख्यालय गरियाबंद से उत्तर-पश्चिम दिशा में 25 कि।मी। पर एवं फिंगेश्वर जनपद मुख्यालय से दक्षिण दिशा में 15 कि.मी. दूरी पर ग्राम फुलझर के जंगल में स्थित है।

माता घटारानी के साथ शेरनी माता ऊपर की ओर कल्प वृक्ष में, काली माता ज्योति कक्ष में, दुर्गा माता झरने के पास नीचे गुफा में, ठाकुर देव घोड़ा वाला सीढ़ी के बाजू में महाकाल भगवान शिव घंटेश्वर मंदिर एवं हनुमानजी विराजमान हैं।

माता घटारानी धसकुल के अलावा इस क्षेत्र में अनेक धार्मिक और प्राकृतिक मनोहारी स्थल हैं। धसकुल स्थान से महज़ 1 कि.मी. की दूरी पर नीचे नाले के किनारे पहाड़ी के नीचे विशाल शिवलिंगनुमा पत्थर हैं। पर्यटक इस स्थान को देखकर भी आनंदित होते हैं, जिसके नीचे बहुत बड़ी और गहरी गुफा है। इनके समीप ही राजिम-छुरा मुख्य मार्ग के स्वागत द्वार पर माताजी पुत्र दण्डपात्र भी विराजित हैं। यह स्थल भी दर्शनीय है। इस सौंदर्यमयी स्थल से 7:8 कि.मी. की दूरी पर माताजी की दो बहनें माँ जतमई एवं माँ झरझरा डोंगरी गाँव मुरमुरा के जंगल में विराजित हैं।

देवी स्थलों में क्वाँर और चैत्र नवरात्रि पर हजारों भक्तों द्वारा ज्योति कलश प्रज्जवलित किया जाता है। नवरात्रि के समय अनेक धार्मिक कार्यक्रमों में जसगीत, जगराता, रामायण, पंडवानी और रामधुनी के अलावा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है।

माता घटारानी अपने भक्तों पर सदा कृपा करती हैं। माता की कृपा और कष्ट निवारण से संबंधित अनेक घटनाएं और किंवदंतियों के अलावा अद्भुत चमत्कार प्रचलित हैं। यही कारण है कि श्रद्धा और भक्ति से अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए श्रद्धालु दूर-दूर से यहां आते हैं।

गौकरण मानिकपुरी, फुलझर, गरियाबंद

माँ जतमाई - मंदिर

माता के चमत्कार से हर कोई परिचित है। माँ अपने भक्तों को हर पल दर्शन देती है। माता के अनेकों रूप हैं। कहीं दुर्गा, कहीं खल्लारी, कहीं महामाया, कहीं बम्लेश्वरी तो कहीं दंतेश्वरी, कहीं समलेश्वरी तो कहीं पहाड़ों वाली के रूप में माँ दुर्गम पहाड़ों के बीच में अवतरित होती है। ऐसा ही एक नाम माँ जतमई का है, जो कि प्राचीन काल से ग्राम गायडबरी में विराजमान है । पिछले कुछ वर्षों से हम देख रहें है इसकी ख्याति दूर-दूर तक फैलती जा रही है। यह सब भक्तों की आस्था का ही परिणाम है। यहां आने वाले प्रत्येक दर्शनार्थियों के मन की मुरादें पूरी हो रही है। अब यह स्थल एक दर्शनीय देव स्थल का रूप ले चुका है। नवरात्रि पर्व पर यहां श्रद्धालुजनों द्वारा मनोकामना ज्योतिकलश प्रज्जवलित किये जाते हैं।।

छत्तीसगढ़ का प्रयागराज राजिम से महज 37 कि.मी. की दूरी पर 3 मार्गों - फिंगेश्वर, पथर्रा व कोपरा - पांडुका आदि मार्गों के बीच में जतमई माई का मंदिर शनैः-शनैः दर्शनार्थियों के आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है। प्रकृति की अनुपम नजारें इस देव स्थल की सुंदरता को चार चांद लगाते व मनमोहक बनाते हैं। प्रकृति के अनमोल खजाने को अपने आंचल में समेटे यह स्थल पर्यटकों को अपनी ओर बरबस ही खींच लेता है।

राजधानी से 84 कि.मी. दूर श्री जतमई माता का भव्य मंदिर स्थित है जहाँ वाहनों से आसानी से पहुंचा जा सकता है। बड़े बुजुर्गों के अनुसार यहां की कई किंवदंतियाँ जुड़ी हुई है। बरगद का रूप धरकर आई माँ जतमई की मान्यता है कि जो भक्त सच्चे मन से मन्नत मांगता है, माँ उसे पूर्ण रूप से स्वीकार कर उसकी मुरादें पुरी करती हैं। मंदिर के पुजारी श्री मनासिंग ध्रुव बताते है कि इसका असली नाम जलमई है, क्योंकि यहां से 12 महीने पानी का श्रोत निकलता रहता है। इसके उद्गम स्थल के बारे में अब तक कोई ठोस जानकरी नहीं मिली है। पुजारी जी के अनुसार पत्थरों के बीच एक ऐसा स्थान है जहां पैरों के दो बड़े-बड़े निशान दिखते है, जहां से हमेशा जलधारा बहती रहती है। यहीं जलमई अब धीरे-धीरे जतमई के नाम से प्रसिद्ध हो गई है।

बरसात के समय यहां जो जलप्रपात देखने को मिलता है उससे पूरा मन प्रफुल्लित हो उठता है। साल में करीब 8–9 माह तक जलप्रपात बहते रहता है। माँ जतमई की पूजा प्रतिदिन होती है। इसी के पास तौरेंगा जलाशय भी है जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। माँ जतमई का यह मंदिर श्रद्धालुओं के लिए आस्था व विश्वास का केन्द्र बनता जा रहा है।

जतमई माँ के मंदिर के कुछ ही दूरी पर पहाड़ के दूसरे छोर में माँ घटारानी का मंदिर स्थित है। माँ घटारानी मंदिर का अपना एक अलग ही इतिहास है। कई किंवदंतियों को अपने आप में समेटे माता का यह मंदिर आज जिस जगह पर है वहां पहले घनघोर जंगल हुआ करता था। आज भी इस देव स्थल के आसपास प्राकृतिक सौन्दर्य भरा पड़ा है।

मंदिर से नीचे उतरने की सिढ़ी के पास वासित वृक्ष हैं लोग इसे कल्पवृक्ष मानते है और मनौती मांगकर नारियल को वस्त्र के साथ बांध देते हैं। नीचे से आगे बढ़ने पर छोटी बड़ी चट्टानों को पार करते हुए दुर्गम रास्ते से 150 गज की दूरी पर सिंह गुफा है। गुफा में जगल के राजा सिंह के रुकने का आभास होता है। ट्रस्टी से पता चला कि पहले गुफा में सिंह रहता था किन्तु अब कभी कभार ही यहाँ आता है।

यहां करीब 30 फीट ऊपर से नीचे गिरता झरना देवी मां के चरण धोकर नीचे गिरता है। पर्यटक इस झरने में स्नान कर तरोताजा हो जाते हैं। एक बूंद भी शरीर पर गिरने से ताजगी महसूस करते है। यह दृश्य जलप्रपात की अनुभूति कराता है। ग्रीष्म काल में झरना सूख जाता है। अन्य ऋतुओं में इसका आनंद लिया जा सकता है।

जतमई देवी स्थल से 2 कि.मी. दूर पहुंच मार्ग से लगा तौरेंगा जलाशय का अद्भूत नजारा देखने को मिलता है। यहां जंगल की अधिकता है। दूर तक जल ही जल तथा पेड़ पौधों से पहाड़ियाँ दिखती है उसके बाद तो आसमान ही नजर आता है। बांध के किनारे कुछ मछुवारे रहते हैं, जिनके पास अपनी नौकाएं है। नौकाओं द्वारा बांध की सैर की जाती है। वहां से हरे-भरे पेड़ों, चिड़ियों की चहचहाहट के साथ प्राकृतिक नजारों को नजदीक से निहारना एक सुखद अनुभव है। इस स्थल पर एक दिन पिकनिक का आयोजन आनंद पूर्वक किया जा सकता है।

वर्तमान में इस स्थल पर जनसहयोग से भव्य मंदिर का निर्माण किया जा रहा है। उड़ीसा प्रांत के कारीगर उत्कृष्ट कला नक्काशी देने में जुटे हुए है। अन्य देव में गद्दीवाली माँ, पहाड़ीवाली माँ, बरदेव बाबा, महादेव का शिवलिंग, नंदी महाराज, महाकाली, बाबा नागेश्वर नाथ, नृसिंह देव प्रमुख है। माँ घटारानी का यह मंदिर काफी दर्शनीय सुरम्य स्थल है। घटरानी का यह मंदिर भव्य एवं आकर्षक है।

यहां पहाड़ों से गिरता हुआ झरना सावन महीने में अत्यधिक आकर्षक लगता है। इससे भक्तजनों को ऐसा महसूस होता है कि ममतामयी माँ आवाज देकर हमें आशीर्वाद प्रदान कर रहीं है और माँ के जयकारे से सारा वन गुंजायमान हो उठा है। सड़क मार्ग से ही दोनों देव स्थल माँ जतमई व माँ घटारानी जुड़े हुए हैं और प्रतिदिन यहां पर दर्शनार्थ माता के भक्तों का तांता लगा रहता है। वर्ष में दो बार यहा पर नवरात्रि पर्व के दौरान विशाल मेला लगता है। जिसमें पहुंचकर श्रद्धालु भक्त जन अपनी आस्था विश्वास व श्रद्धा माँ को समर्पित करते हैं।

तुकाराम कंसारी 'संघर्ष' नवापारा, राजिम

उदन्ती - सीतानदी अभ्यारण्य

उदन्ती अभ्यारण वर्ष 1984 में 237.28 कि.मी. के क्षेत्रफल में स्थापित किया गया है। यह अभ्यारण उडीसा से लगे रायपुर-देवभोग मार्ग पर 820 पूर्वी अक्षांश एवं 820. 15 उत्तरी देशांतर पर स्थित है। समुद्र सतह से इसकी ऊंचाई 320 मीटर है। अभ्यारण का तापमान न्यूनतम 70 सेल्स एवं अधिकतम 400 सेल्स रहता है। फरवरी माह में उदंती नदी का बहाव रूक जाता है। बहाव रूकने से नदी तल में जल के सुंदर एवं शांत ताल निर्मित हो जाते हैं। यहां कुछ झरने भी हैं, जिनमें प्रसिद्ध देवधारा एवं गोदिन जलप्रपात शामिल हैं। उदंती में पक्षियों की 120 से भी ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें कई प्रवासी पक्षी शामिल हैं। इनमें से कुछ हैं मुर्गे, फेजेन्ट, बुलबुल, ड्रोंगो, कठफोड़वा आदि। उदंती में चीतल, सांभर, नीलगाय, जंगली सुअर एवं सियार यहां आमतौर पर आसानी से देखे जा सकते हैं। तेंदुआ, भालू, जंगली कुत्ते, जंगली बिल्ली, स्याही, लोमड़ी, धारीदार लकड़बग्घा, गौर, चौसिंगा एवं हिरण भी पाए जाते हैं। बाघ हालांकि काफी संख्या में है, लेकिन स्वभाव से शर्मीले होने की वजह से कम ही दिखाई देते हैं। उदंती ऐसा विरल बीहड़ स्थल है, जहां सबसे बड़े स्तनपायी प्राणियों में से एक जंगली भैंसा व गौर एक साथ देखे जा सकते हैं। इस अभ्यारण के निर्माण का विशिष्ट कारण विलुप्त प्रजातियों का मौजूद होना है । जैसे :- जंगली भैंसा (बिबालुस बुबालिस) जो कि सिर्फ आसाम एवं छत्तीसगढ़ प्रदेश में ही पाए जाते हैं।

भ्रमण का महीना :- 1 नवंबर से 30 जून

आवास व्यवस्था :- वन विश्राम गृह-तौरेंगा-चार कमरे, वन विश्राम गृह-मैनपुर-दो कमरे, वन विश्राम गृह- करलाझर- दो कमरे, वन विश्राम गृह-

कोयबा(इंदागांव) :- दो कमरे, वन विश्राम गृह- जुगाइ -दो कमरे, लोक निर्माण विभाग का विश्राम गृह- मैनपुर -दो कमरे।

आरक्षण :- वनमण्डलाधिकारी, उदंती, गरियाबंद अधीक्षक, उदन्ती, मैनपुर

आवागमन :- पर्यटक अपने लिये जीप, कार रायपुर, गरियाबंद एवं मैनपुर से किराये पर ले सकते हैं।

दर्शनीय स्थल :- गोड़ेना जलप्रपात :- यह जलप्रपात करलाझर ग्राम से 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ पहुंचने के लिए घनें वन एवं नदी के किनारे लगभग 800 मीटर पैदल चलना पड़ता है। रंगबिरंगी चट्टानों के सामान्य ढाल से लगभग 250 मीटर बहते हुए पानी को बच्चे, फिसल पट्टी के रूप में भी उपयोग करते है। यह स्थल एकांत में है एवं बहुत ही मनोरम है, जहां झरने की कलकल की ध्वनि, पहाड़ी से बहती हुई सुनाई देती है। पर्यटकों के लिए पिकनिक का यह अच्छा स्थान है।

देवधारा जलप्रपात :- तौरेंगा से 17 कि.मी. की दूरी पर यह जलप्रपात है। यहां पहुंचने के लिए 1.5 कि.मी. पैदल चलना पड़ता है। मिश्रित वनों से घिरा हुआ यह स्थान बहुत ही खूबसूरत है। बहुत बड़ी चट्टान के नीचे पूर्ण कटाव से ऐसा लगता है जैसे चट्टान आसमान में हों, नीचे गहरा जल भराव है। 40 फुट की ऊंचाई से गिरती जलधारा एवं पीछे दूर तक नदी में भरा हुआ जल एक अद्‌भुत दृष्य बनाता है।

सिकासेर जलाशय :- अभ्यारण पहुंच मार्ग पर रायपुर- देवभोग राज्य मार्ग पर धवलपुर से 3 कि.मी. पहले बांयी ओर 16 कि.मी. की दूरी पर स्थित सिकासेर जलाशय है जो पैरी नदी पर बना है, जहां ऊपर एवं नीचे दोनों स्थानों पर सुंदर मंदिर है, ऊपर पहाड़ी पर अति सुंदर प्राकृतिक कुण्ड है, जहां प्रति वर्ष मेला लगता है। इसी जलाशय पर जल विद्युत संयंत्र निर्माणाधीन है, जलाशय के नीचे लगभग 700 मीटर तक प्राकृतिक ढलानी चट्टानों से लगातार बहता हुआ पानी बहुत ही सुंदर लगता है। कई स्थनों पर चट्टानों के बीच ठहरा हुआ पानी प्राकृतिक स्वीमिंग पूल बनाता है।

सीता नदी अभ्यारण :- सीतानदी अभ्यारण की स्थापना 1974 में हुई थी एवं इसका क्षेत्रफल 553.36 वर्ग कि.मी. है। यहां की विशेषताओं में 1600 मिलीमीटर वार्षिक वर्षा, तापमान न्यूनतम 8.50 सेल्स एवं अधिकतम 44.50 सेल्स शामिल है। सीता नदी के आधार पर अभ्यारण को सीतानदी नाम दिया गया, जो अभ्यारण में उत्तर से दक्षिण की ओर प्रवाहित होती है। सीता नदी की भूमि उबड़-खाबड़ एवं छोटी-छोटी पहाड़ियों और साल वनों से आच्छादित है। सीता नदी के अलावा, अभ्यारण में सोंढूर एवं लिलांज नदी बहती है । इस पर सोंढूर बांध का निर्माण किया गया है, जिसमें विशाल जलराशि संचित है। अभ्यारण में स्थित वन का बड़ा हिस्सा सोंढूर नदी के पानी की सतह से नीचे है, जिससे सीतानदी वनों को नुकसान पहुंचा है। मगर साथ ही यहां बहुत बड़े जलाशय का निर्माण हो गया है।

चीतल, सांभर, नीलगाय, जंगली सुअर एवं सियार यहां आमतौर पर आसानी से देखे जा सकते हैं। तेंदुआ, भालू, जंगली कुत्ते, जंगली बिल्ली, स्याही, लोमडी, धारीदार लकड़बग्घा, गौर, चौसिंगा एवं हिरण भी मिलते है, यहां शेर भी है, लेकिन उनकी संख्या कम होने व शर्मीले स्वभाव के कारण कभी कभी ही दिखाई देते हैं। पूरे अभ्यारण में घने वन का विस्तार होने से जंगली जानवरों को देखना मुश्किल हो जाता है ।

सीतानदी अभ्यारण में 175 से भी अधिक प्रजाति के पक्षियों के होने का दावा किया जाता है। इनमें प्रवासी पक्षी भी शामिल हैं। इनमें से कुछ हैं - जंगली मुर्गे, फेजेन्ट, बुलबुल, ड्रोंगो, कठफोड़वा आदि। उड़ने वाली गिलहरी एक लुप्तप्रायः प्रजाति है जो की यहां मिलती है। खल्लारी स्थित वन विश्राम गृह, वाच टॉवर, सोंढूर डैम आदि दर्शनीय स्थल है।

डॉ. आभा तिवारी

पलक झपकते - एक अविस्मरणीय यात्रा प्रसंग(सत्य, घटना, स्थान का नाम बदल दिया गया है)

जैस ही ट्रेन भिलाई नगर स्टेशन पर रूकी, मैं अपने दोनों कंधों पर एयर बैग लिए ट्रेन से उतर पड़ा । भिलाई की यह मेरी पहली यात्रा थी । जानकार लोगों ने मुझे पहले ही बता दिया था कि भिलाई निवास में जाने के लिए भिलाई नगर स्टेशन में ही उतरना सही रहेगा और शालीमार-कुर्ला ही एकमात्र एक्स्प्रेस ट्रेन थी जो इस स्टेशन पर भी रूकती थी । उन्होने यह भी समझा दिया था कि भिलाई नाम से बीच में पड़ने वाला स्टेशन वास्तव में वो भिलाई नहीं है जहाँ मुझे जाना था । भिलाई के बाद भिलाई पावर हाउस और उसके बाद आने वाले भिलाई नगर में मुझे उतरना था ।

ट्रेन से उतरकर मैं सीढ़ी की तरफ इंजन की ही ओर प्लेटफार्म पर आगे बढ़ने लगा । इसी बीच मैंने देखा कि एक प्रौढ़ व्यक्ति, जो कि शायद अपनी बेटी के साथ था, टी.टी.ई. से उस डब्बे में अपनी बेटी को चढ़ने देने की अनुमति माँगने लगा । महिला के बुर्के में होने से मैंने अनुमान लगाया कि वे लोग मुस्लिम थे । लेकिन वह आरक्षण वाला डब्बा था, इसीलिए टी.टी.ई. अनुमति देने में आनाकानी कर रहा था । चूँकि ट्रेन यहाँ सिर्फ दो मिनट ही रूकती थी, वह व्यक्ति भी टी.टी.ई. से चिरौरी कर रहा था क्योंकि इतने कम समय में जनरल डब्बे तक पहुँचना संभव नही था । इसी बीच एक प्रौढ़ और शरीर से भारी-भरकम महिला भी सीढ़ियों से उतरकर उसी डब्बे की ओर बढ़ते दिखी । चूँकि यह महिला भी बुर्के में थी, मैंने अनुमान लगाया कि वह इस प्रौढ़ व्यक्ति की पत्नी होगी ।

तब तक ट्रेन ने सीटी दे दी । फिर उस परिवार ने ना तो टी.टी.ई. की अनुमति का इंतजार किया और ना ही टी.टी.ई. ने कोई प्रतिरोध किया । कम-उम्र महिला ने अपनी माँ को पहले चढ़ने के लिए जगह दी और खुद दरवाजे पर रेलिंग पकड़कर खड़ी हो गई । प्रौढ़ महिला ने रेलिंग पकड़कर पायदान पर चढ़ने के लिए पैर उठाए ही थे कि ट्रेन चल पड़ी । बेटी ने माँ को जल्द से ट्रेन में चढ़ने को कहा । लेकिन तंभी पायदान पर पैर रखने के प्रयास में मॉ का पैर फिसला और उसका पूरा ही शरीर ट्रेन और प्लेटफार्म के बीच झूल गया । वह चलते ट्रेन का रेलिंग पकड़े उसी तरह ट्रेन के साथ घिसटने लगी । माँ की यह हालत देख बेटी भी रेलिंग पकड़े-पकड़े ट्रेन के साथ जोर-जोर से चिल्लाते हुये दौड़ने लगी ।

तब तक मैं सीढ़ी के पास लगभग पहुँच ही गया था । औरत की चिल्लाने की आवाज सुनकर मैने पीछे मुड़कर देखा । पलक झपकते ही सारी बात मेरी समझ में आ गई । ट्रेन का वह हिस्सा मेरे सामने बस पहुँचने ही वाला था । मैं तुरंत उस डब्बे की ओर दौड़ पड़ाय मुझे अपने कंधे से दोनों एयर बैग उतारने का भी ध्यान नहीं रहा । जैसे ही वह महिला मेरे सामने पहुँची, मैंने पीछे से अपने दोनों हाथों से उसे कमर की ओर से पूरी तरह घेरते हुये पूरी ताकत से उसे अपनी ओर खींच लिया । एक ही झटके में वह प्रौढ़ महिला उस फँसी हुई स्थिति से बाहर निकल आई । इसे देखते ही उसकी बेटी ने, जो अब तक ट्रेन की रेलिंग पकड़े उसके साथ दौड़ने का प्रयास कर रही थी, उसने भी ट्रेन की पकड़ छोड़ दी । लेकिन उस गति में वह अपना संतुलन बनाए नहीं रख सकी और प्लेटफार्म पर गिर पड़ी । इसी बीच इस स्थिति को देखते हुये टी.टी.ई. ने ट्रेन की चेन खींच दी थी और ट्रेन भी धीरे-धीरे रूक गई । वह प्रौढ़ व्यक्ति भी धीरे-धीरे दौड़कर हाँफते हुये वहाँ तक पहुँच चुका था और अपनी बेटी को उठा रहा था । फिर वे दोनों महिलाएँ उसी डब्बे में चढ़ गई । टी.टी.ई. ने अपने वाकी-टाकी से गार्ड को स्थिति की जानकारी दी । ट्रेन ने फिर से सीटी दी और धीरे-धीरे अपने गंतव्य कि ओर बढ़ गई । मैं भी स्टेशन से निकलने के लिए सीढ़ी पर चढ़ने लगा ।

राजुल कुमार दत्ता

वरीय निवासी लेखा परिक्षाधिकारी, भिलाई

बारसूर का विशाल गणेश मंदिर

यह मंदिर छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में बारसूर में स्थित है जो कि गीदम से 16 कि.मी. दूर इंद्रावति नदी के किनारे पर है । गीदम जगदलपुर से 80 कि.मी. की दूरी पर स्थित है । यह मंदिर छत्तीसगढ़ के बारसूर में स्थित है । यहां बालू पत्थरों से निर्मित गणेश की दो प्रतिमाएं हैं, बड़ी मूर्ति लगभग साढ़े सात फीट की है और छोटी की उंचाई साढ़े पांच फीट है। एक ही मंदिर में गणेश की दो मूर्तियों का होना विलक्षण है। माना जाता है कि दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी गणेश प्रतिमा है। कहा जाता है कि इस मंदिर को यहां के राजा ने अपनी बेटी के लिए बनवाया था ।

पर्यटकों के स्वर्ग छत्तीसगढ़ में पर्यटन का शुभारंभ बारसूर के गणेश मंदिर के दर्शन से किया जाना पर्यटकों के लिये सौभाग्य माना जाता है गणपति का शाब्दिक अर्थ है - "गणों के अधिपति"। गणपत्य सम्प्रदाय जिसके प्रमुख देव है - गणपति देवता। सिद्धिदाता गणेश प्रथम पूज्य देव है, जिनकी पूजा के बिना कोई भी संस्कार अथवा अनुष्ठान अधूरा माना जाता है । विनायक पूजा अर्थात् नये कार्य के शुभारंभ में "श्री गणेशाय नमः" की स्तुति की धार्मिक परम्परा अति प्राचीन ह।छत्तीसगढ़ नव गठित राज्य में पर्यटकों का मुख्य आकर्षण बारसूर स्थित गणेश की प्रतिमा है, जिसके भव्य रूप में होने से इस प्रतिमा की उपलब्धि देश केविभिन्न कलाकेन्द्रों, मंदिरों एवं स्थापत्य कला में शिल्पांकित गणेश की स्वतंत्र प्रतिमाओं में यह एक दुर्लभ प्रतिमा मानी जाती है ।

दक्षिण कोशल छत्तीसगढ़ में 10 वीं शती ईस्वी के उत्तरार्ध में नागवंशी राजाओं का राज्यकाल हुआ करता था। उन दिनों नागवंशी राजाओं की राजधानी बारसूर एक प्रसिद्ध नगरी थी। नागवंश के प्रसिद्ध राजाओं में नृपति भूषण का पुत्र धरावर्ष जगदेव भूषण। शक संवत् 930 अर्थात 1060 ईस्वी के आसपास इनका राज्यकाल था। छिन्दक नागवंशी शासक धारावर्ष जगदेव भूषण एक महान कलाप्रेमी था। इसके प्रिय सामन्त चन्द्रादित्येश्वर के नाम से प्रसिद्ध है, छिन्दक नागवंश में दूसरा प्रसिद्ध राजा सोमेश्वर हुआ, जो बड़ा पराक्रमी शासक था। नागवंश के इस महान योद्धा शासक ने अपने पराक्रम से बेगी आदि क्षेत्रों को पराजित कर चक्रकूट के राज्य में उन्हें शामिल किया। उसके बाद नागवंश के प्रमुख शासकों में राजभूषण, सोमेश्वर द्वितीय, जगदेवभूषण, नरसिंहदेव, जयसिंहदेव आदि राजा छिन्दक नागवंश में हुये। नागवंश का अंतिम शासक हरिशचन्द्र था। इनका शासन 1333 ईस्वी तक था। चक्रकूट के छिन्दक नागवंशी शासकों के कार्यकाल में बारसूर एक प्रसिद्ध समृद्धशाली नगरी थी। यहाँ के शासकों ने चार भव्य मंदिरों के निर्माण समय-समय पर करवाये थे, जिनमें मामा-भांजा मंदिर, बत्तिसा मंदिर, चन्द्रादित्येश्वर मंदिर एवं इन्ही परवर्तीकाल में गणेश का भव्य मंदिर का निर्माण हुआ था। गणेश के मूर्तिशिल्प को मूर्तिकला की दृष्टि से 12वीं शती ईस्वी का माना जा सकता है।

नागवंशी राजाओं के ईष्ट देव के रूप में स्थापित गणेश मंदिर कभी भव्य मंदिर के रूप में स्थापित था। कालान्तर में यह ध्वस्त होकर भग्नावशेष रूप में बिखर कर रह गया है, किन्तु मंदिर की मुख्य गणेश प्रतिमा आज भी सुरक्षित है ।मंदिर के भग्नावशेषों में दो मंदिर होने के अवशेष मंदिर के विन्यास से प्रतीत होते है ।आज भी मंदिर परिसर में दो गणेश प्रतिमायें स्थापित हैं जिसमें एक बड़ी प्रतिमा है दूसरी छोटी है ।गणेश की प्रतिमाएं दक्षिण मुखी है । बारसूर स्थित मंदिर परिसर में उत्तर दिशा में एक नव-निर्मित शेड के नीचे दक्षिणमुखी गणेश की दो प्रतिमाएं संरक्षित है, जिसमें एक बड़ी एवं एक छोटी है ।कला की दृष्टि से देश के अन्य कलाकेन्द्रों में पायी जाने वाली स्वतंत्र प्रतिमाओं में यह प्रतिमा दुर्लभ एवं कलात्मक हैं।

गणेशजी की यह प्रतिमा बांयी तरफ स्थित है ।इस पाषाण प्रतिमा की ऊंचाई 230 से.मी., चौड़ाई 190 से।मी।, तथा मोटाई 130 से.मी. है । गणेश की चतुर्भुजी प्रतिमा में गणेश जी पर्याकासन मुद्रा में विराजमान हैं। साधारण शब्दों में इस प्रतिमा की ऊंचाई लगभग 8 फीट मानी जाती है ।चतुर्भुजी गणेश जी मूर्ति विधान के अनुसार निर्मित हैं इसकी सूंड बांई ओर घुमी हुई है ।गणेश जी की ऊपरी दाहिने हाथ में अंकुश, नीचले बांये हाथ में मोदक धारण किये हुये प्रदर्शित है ।गणेशजी के सिर में करण्ड मुकुट यज्ञोपवित लम्बोदर शरीर में धारण किये हुए है तथा कंकण एवं पादवलय से सुशोथित है इनका बांया हाथ थोड़ा खंडित है ।प्रतिमा के नीचे इनका वाहन मूषक शिल्पांकित है।

गणेशजी की एक अन्य प्रतिमा पार्श्व में संरक्षित है ।इस प्रतिमा की ऊंचाई 160 से.मी., चौड़ाई 100 से.मी. तथा मोटाई 75 से.मी. है ।यह प्रतिमा भी चतुर्भुजी है ।गणेश के दाहिने ऊपर के हाथ में सर्प तथा नीचे हाथ में अंकुश पकड़े हुये है, लेकिन हाथ का मध्य भाग खंडित है ।प्रतिमा के बांयी नीचे के हाथ में मोदक धारण किये हुए है ।गले में नाग उपवीत धारण किये है ।नाग के मुँह एवं पूंछ का हिस्सा पेट के ऊपर स्पष्ट दिखाइ देता है ।प्रतिमा के सिर में करण्ड मुकुट, हाँथों में कंकण तथा पादवलय आभूषण शिल्पांकित है ।प्रतिमा के पाद पीठ के पास वाहन मूषक का शिल्पांकन मनोहारी है।

कला की दृष्टि से उपरोक्त दोनों गणेश की प्रतिमाएं 12 शताब्दी की कही जा सकती है ।छिन्दक नागवंशी के कार्यकाल में इस मंदिर के निर्माण की जानकारी मिलती है ।इसके अतिरिक्त इस परिसर में गणेश के दो छोटे-छोटे मंदिर हैं जिसमें दोनों मुख्य गणेश प्रतिमाओं के पीछे उत्तर दिशा में एक नवनिर्मित चार प्रस्तर स्तम्भों के ऊपर आधारित मंडल युक्त मंदिर स्थापित है ।इस प्रकार गणेश की उपरोक्त प्रतिमाये जहाँ भव्यता एवं कला की दृष्टि से अत्यंत मत्वपूर्ण है, वहीं ये प्रतिमा पूरे राज्य में ही नहीं वरन् भारत में पायी जाने वाली गणेश की स्वतंत्र प्रतिमाओं में सबसे बड़ी प्रतिमा बारसूर की गणेश प्रतिमा को माना जाता है ।

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि छ.ग. की 11वीं व 12वीं शताब्दी की अनुपम कलाकृति की झाँकी बारसूर के मंदिर समूह में एक साथ देखने को मिलती है ।

डॉ. हेमू यदु, रायपुर

We are everywhere, say, SAIL-Rourkela, Bhilai, Bokaro, Durgapur, Burnpur, Bhadravati, Salem, RINL-Vizag, NINL-Duburi, BHEL-Haridwar, RWF-Bengaluru & Air India - Mumbai

हम सर्व-व्याप्त है : सेल-राउरकेला, भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, बर्नपुर, भद्रावती, सेलम, आर.आई.एन.एल. विभाग, एन.आई.एन.एल-डुबरी, बी.एच.आई.एल.-हरिद्वार, आर.डब्ल्यू.एफ-बंगलुरू एवं एअर इंडिया-मुंबई

फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड

(भारत सरकार का एक उपक्रम), मिनी रत्न-II कंपनी

FERRO SCRAP NIGAM LIMITED

(A Govt. of India Undertaking), A Mini Ratna - II Company

ISO 9001:2008 14001:2004 & O.H.S.A.S. 18001:2007 प्रमाणित कंपनी

व्यर्थ का उपयोग - हमारा आदर्श

तकनीक - हमारा औजार

हम "व्यर्थ को अर्थ" में सम्परिवर्तित कर इस्पात संयंत्रों को विशिष्ट सेंवाएँ देने हेतु कृत संकल्पित है।

FSNL Bhawan,
Equipment Chowk,
Central Avenue,
Post Box No. - 37
BHILAI - 490 001
CHHATISGARH.

Tel. No. : 2222474/2222475 (P & T)
4036/4037 (BSP)
Fax No. : 0788 - 2220423
0788 - 2223884
E-mail : fsnl_co@rediffmail.com
Website : www.fsnl.nic.in
CIN : U27102CT1989GOI005468

हम सर्व-व्याप्त है : सेल-राउरकेला, भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, बर्नपुर, भद्रावती, सेलम, आर.आई.एन.एल. विभाग, एन.आई.एन.एल-डुबरी, बी.एच.आई.एल.-हरिद्वार, आर.डब्ल्यू.एफ-बंगलुरू एवं एअर इंडिया-मुंबई

We are everywhere, say, SAIL-Rourkela, Bhilai, Bokaro, Durgapur, Burnpur, Bhadravati, Salem, RINL-Vizag, NINL-Duburi, BHEL-Haridwar, RWF-Bengaluru & Air India - Mumbai

भारत सरकार का अग्रणी निर्माण संस्थान

हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कन्स्ट्रक्शन लिमिटेड, भिलाई (छ.ग.)

AN ISO 9001:2000 COMPANY

वेब साईट Web site : www.hscl.co.in ई-मेल E-mail : hsclbhilai.unitsectt@hscl.co.in दूरभाष Phone : 07882223878 सिन CIN U27310WB 1964 GOI026118

पंजीकृत प्रधान कार्यालय-पी 34/ए, गरियाहाट रोड (दक्षिण), कोलकाता-700031 (पश्चिम बंगाल) फोन-9103324737546

हमारी विशेषज्ञता -

इस्पात संयंत्रों का निर्माण एवं रखरखाव, औद्योगिक संयंत्रों, भव्य इमारतों, अस्पताल भवनों, विश्वविद्यालय भवनों, राजमार्गों, पुलों, हर तरह की अधोसंरचनाओं एवं प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजनांतर्गत सड़कों का निर्माण इत्यादि.

हिंदी में पत्राचार का हम स्वागत करते हैं.

पृष्ठभूमि - एच.एस.सी.एल., भिलाई द्वारा भिलाई इस्पात संयंत्र की यूनिवर्सल रेल मिल के संपादित सिविल एवं स्ट्रक्चरल कार्यों का दृश्य.

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार
अभिनंदन समारोह की झलकियां

नराकास के सदस्य संस्थानों द्वारा आयोजित राजभाषा कार्यक्रमों की झलकियां

नराकास भिलाई दुर्ग को लगातार चौथी बार
मध्य क्षेत्रीय प्रथम पुरस्कार – 2016

पुरस्कार ग्रहण करते हुए कार्यपालक निदेशक परियोजनाएं श्री आर.एस. चतुर्वेदी

प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए उप महाप्रबंधक जनसंपर्क श्री विजय मैराल

छत्तीसगढ़ के नयनाभिराम पावन धाम

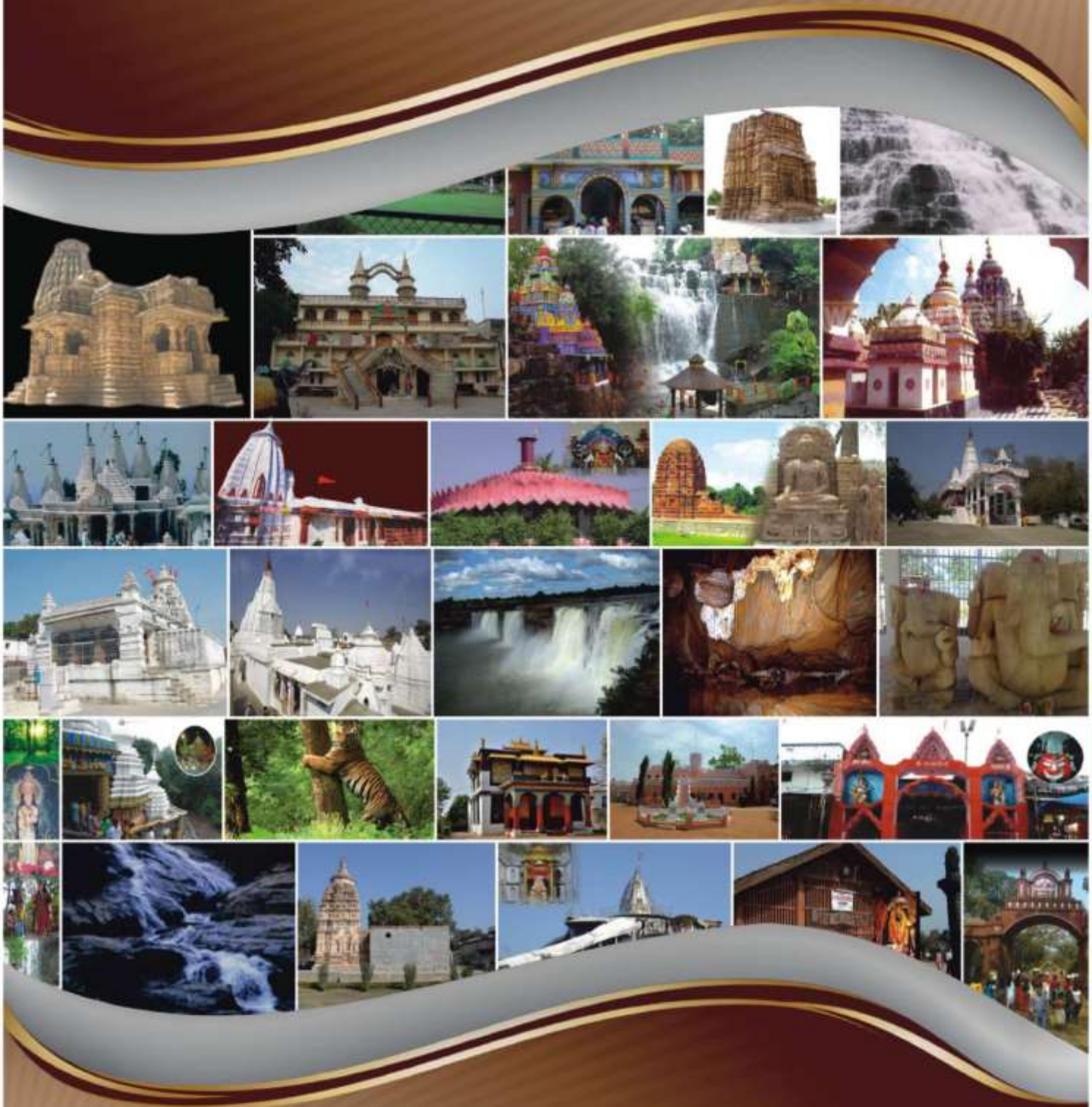

प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा से परिपूर्ण

कला परम्परा का अनूठा संगम